ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

शैक्षिक संवाद की पत्रिका

वर्ष 47 अंक 1 जनवरी 2023

पत्रिका के बारे में

प्राथमिक शिक्षक राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद की एक त्रैमासिक पत्रिका है। इस पत्रिका का मुख्य उद्देश्य है, शिक्षकों और संबद्ध प्रशासकों तक केंद्रीय सरकार की शिक्षा नीतियों से संबंधित जानकारियाँ पहुँचाना, उन्हें कक्षा में प्रयोग में लाई जा सकने वाली सार्थक और संबद्ध सामग्री प्रदान करना और देश भर के विभिन्न केंद्रों में चल रहे पाठ्यक्रमों और कार्यक्रमों आदि के बारे में समय पर अवगत कराते रहना। शिक्षा जगत में होने वाली गतिविधियों पर विचारों के आदान-प्रदान के लिए भी यह पत्रिका एक मंच प्रदान करती है।

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त किए गए विचार लेखकों के अपने होते हैं। अत: यह आवश्यक नहीं है कि प्रत्येक चिंतन में परिषद की नीतियों को ही प्रस्तुत किया गया हो। इसलिए परिषद का कोई उत्तरदायित्व नहीं है।

© 2023. पत्रिका में प्रकाशित लेखों का रा.शै.अ.प्र.प. द्वारा सर्वाधिकार सुरक्षित है। परिषद की पूर्व अनुमति के बिना, लेखों का पुनर्मुद्रण किसी भी रूप में मान्य नहीं होगा।

सलाहकार समिति

निदेशक, एन.सी.ई.आर.टी. : दिनेश प्रसाद सकलानी
अध्यक्ष, प्रारंभिक शिक्षा विभाग : सुनीति सनवाल
अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग : अनूप कुमार राजपूत

संपादकीय समिति

अकादमिक संपादक : पद्मा यादव एवं उषा शर्मा
मुख्य संपादक : श्वेता उप्पल

प्रकाशन मंडल

मुख्य उत्पादन अधिकारी : अरुण चितकारा
मुख्य व्यापार प्रबंधक : विपिन दिवान
संपादन सहायक : ऋषिपाल सिंह
सहायक उत्पादन अधिकारी : राजेश पिप्पल

आवरण

अमित श्रीवास्तव

चित्र

आवरण I – अनिका यादव, कक्षा– पाँचवी 'डी',
सोमरविले स्कूल, ग्रेटर नोएडा

रा.शै.अ.प्र.प. के प्रकाशन प्रभाग के कार्यालय

एन.सी.ई.आर.टी. कैंपस
श्री अरविंद मार्ग
नयी दिल्ली 110 016 फ़ोन : 011-26562708

108, 100 फीट रोड
होस्केरे हल्ली एक्सटेंशन
बनाशंकरी III स्टेज
बेंगलुरु 560 085 फ़ोन : 080-26725740

नवजीवन ट्रस्ट भवन
डाकघर नवजीवन
अहमदाबाद 380 014 फ़ोन : 079-27541446

सी. डब्ल्यू. सी. कैंपस
धनकल बस स्टॉप के सामने
पनिहटी
कोलकाता 700 114 फ़ोन : 033-25530454

सी. डब्ल्यू. सी. कॉम्प्लैक्स
मालीगाँव
गुवाहाटी 781 021 फ़ोन : 0361-2674869

मूल्य एक प्रति ₹ 65.00 **वार्षिक ₹ 260.00**

अध्यक्ष, प्रकाशन प्रभाग द्वारा राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016 के लिए प्रकाशित तथा चन्द्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क्स (प्रा.) लि., सी-40, सैक्टर-8, नोएडा–201 301 (उ.प्र.) द्वारा मुद्रित।

नवंबर, 2023 में मुद्रित

© NCERT not to be republished

ISSN 0970-9312

प्राथमिक शिक्षक

वर्ष 47 **अंक 1** **जनवरी 2023**

इस अंक में

संवाद			3
लेख			
1.	प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास उत्पन्न करने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र	पुष्पेन्द्र यादव रूचि राणा	5
2.	खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक क्रियाओं का संचालन	पद्मा यादव	15
3.	वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण दशा एवं दिशा	प्रभाकर कुमार	25
4.	प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक समुदाय की शालात्यागी बलिकाओं के विद्यालय छोड़ने-संबंधी कारकों का अध्ययन	अय्याज़ अहमद खान	31
5.	कोरोना महामारी के बाद इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों का अधिगम ह्रास एवं समाधान	भानु प्रताप सिंह रोहित गोस्वामी	41
6.	हिंदी भाषा और भविष्य की राह	अन्नू इंदौरा	52
7.	छात्राध्यापकों में वृत्तिक कौशल विकास हेतु एक नवीन प्रयास एकीकृत शिक्षण अभ्यास	दीपक कुमार शिल्पी कुमारी	58
8.	कोविड-19 आपदा चुनौतियाँ, सार्थक प्रयास व पहलें	शरद सिन्हा	67

© NCERT
not to be republished

विद्ययाऽमृतमश्नुते

एन सी ई आर टी
NCERT

विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

परस्पर आवेष्टित हंस राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एन.सी.ई.आर.टी.) के कार्य के तीनों पक्षों के एकीकरण के प्रतीक हैं–
(i) अनुसंधान और विकास,
(ii) प्रशिक्षण, तथा (iii) विस्तार।
यह डिज़ाइन कर्नाटक राज्य के रायचूर ज़िले में मस्के के निकट हुई खुदाइयों से प्राप्त ईसा पूर्व तीसरी शताब्दी के अशोकयुगीन भग्नावशेष के आधार पर बनाया गया है।
उपर्युक्त आदर्श वाक्य *ईशावास्य उपनिषद्* से लिया गया है जिसका अर्थ है–
विद्या से अमरत्व प्राप्त होता है।

विशेष

9. पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश (भाग 1) 78

बालमन कुछ कहता है

10. क्रिकेट रूद्रांश 96

कविता

11. उड़ी पतंग शिराली रूनवाल 97

© NCERT not to be republished

संवाद

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न बदलावों को लेकर आई है। इसके तहत शिक्षा के क्षेत्र में अनेकों सुधार किए जा रहे हैं। यह नीति शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षक तथा शिक्षार्थियों के साथ अभिभावकों को भी नई राह दिखाने का कार्य कर रही है। हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझाव पर बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा तैयार की गई। वर्तमान में राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा के सुझावों को सफल बनाने के लिए बुनियादी स्तर की शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार हो रहे हैं। इस दिशा में यदि आपके द्वारा भी कोई प्रयास किया जा रहा है तो आप हमें लेख अवश्य भेजें। *प्राथमिक शिक्षक* पत्रिका शिक्षकों, शोधार्थियों द्वारा लिखे लेखों के ज़रिए पाठकों को शिक्षा के क्षेत्र में आ रहे बदलावों से अवगत कराती है।

प्रस्तुत अंक में कुल आठ लेख, एक कविता, बालमन तथा विशेष शामिल किए गए हैं। प्राथमिक शिक्षक के इस अंक में प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास उत्पन्न करने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र, बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक स्तर पर किया जा रहा शैक्षिक क्रियाओं का संचालन, कोविड-19 के समय आने वाली चुनौतियाँ तथा उनसे उबरने के लिए किए जाने वाले विभिन्न प्रयास, कोरोना महामारी से प्रभावित शिक्षा के क्षेत्र को प्रबल बनाने के लिए शिक्षकों तथा संस्थाओं द्वारा अपनाए जाने वाले विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग, अंग्रेज़ी के बहुल उपयोग के बीच हिंदी का प्रबल उपयोग, हिंदी शिक्षण में सुधार की आवश्यकता, प्राथमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कियों के परिप्रेक्ष्य में ड्रॉपआउट-संबंधी समस्याओं का अध्ययन, बी.एड. छात्राध्यापकों के कौशल विकास में एकीकृत शिक्षण अभ्यास की आवश्यकता और उसकी वर्तमान समय में प्रासंगिकता आदि विषयों पर बात की गई है।

कोविड-19 महामारी का वह दौर शिक्षा के लिए सबसे ज़्यादा चुनौतिपूर्ण था जो आई.सी.टी. क्षेत्र में अनेकों शैक्षिक इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से शिक्षक और शिक्षार्थियों का परिचय करा गया। इनकी सहायता से शिक्षा के किसी भी क्षेत्र से संबंधित विद्यार्थी भविष्य की चुनौतियों का सामना आसानी से कर सकेगा। ये इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स प्राथमिक, उच्च प्राथमिक या किसी भी स्तर के विद्यार्थियों के शैक्षिक विकास में सहायक होंगे। दूसरी ओर बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक क्रियाओं का

© NCERT not to be republished

संचालन किया जा सकता है। इसके लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र के ज़रिए प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास उत्पन्न किया जा सकता है जिससे बच्चों का मानसिक विकास हो सकेगा।

भाषा के स्तर पर भी प्राथमिक शिक्षा में सुधार किए जाने की आवश्यकता है, क्योंकि अंग्रेज़ी के बहुल उपयोग से हिंदी अत्यधिक प्रभावित हो रही है। ऐसे में हिंदी शिक्षण में सुधार की आवश्यकता है। इस समस्या को रेखांकित करने वाला लेख भी प्रस्तुत अंक में शामिल किया गया है। शिक्षा का स्तर बेहतर बनाने के लिए शिक्षकों को भी प्रशिक्षित किए जाने की आवश्यकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए एक लेख में वास्तविक तथा आभासी कक्षा के उदाहरण के साथ कक्षा में आने वाली समस्याओं को चिह्नित किया गया है तथा बी.एड. छात्राध्यापकों के कौशल विकास में एकीकृत शिक्षण अभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया गया है।

ड्रॉपआउट वर्तमान समय की सबसे बड़ी समस्या बनती जा रही है जिससे बच्चों का मानसिक तथा सामाजिक विकास प्रभावित हो रहा है, इसलिए इस अंक में ऐसा लेख शामिल किया गया है जो प्राथमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कियों के परिप्रेक्ष्य में ड्रॉपआउट-संबंधी समस्याओं से पाठकों को अवगत कराता है। इसके द्वारा ड्रॉपआउट-संबंधी समस्याओं से निजात के उपाय भी ढूँढे जा सकते हैं।

पत्रिका में 'विशेष' के अंतर्गत 'पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश' को शामिल किया गया है, ताकि आप इसे पढ़कर इससे लाभान्वित हों।

आशा है कि आपको यह अंक पसंद आएगा। यदि पत्रिका के संबंध में आपके कोई सुझाव हों तो हमें अवश्य भेजें। हम अपने आगामी अंक में उन्हें शामिल करने का प्रयास करेंगे।

शुभकामनाओं सहित।

अकादमिक संपादक

© NCERT not to be republished

प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास उत्पन्न करने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र

पुष्पेन्द्र यादव*
रूचि राणा**

हम जानते हैं कि बच्चों के जीवन के शुरुआती वर्ष संज्ञानात्मक विकास के लिए बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। यह वह समय होता है जब बच्चों का विश्वास विभिन्न वस्तुओं और स्कूली विषयों के प्रति बन रहा होता है। सूचना का एक बड़ा प्रवाह सभी दिशाओं से उनकी ओर आ रहा होता है। इस उम्र में, उनमें जानकारी को वैज्ञानिक रूप से सत्यापित करने की प्रवृत्ति नहीं होती है। यदि इस उम्र में उनके विश्वास तंत्र (Beliefs System) में अमान्य अवधारणाएँ और गलत सूचनाएँ आ जाती हैं तो उनका बच्चों पर दुष्प्रभाव पड़ता है।

गणित की जानकारी बच्चों के लिए उपयोगी है। अगर ध्यान न दिया जाए तो गणित विषय से संबंधित कई तरह के गैर-लाभकारी विश्वास (Non availing beliefs) बन जाते हैं, जैसे— गणित बहुत नीरस विषय है, गणित बहुत कठिन विषय है, गणित को समझना सरल नहीं है इत्यादि। जिस कारण छोटी उम्र में ही बच्चों के मस्तिष्क में गणित विषय के प्रति डर या फोबिया बन जाता है जो उनके विश्वास तंत्र में शामिल हो जाता है और उनकी गणितीय उपलब्धि को प्रभावित करता है।

खिलौने बहुत आनंददायक और मनोरंजक होते हैं। यदि हम प्राथमिक स्तर पर खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र का उपयोग करते हैं तो हम निश्चित रूप से सकारात्मक तरीके से बच्चों के गणित विषय के प्रति बन चुकी गैर-उपयोगी मान्यताओं को सुधारकर उनके गणितीय विश्वास को सकारात्मक रूप से संशोधित कर सकते हैं। इसके फलस्वरूप बच्चे उच्च गणितीय उपलब्धि प्राप्त करने की ओर अग्रसर हो सकेंगे। इस लेख में प्राथमिक स्तर पर खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र की अवधारणा को सरल शब्दों में समझाने एवं कैसे खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र प्राथमिक स्तर पर बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने में सहायक है, जैसे महत्वपूर्ण बिंदुओं पर चर्चा की गई है।

* *पीएच.डी. शोधार्थी,* शिक्षा विभाग (केंद्रीय शिक्षा संस्थान), दिल्ली विश्वविद्यालय, 33, छात्र मार्ग, दिल्ली 110 007
** *पीएच.डी. शोधार्थी,* शिक्षा संकाय (कमच्छा), काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी 221 010

© NCERT not to be republished

आपका विश्वास आपके विचार बन जाते हैं,
आपके विचार आपके शब्द बन जाते हैं,
आपके शब्द आपके कर्म बन जाते हैं, आपके कर्म आपकी आदत बन जाते हैं,
आपकी आदतें आपके मूल्य बन जाते हैं, आपके मूल्य आपकी नियति बन जाते हैं।

–महात्मा गाँधी

किसी व्यक्ति का विश्वास (Beliefs) उसके द्वारा किए गए कार्य में स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। मनुष्य अपने जाने में या अनजाने में जो भी कार्य करता है उसमें उसका विश्वास परिलक्षित होता है। विश्वास एक मनोवैज्ञानिक चर (Variable) है जो मनुष्य के कृत्य को एवं उसकी गतिविधियों को प्रभावित करता है। भारत के संदर्भ में गणितीय विश्वास (Mathematical beliefs) की परिकल्पना काफ़ी नई है। जब हम प्राथमिक स्तर पर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के प्रकाश में शिक्षा व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन की बात कर रहे हैं तो ये आवश्यक हो जाता है कि प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण गणित शिक्षा सर्वसुलभ कराने की दिशा में प्राथमिक शिक्षकों को बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास को बढ़ाने के लिए प्रेरित किया जाए। प्राथमिक स्तर पर बच्चों के मन में गणित विषय के प्रति किसी गैर-लाभकारी विश्वासों को बनने न दिया जाए। इस संदर्भ में खिलौने और खेल के माध्यम से सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकते हैं।

पेजारेस (1992) ने अपने शोध कार्य में समझाया कि किसी व्यक्ति का गणितीय विश्वास उसके गणित के प्रति रूचि को प्रभावित कर सकता है और उसका गणित के प्रति रुचि उस व्यक्ति के गणित की उपलब्धि को प्रभावित कर सकता है। इसलिए प्राथमिक स्तर पर गणितीय विश्वास के संप्रत्यय को समझा जाना चाहिए। हमें प्राथमिक स्तर पर इस प्रकार की तकनीकों, विधियों और शिक्षाशास्त्र के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है जो विद्यार्थी-केंद्रित हो एवं जिनके प्रयोग द्वारा बच्चे गणितीय अवधारणाओं को आनंदपूर्वक ढंग से सीख सकें।

खिलौने बच्चों के विकास के लिए बहुत उपयोगी होते हैं। खिलौनों के माध्यम से समझी गई अवधारणाएँ बच्चों के मस्तिष्क में काफ़ी लंबे समय तक बनी रहती हैं और वे उन्हें भविष्य में बड़े विकास की ओर ले जाती हैं। खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र एक ऐसी शिक्षण-अधिगम विधि है जो बच्चों को पर्याप्त अवसर और समय प्रदान करती है, ताकि वे गणित विषय से संबंधित अवधारणाओं और उनकी वास्तविकता को स्वयं समझ सकें। खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र गणित जैसे विषय के बारे में सकारात्मक विश्वास विकसित करने में भी सहायक हैं, क्योंकि इस पद्धति का उपयोग करके बच्चे गणित सीखते भी हैं और खिलौनों और खेलों के माध्यम से गणित सीखने का आनंद भी लेते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्राथमिक शिक्षा के ढाँचे में बदलाव के साथ-साथ प्राथमिक स्तर

© NCERT not to be republished

पर सीखने के लिए स्वदेशी खिलौने और खेलों के महत्व को समझा है और इसके प्रचार-प्रसार के लिए प्रावधान भी किए हैं। राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (रा.शै.अ.प्र.प.) ने निष्ठा 2.0 के तहत खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र पर काम किया है और इसके तहत खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र के लिए अवधारणात्मक ढाँचा विकसित किया है। यह शिक्षाशास्त्र प्राथमिक स्तर पर सभी विषयों के अध्ययन में उपयोगी है, किंतु प्राथमिक स्तर पर अन्य विषयों की तुलना में बच्चे गणित विषय के लिए निर्धारित सीखने के प्रतिफलों (Learning Outcomes) को प्राप्त करने में सर्वाधिक कठिनाई महसूस करते हैं (असर, 2018)। जैसा कि पहले बताया जा चुका है कि प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने में गणित विषय के प्रति बच्चों का विश्वास एक बड़ी रुकावट के रूप में कार्य करता है, इसलिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र के प्रयोग द्वारा गणित विषय में खिलौने और खेल के द्वारा सकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने की आवश्यकता है, इसलिए यह लेख इस दिशा में नई संभावनाओं को समझने और उन पर काम करने के लिए लिखा गया है।

खिलौने

खिलौना एक ऐसी वस्तु होती है, जिसका इस्तेमाल बच्चे खेलने के लिए करते हैं और उससे खेलकर वे प्रसन्न होते हैं। खिलौनों से बच्चों का मनोरंजन तो होता ही है साथ ही वे खेल-खेल में काफ़ी कुछ सीख जाते हैं, जैसे— समस्या का समाधान करना, मिल-जुल कर खेलना, आँख-हाथ में तालमेल बैठना इत्यादि। हमें स्वदेशी खिलौनों पर ज़ोर देना चाहिए, क्योंकि ये सस्ते, आसानी से उपलब्ध होने वाले तथा अपने आसपास के परिवेश से जुड़े होते हैं।

खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र क्या है?

खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र शिक्षण-अधिगम की एक ऐसी विधि है जिसमें अधिगम खिलौनों और खेल के माध्यम से होता है। इस प्रकार के शिक्षाशास्त्र में खिलौने और खेल पाठ्यचर्या के केंद्र में होते हैं जिसकी सहायता से नवीन अवधारणाओं को सरल और आनंदमय ढँग से सिखाया जा सकता है। यह शिक्षाशास्त्र विद्यालय स्तर पर विभिन्न विषयों के बीच के संबंध को समझने के लिए तार्किक और बच्चे केंद्रित दृष्टिकोण से एक पुल का कार्य करता है। खिलौने और खेलों के माध्यम से आभासी अवधारणाओं को प्रभावी रूप से बच्चों के सामने रखा जा सकता है एवं खिलौनों के माध्यम से सीखने के कारण बच्चे समस्या समाधान, अन्वेषण, कल्पनाशीलता, विश्लेषण, सत्यापन, स्वयं में सुधार और पिछली समझ को सही जगह प्रयोग करना इत्यादि, जैसे कौशलों को स्वयं के भीतर विकसित करने का सुनहरा मौका प्राप्त करते हैं। जिस कारण बच्चे भविष्य में विभिन्न विषयों के प्रति सकारात्मक विश्वास को धारण करके बेहतर विकास की ओर अग्रसर हो पाते हैं। खिलौनों का उपयोग करके

© NCERT not to be republished

शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को आनंदमय, आकर्षक और प्रेरक बनाया जा सकता है।

स्वदेशी खिलौने

स्वदेशी खिलौने ऐसे खिलौने होते हैं जो अपने देश में ही उत्पन्न किए जाते हैं एवं अपने देश की सांस्कृतिक, पर्यावरणीय, भौगोलिक विशेषज्ञता या फिर प्रासंगिकता के अनुसार स्थानीय संदर्भ में बनाए जाते हैं। हम जानते हैं कि भारत एक विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाला देश है। यहाँ अद्वितीय विविधताएँ देखी जाती है, इसलिए यहाँ विभिन्न संस्कृतियों और क्षेत्रों से संबंधित विभिन्न प्रकार के स्वदेशी खिलौने उपलब्ध होने के साथ-साथ स्वदेशी खिलौने बनाने के भी पर्याप्त अवसर हो सकते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के अनुसार यदि हम शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में खिलौनों का उपयोग कर सकते हैं तो परिणाम आश्चर्यजनक हो सकते हैं। कुछ स्वदेशी खिलौनों को चित्र 1 और चित्र 2 में दर्शाया गया है।

चित्र 1— पारंपरिक स्वदेशी खिलौने

चित्र 2— स्वदेशी लकड़ी के खिलौने

काफ़ी लंबे समय से खिलौनों का प्रयोग शिक्षण -अधिगम की प्रक्रिया में एक शिक्षण-अधिगम संसाधन (Teaching learning material) के रूप में होता आया है। एक शिक्षाशास्त्र के रूप में इसे देखने और लागू करने की संकल्पना काफ़ी नई है। खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र की सैद्धांतिक समझ के लिए बहुत कम शोध कार्य उपलब्ध हैं। हमें इस पर और अधिक शोध कार्य करने की आवश्यकता है। यदि हम इसे एक गणित शिक्षक की दृष्टि से देखें तो निश्चय ही यह गणित में अच्छी उपलब्धि प्राप्त करने में बहुत सहायक होगा एवं इस तरह का शिक्षाशास्त्र गणित में अर्थपूर्ण और आनंदपूर्ण सीखने को भी बढ़ावा देता है।

गणित शिक्षण के लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र क्यों आवश्यक है?

खिलौनों का उपयोग आनंदयुक्त शिक्षा के स्त्रोत के रूप में किया जा सकता है। खिलौने बच्चों में आत्मविश्वास बढ़ाने में कारगर हो सकते हैं। इस तरह के खिलौने बच्चों में अपनेपन, प्रशंसा, जुड़ाव और सहयोग जैसे कौशलों की भावना विकसित करते हैं। कुछ महत्वपूर्ण तथ्य जो खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र द्वारा बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वासों को विकसित करने में मदद करते हैं, जो अग्रलिखित हैं—

© NCERT not to be republished

- बच्चों में सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण है कि बच्चों को गणितीय गतिविधियों में भाग लेने के दौरान सीखने का आनंद लेना चाहिए। प्राथमिक वर्षों में बच्चों के खिलौने न केवल खेलने की वस्तु होते हैं, बल्कि वे आनंद के स्त्रोत भी होते हैं। इस क्षेत्र में हुए शोध हमें बताते हैं कि किसी भी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में यदि बच्चे सीखने का आनंद लेते हैं तो यह उन्हें सार्थक सीखने की ओर ले जाता है और साथ ही विषय के बारे में सकारात्मक विश्वास विकसित करता है।
- प्राथमिक स्तर पर गणित सीखने में खिलौनों और खेलों का उपयोग इसलिए भी महत्वपूर्ण है, क्योंकि जब बच्चे नई अवधारणाओं को सीखने के लिए खिलौनों का उपयोग करते हैं तो वे अपने पिछले ज्ञान का उपयोग करने में सक्षम होते हैं जिसे उन्होंने अपने परिवार एवं घर से अनौपचारिक शिक्षा के रूप में इकट्ठा किया होता है, इसलिए खिलौने और खेल बच्चों को गणित विषय में नई जानकारी को समझने के लिए और उस ज्ञान का उपयोग करने का अवसर प्रदान करते हैं। इसके फलस्वरूप बच्चों के मन में गणित विषय के बारे में सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित होने में मदद मिलती है।
- गणित विषय के बारे में सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने के लिए यह महत्वपूर्ण है कि बच्चे आपसी सहयोग और चर्चा के माध्यम से नई अवधारणाएँ सीखें। खिलौने और खेल बच्चों को समूहों में कार्य करने के अवसर प्रदान करते हैं जो उन्हें नई जानकारी के अन्य पहलू या अन्य दृष्टिकोणों को समझने में मदद करते हैं।
- जब हम अलग-अलग खिलौनों को अलग -अलग संयोजन में व्यवस्थित करते हैं तो इससे बच्चों के मन में जिज्ञासा पैदा होती है जो नए ज्ञान को सीखने के लिए बहुत ही आदर्श स्थिति होती है। जब बच्चे इन स्थितियों में नई अवधारणाओं को सीखते हैं तो ये उनकी स्मृति में लंबे समय तक बनी रहती है जिससे बच्चों के मन में गणित विषय के प्रति सकारात्मक विश्वास और पुष्ट होता है।
- करके सीखना और आत्म-अनुभव के माध्यम से सीखना आदि रचनावाद के महत्वपूर्ण विचार हैं। प्राथमिक स्तर पर खिलौने और खेलों का शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में प्रयोग द्वारा रचनावाद के सिद्धातों को सरलता से लागू किया जा सकता है। रचनावाद के ये सिद्धांत बच्चों को नई अवधारणाओं को अपने दृष्टिकोण से समझने में मदद करते हैं। इसके कारण बच्चों पर शिक्षकों या मित्रों के विचार थोपे नहीं जाते जिसके फलस्वरूप उनके मन में गणित विषय के प्रति सकारात्मक विश्वास उत्पन्न होते हैं।
- चित्र 3 में बच्चों को खिलौनों द्वारा सिखाई जा सकने वाली कुछ गणितीय अवधारणाओं को दर्शाया गया है।

© NCERT not to be republished

पासे	कुल 4 पासे 0 से 5, 5 से 10, नियमित बिंदु पासा प्रत्येक एक-एक और एक संक्रिया पासा (जोड़ एवं घटाव)	संख्या और संख्या संक्रियाओं–जोड़ एवं घटा की समझ विकसित करना।
स्थानीय मान कार्ड 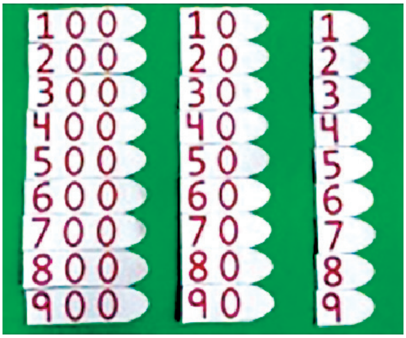	27 कार्ड (इकाई, दहाई और सैकड़ा प्रत्येक के लिए 9) कार्ड का घुमावदार अंत उपयोग करने की दिशा के लिए डिजाइन किया गया है।	स्थानीय मान की समझ विकसित करना।
घड़ी	घड़ी जिसमें घंटा व मिनट की सुईयों को बच्चे घुमाकर समय का निरूपण कर सकते हैं।	समय की समझ व घड़ी को पढ़ने की शुरुआत करना।
डोरी	एक मीटर लंबी डोरी जिसके सिरों को जोड़कर कई प्रकार के खेल खेले जा सकते हैं।	मापन की अवधारणा की शुरुआत करना व बच्चों को मानक इकाईयों की समझ बनाना।

चित्र 3— खिलौनों द्वारा सिखाई जा सकने वाली गणितीय अवधारणाएँ

स्रोत— गणित अधिगम किट के लिए अध्यापक संदर्शिका, राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, दिल्ली

https://ncert.nic.in/dee/pdf/UserMenualHindi17_5_16.pdf

© NCERT not to be republished

खिलौनों के माध्यम से बच्चों को सिखाई जा सकने वाली गणित की अवधारणाएँ

बच्चों को खिलौनों के माध्यम से कई प्रकार की गणितीय अवधारणाओं को सरलता से और रोचक ढंग से सिखाया जा सकता है। शोधकर्ताओं ने उदाहरण के लिए कुछ गणितीय अवधारणओं और उनसे संबंधित खिलौनों को सारणी 1 में दर्शाया है।

बच्चों द्वारा जब किसी अवधारणा को सामूहिक रूप से और आनंदमय ढँग से सीखा जाता है तो यह प्रक्रिया बच्चों को अर्थपूर्ण अधिगम की तरफ ले जाती है जिससे बच्चों को सीखने में काफ़ी लचीलापन प्राप्त होता है और वे अपनी सुविधा के अनुसार पिछली कक्षाओं में सीखी गई अवधारणाओं को सरलता से नवीन अवधारणाओं से जोड़ पाते हैं। पूरी शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया में खिलौनों के केंद्र में रहने के कारण यह पूरी प्रक्रिया बच्चों के लिए बहुत रोचक और जिज्ञासायुक्त हो जाती है जिस कारण बच्चे आंतरिक रूप से प्रेरित

सारणी— खिलौनों के द्वारा बच्चों को सिखाई जा सकने वाली गणित की अवधारणाएँ

क्रम संख्या	खिलौने	गणित की अवधारणाएँ
1.	पतंग	कोण और आकृतियों से संबंधित अवधारणाओं को बच्चों को खेल-खेल में समझाया जा सकता है।
2.	लट्टू	घूर्णन और गति की अवधारणा
3.	ठोस आकृतियाँ (वेल्क्रो माडल)	आकृतियों (घन, घनाभ, शंकु, बेलन, डिस्क, गोला) की समझ विकसित करना एवं त्रि-आयामी आकृतियों को द्वि-आयामी आकृतियों में परिवर्तित करना।
4.	संख्या कार्ड	संख्याओं की समझ, योग एवं घटाव और संख्या पैटर्न की समझ का विकास करना।
5.	खेल मुद्रा	स्थानीय मान व जोड़ एवं घटाव के लिए युक्तियों का विकास करना।
6.	डोरी	मापन की अमानक इकाई का उपयोग करना, जैसे— हाथ की लंबाई, अँगुली की लंबाई आदि, पैमाने का निर्माण करना, स्केल के दो चिह्नों के मध्य की दूरी की समानता पर ध्यान देना।
7.	घड़ी	समय की अवधारणाएँ एवं घड़ी की सुई से कोणों की अवधारणा को समझाया जा सकता है।
8.	ब्लॉक्स	अलग-अलग रंगों के ब्लॉक्स का उपयोग कर संख्या और स्थानीय मान की समझ को विकसित किया जा सकता है।

नोट— सारणी 1 में बताए गए खिलौनों के अतिरिक्त भी अन्य तरह के स्वदेशी खिलौनों का प्रयोग प्राथमिक स्तर पर गणित की अवधारणाओं को समझाने और सिखाने में किया जा सकता है। जिन्हें राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, दिल्ली द्वारा प्रकाशित गणित अधिगम किट के लिए अध्यापक संदर्शिका (कक्षा 1 व 2 के लिए) और टॉय बेस्ड पेडागोजी हैंडबुक– 2022 में विस्तार के साथ बताया गया है।

© NCERT not to be republished

होकर शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में बार-बार शामिल होना चाहते हैं और बच्चों के मन से गणित, जैसे— विषय के प्रति डर या फिर गैर-लाभकारी विश्वास दूर हो जाते हैं। यह संपूर्ण प्रक्रिया बच्चों को गणित, विषय में सकारात्मक विश्वास उत्पन्न करने की तरफ ले जाती है।

आरेख— सकारात्मक गणितीय विश्वास और खिलौनों में संबंध

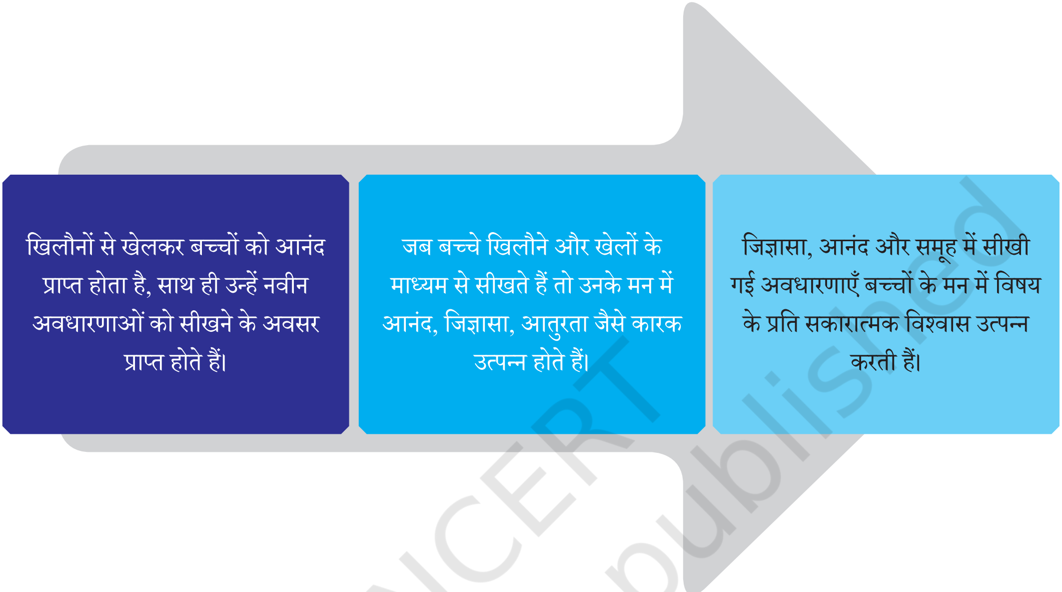

प्राथमिक शिक्षकों के लिए सुझाव

प्राथमिक स्तर पर खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र और गणितीय विश्वासों से संबंधित शोधों का अध्ययन करने के बाद जो समझ प्राप्त हुई है, उस आधार पर कुछ सुझाव देने का प्रयास किया गया है जिन्हें नीचे बिंदुवार लिखा गया है—

- प्राथमिक स्तर पर गणित के शिक्षण में स्वदेशी खिलौनों और खेलों का उपयोग प्रभावशाली हो सकता है, क्योंकि प्राथमिक स्तर पर आधारभूत संख्या ज्ञान पर ध्यान देने की आवश्यकता है।
- गणित सीखने में खिलौने और खेल के प्रयोग द्वारा बुनियादी गणितीय संक्रियाओं (जोड़ना, घटाना, गुणा, भाग) को सरल गतिविधियों के माध्यम से सिखाया जा सकता है।
- प्राथमिक स्तर पर बच्चों के मनोवैज्ञानिक और शारीरिक विकास के लिए स्नेहपूर्वक परामर्श की आवश्यकता होती है, खिलौने और खेलों का उपयोग इस कार्य में बेहतर तरीके से किया जा सकता है जो बच्चों को नई अवधारणाएँ सीखने के संदर्भ में अच्छा महसूस करा सकता है।
- शिक्षक विभिन्न स्कूलों में या कक्षाओं में कुछ समय के अंतराल पर छोटे-छोटे कार्यक्रमों का आयोजन कर सकते हैं, ताकि गणित विषय में खिलौनों के उपयोग को अनोखे तरीके से

© NCERT not to be republished

दिखाया जा सके और बच्चे गणित विषय में इसका उपयोग करने के लिए लालायित हो सकें।

- शिक्षक एक खिलौने द्वारा कई विषयों से संबंधित अवधारणाओं को एक ही समय में सभी बच्चों को समझा सकते हैं जिससे बच्चों को विभिन्न विषयों के मध्य के आपसी संबंध को सरलता से समझाया जा सकता है।
- स्वदेशी खिलौने पर्यावरण और मानवीय मूल्यों के अनुकूल होते हैं। शिक्षक कक्षा में स्वदेशी खिलौनों का प्रयोग कर बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक कर सकते हैं। इस प्रक्रिया में सही खेलों का चुनाव कर बच्चों के भीतर नैतिक मूल्यों का विकास भी किया जा सकता है।
- रटकर सीखना, बच्चों के समग्र विकास को सुनिश्चित नहीं कर सकता है। गणित जैसे विषय में पारंपरिक शिक्षण विधियों द्वारा शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को संचालित करना बच्चों के लिए बहुत नीरस और उबाऊ होता है। ऐसे में शिक्षक खिलौने और खेल के माध्यम से विषयवस्तु और शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया को रोचक बना सकते हैं। यह प्रक्रिया बच्चों के गणित विषय में अर्थपूर्ण अधिगम की तरफ ले जाने के ज़्यादा अवसर उत्पन्न कर सकती है।

निष्कर्ष

खिलौनें देखकर बच्चों के मुख पर प्रसन्नता के भाव आ जाते हैं और खिलौनों से खेलकर उनके भीतर आनंदरूपी संचारी भाव प्रफुल्लित होता है। गणित जैसे विषय के प्रति बच्चों के मन में बन चुके गैर-लाभकारी विश्वासों को मिटाने के लिए खिलौनें एक प्रभावी उपकरण के रूप में कार्य कर सकते हैं। आवश्यकता है कि वर्तमान में प्राथमिक शिक्षकों को खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र के प्रभावी उपयोग के लिए प्रशिक्षण दिया जाए एवं खिलौनों के द्वारा कैसे शिक्षाशास्त्रीय उद्देश्यों (Pedagogical objectives) को प्राप्त किया जा सकता है, यह उन्हें बताया जाएँ। खिलौनों को सिर्फ़ एक मनोरंजक वस्तु के रूप में देखने के बजाए एक शिक्षाशास्त्र के रूप में देखने की आवश्यकता है। प्राथमिक स्तर पर प्रयोग में आने वाले अधिकतर खिलौने बहुत सस्ते और सरलता से उपलब्ध होते हैं या फिर उन्हें घर में भी बनाया जा सकता है। इसलिए, प्राथमिक स्तर पर इन खिलौनों को सभी प्राथमिक शिक्षकों और बच्चों तक पहुँचाना आसान और कम खर्चीला है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने प्राथमिक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने के लिए स्वदेशी खिलौनों के निर्माण और शिक्षा में उनका उपयोग करने पर ज़ोर दिया है।

बच्चों के मन में गणित विषय के प्रति सकारात्मक विश्वास (Positive beliefs) विकसित हों, इसके लिए आवश्यक है कि वे गणित सीखनें का आनंद लें और सीखने की प्रक्रिया में बढ़-चढ़ कर भाग लें। खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र बच्चों को कठिन-सी प्रतीत होने वाली गणित की अवधारणाओं को सरल और मनोरंजक ढंग से समझने में सहायता कर सकता है। इसलिए, यह कहा जा सकता है यदि प्राथमिक स्तर पर बच्चों को गणित सिखाने के लिए खिलौना-आधारित शिक्षाशास्त्र का प्रयोग किया जाता है तो यह निश्चित रूप से उन में सकारात्मक गणितीय विश्वास विकसित करने में सहायक होगा।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

गांगुली, के.के. 2019. लाइफ ऑफ एम.के. गाँधी : अ मैसेज टू यूथ ऑफ मॉडर्न इंडिया. *इंडियन जर्नल ऑफ मेडिकल रिसर्च*. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6515741/

पजारेस, एम.एफ. 1992. टीचर्स बिलीफ्स एंड एजुकेशनल रिसर्च : क्लीनिंगअप अ मेस्सी कान्सट्रैक्ट. *रिव्यु ऑफ एजुकेशनल रिसर्च*. 62, पृ.सं. 317–332.

प्रथम. 2018. *असर रिपोर्ट 2018*. 12 दिसंबर, 2022 को https://img.asercentre.org/docs/ASER%202018/Release%20Material/aserreport 2018.pdf से प्राप्त।

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2005. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. 22 दिसंबर, 2022 को https://ncert.nic.in/pdf/nc-framework/nf2005-english.pdf से प्राप्त।

———. 2017. *गणित अधिगम किट. अध्यापक संदर्शिका*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2017. *नेशनल अचिवेमेंट सर्वे 2017*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. 22 दिसंबर, 2022 को https://ncert.nic.in/NAS.php से प्राप्त।

———. 2022. *टॉय बेस्ड पेडागोजी हैंडबुक*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC6515741/

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय,* भारत सरकार, नई दिल्ली. 2 अगस्त, 2022 को https://www.education.gov.in/sites/upload_files/mhrd/files/NEP_Final_English_0.pdf से प्राप्त।

चित्र संदर्भ

http://natkhatduniya.in/lattu-the-indian-traditional-spinning-top-toy/

https://www.indiamart.com/proddetail/kids-wooden-toys-25450158433.html

© NCERT not to be republished

2

खेल-खेल में पूर्व-प्राथमिक शैक्षिक क्रियाओं का संचालन

पद्मा यादव*

इस तथ्य को सभी स्वीकार करते हैं कि मनुष्य के जीवन के शुरुआती वर्ष बड़े ही महत्वपूर्ण होते हैं। इस अवधि में भावी विकास और ज्ञान की नींव रखी जाती है। इन वर्षों में बच्चों पर हर बात का गहरा असर होता है। बच्चों को इस अवधि में सर्वाधिक देख-रेख, सावधानी और मार्गदर्शन की आवश्यकता होती है। अतः प्रारंभिक बाल-देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए समुचित वातावरण प्रदान करने की आवश्यकता होती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने बुनियादी स्तर की शिक्षा पर विशेष बल दिया है। विद्यालयी शिक्षा के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने एक नया ढाँचा दिया है '5+3+3+4' जिसमें पहले पाँच वर्ष में तीन से चार, चार से पाँच और पाँच से छह साल के बच्चों के लिए बुनियादी शिक्षा जिसे बालवाटिका या पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कहा जाता है, को अहम बताया है। साथ ही बालवाटिका को कक्षा एक और दो (6–8 वर्ष) के साथ जोड़कर एक इकाई के रूप में देखा गया है। एक अध्यापक के लिए इस आयु अवधि के बच्चों के मनोविज्ञान और बाल विकास की प्रक्रिया को समझना आवश्यक है। इस लेख में बालवाटिका के बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए बाल विकास के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की गई है। उनके शारीरिक विकास, भाषायी कौशलों के विकास, संज्ञानात्मक विकास, भौतिक पर्यावरण-संबंधी पहलुओं को विकसित करने हेतु कैसी क्रियाएँ करवाई जाएँ, सुझाई गई हैं। साथ ही कठपुतली कैसे बनाएँ व उनका प्रयोग कक्षा में किस प्रकार करें, इन बिंदुओं पर भी चर्चा की गई है। हाल ही में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के सुझावों पर बुनियादी स्तर की शिक्षा के लिए राष्ट्रीय पाठ्यचर्या 2022 का निर्माण किया गया है। लेख में शामिल गतिविधियाँ और सुझाव इस पाठ्यचर्या को कक्षा में क्रियांवित करने हेतु तथा उन्हें ज़मीनी स्तर पर लागू करने की ओर भी अग्रसर करते हैं।

© NCERT not to be republished

*प्रोफ़ेसर, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों की सफलता काफ़ी हद तक शिक्षकों पर भी निर्भर होती है, क्योंकि वे ही इन शिक्षण संस्थाओं के मेरूदंड हैं। प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में शिक्षिकाओं के विविध कार्य और विभिन्न उत्तरदायित्व हैं, जिनमें प्रमुख हैं प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा के दर्शन और आदर्शों के प्रति निष्ठा तथा बच्चों के सर्वांगीण विकास में सहायक होना। इन केंद्रों में शिक्षिकाओं को माँ, भोजन विशेषज्ञ, खेल-कूद का साथी आदि सभी भूमिकाएँ निभानी पड़ती हैं। बच्चों के प्रति प्रेम और उनके विकास में शिक्षिका की रुचि का होना, सर्वोपरि गुण है। शिक्षिका को नए-नए विचारों का स्वागत करने वाली, नया ज्ञान अर्जित करते रहने वाली और सदा 'विकासशील' होना चाहिए। प्रारंभिक बाल देखभाल एवं शिक्षा केंद्रों में शिक्षिका का कार्य इतना विशिष्ट होता है कि शिक्षिकाओं के लिए औपचारिक प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। सुनियोजित और सुसंगठित प्रशिक्षण कार्यक्रम के द्वारा हम शिक्षिकाओं को इस बात के लिए प्रशिक्षित कर सकते हैं कि वे बच्चों के शारीरिक, सामाजिक, भावनात्मक और नैतिक विकास की ओर ध्यान दें।

बच्चों का शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास

शिशु का शारीरिक विकास बहुत-सी बातों पर निर्भर करता है, जैसे— वंशानुगत जैविक तत्व, पोषण की स्थिति, शारीरिक स्थिति एवं स्वास्थ्य, व्यायाम के अवसर, इत्यादि। माँसपेशियों के विकास के लिए प्रारंभिक शैशवकाल आदर्श समय है, क्योंकि इस समय बच्चों की हड्डियों व माँसपेशियों का विकास तीव्रता से होता है और उनके शरीर में बड़ों की अपेक्षा अधिक लचीलापन रहता है। इसलिए, अत्यधिक सक्रिय रहने अथवा एक ही स्थान पर अधिक देर तक निष्क्रिय बैठे रहने से बच्चे थक जाते हैं। अतः शिक्षिकाओं को चाहिए कि वे ऐसी क्रियाओं का चुनाव करें जिनमें विविधता हो, साथ ही बच्चों की आयु, रुचियों एवं आवश्यकताओं पर आधारित हों। स्थूल एवं सूक्ष्म माँसपेशियों के प्रयोग में संतुलन होना चाहिए।

स्थूल माँसपेशियों के संतुलन से तात्पर्य स्थूल माँसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, जैसे— जाँघ, हाथ-पाँव, धड़ और घुटनों आदि की क्रिया।

सूक्ष्म माँसपेशियों के संतुलन का अर्थ सूक्ष्म माँसपेशियों की क्रियाओं पर नियंत्रण होने से है, विशेष रूप से उँगलियों तथा कलाई की माँसपेशियों, आँख और हाथ की माँसपेशियों का संतुलन। इससे बच्चे ऐसी क्रियाएँ के लिए तैयार होते हैं जिनके लिए अधिक, कुशल तथा नपे-तुले कलात्मक और व्यावसायिक कार्य की आवश्यकता होती है, जैसे— लिखना, सृजनात्मक क्रियाएँ तथा अन्य सभी।

बच्चों का शारीरिक एवं गत्यात्मक विकास भली-भाँति हो सके इसलिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखना चाहिए—

- बच्चों को कक्षा में जो भी क्रियाएँ करवाएँ, उनकी पहले से योजना बना लें एवं योजना से संबंधित सामग्री भी तैयार कर लें।

© NCERT not to be republished

- कक्षा में सदैव सामान को व्यवस्थित रखना चाहिए, ताकि बच्चों को घूमने-फिरने में कोई परेशानी न हो।
- उछलने-कूदने तथा बैठकर की जाने वाली क्रियाओं तथा कक्षा के बाहर और अंदर की जाने वाली क्रियाओं में संतुलन बनाए रखना चाहिए।
- इस बात का विशेष ध्यान रखना चाहिए कि जो भी सामग्री कक्षा में प्रयोग में लाई जा रही है वह सही अवस्था में हो, ताकि बच्चों को चोट न लगे।
- सभी बच्चों को एक समान न समझें, क्योंकि सभी बच्चे एक समान नहीं होते। अतः उनकी तुलना नहीं करनी चाहिए।
- बच्चे जब कक्षा में या बाहर स्वतंत्र रूप से खेल-खेल रहे हों तो शिक्षिका को सदैव सतर्क रहना चाहिए।
- यह सुनिश्चित कर लेना चाहिए कि बच्चों को खेल सामग्री तथा अन्य सामग्री के उपयोग का अवसर मिले।
- तेज गति से की जाने वाली क्रियाओं के बाद बच्चों को आराम करने का अवसर देना चाहिए।

समूह को बहुत-सी गतिविधियाँ करवाई जा सकती हैं जो कि निम्नलिखित हैं—

स्थूल माँसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ

- **चलना**— व्यायाम करना, स्वतंत्र रूप से मैदान में चलना, जानवरों की चाल में चलना व आगे-पीछे की ओर चलना।
- **दौड़ना**— एक स्थान से दूसरे स्थान पर दौड़ना, टायर को लुढ़काते हुए दौड़ना व एक टायर से दूसरे टायर में कूदना।
- **कूदना व उछलना**— खरगोश व मेंढक की चाल में कूदना, आगे व पीछे की दिशा में उछलना इत्यादि।
- **शारीरिक संतुलन**— सीधी बिछी रस्सी पर चलना, टेढ़ी बिछी रस्सी पर चलना, चम्मच में नींबू लेकर चलना, सिर पर किताब रखकर चलना एवं गेंद पकड़ कर चलना, आदि।
- **झूलना**— पेड़ पर टायर का झूला डालकर बच्चों को झुलाना, मैदान में लगे झूलों पर बच्चों को झुलाना।
- **चढ़ना व उतरना**— मैदान में बनी सीढ़ियों पर चढ़ना व उतरना, झूलों पर बच्चों को चढ़ने व उतरने देना।
- **गेंद से संबंधित खेल**— गेंद को फेंकना पकड़ना, गेंद को पैर से मारना, गेंद को सिर के ऊपर व पैरों के नीचे से निकालना, लक्ष्य पर गेंद फेंकना इत्यादि।

इसी तरह और भी कई खेल बच्चों द्वारा खेले जा सकते हैं, जैसे— पकड़म-पकड़ाई, म्यूजिकल चेयर, एक-दूसरे की कमर पकड़कर मगरमच्छ बनना और उसके द्वारा स्वयं की पूँछ पकड़ने की कोशिश करने वाला खेल इत्यादि।

सूक्ष्म माँसपेशियों के विकास के लिए क्रियाएँ

- **पिरोना**— मोतियों को तार में पिरोना एवं उससे रंग-बिरंगी माला बनाना, छोटे-बड़े आकार के मोती तार में पिरोना, रंगों के क्रम में मोती पिरोना इत्यादि।
- **बीजों से क्रियाएँ**— दिए गए आकार के किनारे पर बीज रखना, बीजों को कागज़ पर रखकर उससे

© NCERT not to be republished

से गोल, चौकोर एवं त्रिभुज आकार बनाना, चेहरे का आकार बनाना, प्रोजेक्ट से संबंधित विभिन्न आकृतियों, जैसे— झोंपड़ी, झंडा आदि बनाना।

- **छाँटना**— विभिन्न प्रकार की वस्तुओं को छाँटना, जैसे— पत्थर, पत्तियाँ, मोती आदि।
- **रेत पर आकार बनाना**— रेत पर अँगुली से कोई भी आकृति बनाना, बर्तनों में रेत भर कर उड़ेलना, गीली रेत पर पत्तियाँ, सींक तथा झंडा गाड़ना इत्यादि।
- **उड़ेलना**— एक गिलास से दूसरे गिलास में पानी व रेत उड़ेलना।
- **फ्रेम पर कार्य करना**— फ्रेम पर टिच बटन, काज बटन, हुक, चेन, गाँठ बाँधने आदि का प्रयास करना।
- **मिट्टी का काम**— मिट्टी से विभिन्न प्रकार के बर्तन व मिठाइयाँ, जैसे— लड्डू, बर्फी, चकला, तवा आदि बनाना, अखबार को मरोड़कर, बॉल बनाकर उस पर रंग करना।
- **कागज़ फाड़ना और चिपकाना**— कागज़ को लंबा-लंबा व छोटा-छोटा फाड़कर चिपकाना। कागज़ मोड़ना और उससे टोपी, जोकर, नाव, झोंपड़ी का आकार बनाना।
- **रंग घिसना**— पेपर पर रंग घिसना, आकृति में रंग भरना, चित्र बनाना, पेंटिंग करना, हथेली, मुट्ठी, पैर के तलवे, अँगूठे पर रंग लगाकर कागज़ पर छपाई करना, सब्ज़ियाँ, जैसे— आलू, भिंडी, प्याज़, गोभी, कमल ककड़ी आदि से छपाई करना, कपड़े, ऊन, चायपत्ती, रेत, लकड़ी के बुरादे से आकृति बनाना, फूल एवं पत्तियों को कागज़ पर घिसकर उनसे चित्र बनाना इत्यादि।

बच्चों में भाषा-विकास

बच्चे अपने आस-पास के लोगों की नकल करके, प्रोत्साहन पाकर विचारों और भावनाओं को सुनकर व व्यक्त करके भाषा सीखते हैं। कुछ बच्चे जल्दी बोलना आरंभ करते हैं और कुछ देर से, कुछ बच्चे बातूनी होते हैं तो कुछ चुप रहने वाले, ये विभिन्नताएँ बच्चों को मिलने वाले परिवेश के कारण होती हैं।

बच्चों के भाषा विकास में माता-पिता, खिलौनों, तस्वीरों व चित्र वाली पुस्तकों, अच्छे स्तर के वार्तालाप, कहानियाँ, गीत आदि का महत्वपूर्ण योगदान होता है। बच्चों को अपने विचार व्यक्त करने एवं सभी से बातचीत करने के अवसर देने चाहिए। उन्हें विभिन्न प्रकार की क्रियाएँ, जैसे— कठपुतली, दूरदर्शन देखने, रेडियो सुनने के अवसर मिलने चाहिए। उन्हें घूमने-फिरने व भ्रमण करने के अवसर देने चाहिए। जब बच्चा प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र पर आता है तब वह बोलना जानता है और बोलने-संबंधी अपनी कुशलता को अधिक विस्तार देने का प्रयास करता है। इसलिए प्रारंभिक बाल शिक्षा केंद्र पर बच्चों की भाषिक निपुणता को और भी प्रोत्साहित करने की ज़रूरत है। भाषा विकास का तात्पर्य बच्चे को सुनने व बोलने की क्षमता का विकास करना व उसे पढ़ने व लिखने के लिए तैयार करना है। अतः बच्चों की भाषिक कुशलता के लिए बच्चों में सुनने, बोलने, पढ़ने व लिखने का कौशल विकसित करने हेतु शिक्षिका को प्रयास करना चाहिए।

© NCERT not to be republished

शिक्षिकाओं को ध्यान रखना चाहिए कि—

- कक्षा में किसी भी क्रिया को कराते समय बच्चों को अपने अनुभव व्यक्त करने का मौका दें एवं उन्हें प्रोत्साहित करें।
- बच्चों को सदैव नए-नए अनुभव प्राप्त हों इसका प्रयत्न करें। इसके लिए कक्षा में रखी वस्तुओं में फेर-बदल करते रहें, ताकि बच्चों को घूमने-फिरने के अवसर मिलें। इससे बच्चों के शब्द भंडार व अनुभवों में भी वृद्धि होगी।
- किसी भी क्रिया को कराते समय बच्चों से बातें करते रहें।
- बच्चों को छोटे-छोटे निर्देश दें एवं पूरे वाक्य में बोलने के लिए प्रोत्साहित करें।
- जो बच्चे अपने आप को व्यक्त नहीं कर पाते, उन्हें प्रोत्साहित करें। उनकी प्रशंसा करके, प्यार से उन्हें खुलने का अवसर दें।
- जो भी बच्चे कह रहे हैं, उसे धैर्य के साथ सुनें और उनके प्रश्नों के उत्तर देने की कोशिश करें।
- बच्चों को छोटे-छोटे समूहों में काम करने का अवसर दें, ताकि वे एक-दूसरे से बात कर पाएँ व अपने आप को व्यक्त कर पाएँ।
- बच्चों को चित्रों वाली पुस्तकों को देखने, उलटने-पुलटने के अवसर दें।
- हमेशा कक्षा में अच्छी भाषा का प्रयोग करें, क्योंकि बच्चे शिक्षिका की नकल करते हैं।
- यदि कोई बच्चा गलत बोलता है तो उसे बीच में रोक कर सुधारें नहीं, क्योंकि ऐसा करने से बच्चे निराश हो जाते हैं और भविष्य में अपनी बात करने में झिझकते हैं।

सुनने की क्षमता

सुनने की क्षमता बढ़ाने के लिए बातचीत, कहानियाँ, कविताएँ इत्यादि बहुत महत्वपूर्ण हैं। बच्चों में सुनने की क्षमता को विकसित करने हेतु कई तरह के खेल एवं क्रियाएँ करवा सकते हैं, जैसे—

- घुँघरू, ताली, डफली, घंटी, सीटी, चुटकी आदि की आवाज़ की पहचान करना।
- जानवरों की आवाज़ों को सुनाकर उनकी पहचान करना।
- आँख बंद करके वातावरण में होने वाली आवाज़ों को महसूस करना।
- कपड़े के आँड़ में बच्चों को खड़ा करके, उसकी आवाज़ की पहचान करना।
- पानी उडेलने की, सिक्के के गिरने की, साइकिल की घंटी इत्यादि की आवाज़ सुनाकर उसकी पहचान करना।
- किसी दिशा में आवाज़ करके बच्चों से पूछना कि किस दिशा से आवाज़ आ रही है।
- पहेलियाँ पूछना व कहानियाँ सुनाना इत्यादि।

बोलने की क्षमता

घर और विद्यालय में बच्चों को बहुत कुछ सुनने के अवसर प्राप्त होते हैं, पर उन्हें अपनी भावनाओं व विचारों को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने का अवसर नहीं मिलता, इसलिए बोलने की कुशलता का विकास अपेक्षित रूप में नहीं होता जितना कि होना चाहिए। मुक्त बातचीत, कहानी गढ़ना और सुनाना, नाटकीकरण, भाषा या शब्दों के खेल, मुक्त खेल और नाटकीय खेल आदि सभी क्रियाकलाप बच्चों में वाचिक कौशल के विकास में सहायक होते हैं।

© NCERT not to be republished

अतः भाषा-संबंधी कई खेल क्रियाएँ आयोजित की जा सकती हैं, जैसे—

- मुक्त वार्तालाप
- चित्र पठन
- बालगीत
- कहानियाँ बनाना
- किसी वस्तु का चित्र देखकर उसके बारे में बोलना, जैसे— पैन, पेंसिल, टिफिन आदि।
- कठपुतलियों का खेल
- नाटकीकरण आदि।

पढ़ने की तैयारी

प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम में पढ़ने की तैयारी पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। बच्चों को ऐसे अनेकानेक अनुभव दिए जाने चाहिए जिनसे कि वे आगे चलकर भली-भाँति पढ़ पाएँ। इसके लिए निम्नलिखित गतिविधियाँ महत्वपूर्ण हैं—

- किसी शब्द की प्रथम ध्वनि को पहचान कर उसी ध्वनि से आरंभ होने वाले अन्य शब्द बनाना।
- दिए गए शब्द से तुक मिलाकर नए शब्द बनाना, भले ही वे निरर्थक शब्द हों।
- एक जैसी दिखने वाली तस्वीरों/नमूनों को अलग तरह की दिखने वाली तस्वीरों/नमूनों और वस्तुओं से अलग करना।
- दो एक जैसी तस्वीरें जिनमें केवल एक भिन्नता हो, उस भिन्नता को पहचानना।
- शब्दों के समूह में अलग शब्द पहचानना।
- अपना लिखा हुआ नाम पहचानना।
- सुने गए और बोले गए में संबंध स्थापित करना। बायें से दायें दिशा में क्रियाओं का आयोजन करना इत्यादि।

अतः बच्चों की पढ़ने की तैयारी से संबंधित निम्नलिखित क्रियाएँ शिक्षिक द्वारा करवाई जानी चाहिए।

- नाम की प्रथम ध्वनि की पहचान करना, जैसे— ममता 'म'।
- नाम की प्रथम ध्वनि से दो अन्य वस्तुओं के नाम बताना, जैसे— तुकात्मक शब्द बनाना, जैसे— आलू-चालू भालू-कालू, 'म'— मटका, मछली।

सभी बच्चे मिलकर बाल गीत गा सकते हैं, जैसे—

"हमने तीन चीज़ें देखीं, बाबा तीन चीज़ें देखीं
जंगल में देखी लकड़ी, लड़की पर बैठी है मकड़ी
मकड़ी खा रही थी ककड़ी
हमने...
गली में आया भालू, उसका नाम था मोटा कालू
वो तो खा रहा था आलू
हमने देखी सारी दिल्ली, खंभा नोंच रही थी बिल्ली
बच्चे उड़ा रहे थे खिल्ली
हमने...
हमने देखा मोटा बंदर, उसका नाम था मस्त कलंदर
वो तो घुस गया घर के अंदर
हमने..."

- किसी शब्द की प्रथम एवं अंतिम ध्वनि की पहचान करना।

© NCERT not to be republished

- एक ध्वनि से कई शब्द बनाना। उदाहरण के लिए, 'म' ध्वनि से मछली, मकड़ी, मगरमच्छ, मेढक आदि।
- प्रथम ध्वनि के आधार पर जो भिन्न हो उसे बताएँ।

नल	मछली	मटका

- अंतिम ध्वनि से शब्द बनाना, जैसे— 'फल', अंतिम ध्वनि है 'ल', 'ल' से लौकी, लाल आदि।
- इंगित करना कि किस-किस की प्रथम ध्वनि एक जैसी है।

मछली	मटका	नदी	पतंग

- रंगों का मिलान करना।
- बाई से दाईं दिशा की तरफ क्रियाएँ करने हेतु प्रोत्साहन देना।
- पहली ध्वनि के आधार पर या पहले से मेल खाते शब्द को सही जगह पर रखना इत्यादि।

न	प	क
नल	पतंग	कमल
नदी	पत्ता	कप

लिखने की तैयारी

लिखने की तैयारी के लिए सूक्ष्म माँसपेशियों का विकास आवश्यक है। हाथ और आँख में समन्वय होना चाहिए। लिखने की तैयारी हेतु सभी सृजनात्मक क्रियाएँ (कागज़, फाड़ना, काटना और उसे चिपकाना, पिरोना, चित्रकला, रंगना, कागज़ मोड़ना, मिट्टी का काम, छाँटना, नमूना तैयार करना इत्यादि) सहायक सिद्ध होती हैं। बड़े आकार के चौकोर, तिकोन, गोला, अक्षर आदि बना कर दिए जा सकते हैं और बच्चों से उसी के ऊपर बार-बार रंग फेरने को कहना चाहिए। सीधी, आड़ी तिरछी रेखाएँ और आकारों की नकल कर उन्हें बनाने से भी बच्चों की सूक्ष्म माँसपेशियाँ विकसित होती हैं। ये क्रियाएँ सभी बच्चों को बारी-बारी व्यक्तिगत रूप से करवाई जानी चाहिए।

लिखने की तैयारी हेतु विभिन्न क्रियाएँ कारवाई जा सकती हैं, जैसे— बिंदुओं का मिलान करना, घिरे हुए क्षेत्र में रंग भरना, कोई नमूना बनाना इत्यादि। प्रारंभिक अवस्था में खड़िया या रंग भरने वाले क्रेयोन का प्रयोग ज़्यादा उचित रहता है। बाद में समन्वय और नियंत्रण के लिए आवश्यकता के अनुसार पेंसिल दी जा सकती है। शिक्षिका द्वारा भाषा विकास से संबंधित अनेक कविताएँ एवं खेल-खेले जा सकते हैं।

संज्ञानात्मक विकास

संज्ञान का अर्थ है अपने आस-पास के वातावरण को जानना और समझना। अतः संज्ञानात्मक विकास से अभिप्राय उन मूलभूत कौशलों के विकास से है जो हमें अपने पर्यावरण को जानने में सहायता करते हैं। बच्चों के सोचने के ढंग और बड़ों के सोचने के ढंग में अंतर होता है। बच्चे, जैसे-जैसे बढ़ते हैं उनकी सोचने की प्रक्रिया पर पर्यावरण का प्रत्यक्ष तथा अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। तीन से छः आयु के बच्चे संज्ञानात्मक विकास के उस स्तर पर होते हैं जब उनका अनुभव, जो प्रत्यक्ष होता है उससे अधिक प्रभावित होता है। बच्चों का चिंतन आत्म-केंद्रित होता है अर्थात वे हर वस्तु को अपने दृष्टिकोण से देखते हैं। वे अपने को दूसरे की स्थिति में रखकर नहीं सोच पाते। वे अपने पर्यावरण के प्रत्यक्ष तथा ठोस अनुभवों से सीखते हैं। अतः खेल और क्रिया उनके सीखने के लिए आवश्यक है। बच्चों को जितने अधिक अनुभव होंगे उसी के अनुसार

© NCERT not to be republished

उनकी समझने की शक्ति विकसित होगी इसलिए उनके सीखने की गति बढ़ाने के लिए उन्हें विविध अवसर एवं अनुभव देने चाहिए। अनुभव ही प्रत्यय है। यह प्रत्यय अलग-अलग वस्तुओं एवं अनुभवों से बनते हैं, जो कि तीन चरणों में पूर्ण होता है—

1. प्रत्यक्षण (Perception)
2. विभेदीकरण (Differentiation)
3. सामान्यीकरण (Generalisation)

बच्चे कुछ प्रत्ययों का निर्माण वस्तु को प्रत्यक्ष देखकर व उसके विषय में सुनकर बनाते हैं। यदि किसी विषय पर बच्चों को सही दिशा-निर्देश न दिए जाएँ एवं सही अनुभव न प्रदान किए जाएँ तो अवधारणाएँ गलत भी बन जाती हैं। अतःशिक्षिका को बच्चों को पूर्ण व प्रत्यक्ष अनुभव एवं उदाहरण प्रदान करने चाहिए। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर निम्न प्रत्यय अहम हैं।

1.	प्राकृतिक पर्यावरण संबंधित प्रत्यय	जानवर, पक्षी, कीड़े-मकौड़े, सब्ज़ियाँ, फल, पेड़-पौधे
2.	भौतिक पर्यावरण से सबंधित प्रत्यय	पानी, हवा, आसमान, पृथ्वी, मौसम
3.	सामाजिक पर्यावरण से संबंधित	स्वयं एवं परिवार, यातायात, हमारे मददगार, त्यौहार

जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं। अतः पाँचों इंद्रियों (देखने, सुनने, स्पर्श, सूँघने एवं स्वाद) के विकास के अवसर आवश्यक हैं। अपने पर्यावरण को समझने के लिए बच्चों में प्रमुख संबोधों का निर्माण होना आवश्यक है। स्पष्ट संबोधों का विकास होने पर ही वे अपने पर्यावरण में उपलब्ध विभिन्न वस्तुओं का निरिक्षण और विभेदीकरण कर सकेंगे और उन्हें श्रेणीबद्ध कर सकेंगे। ऐसा होने पर वे 'निरीक्षण आधारित निष्कर्षों' से 'तर्क पर आधारित' सही निष्कर्षों पर पहुँच सकेंगे।

किसी भी संबोध के विकास के लिए क्रियाओं का नियोजन निम्नलिखित क्रम में किया जाना चाहिए—

1. मिलान करना
2. पहचानना
3. नाम बताना
4. क्रमीकरण
5. वर्गीकरण

बच्चों के साथ रंग, आकार, गणित से पूर्व के संबोध, जैसे— बड़ा-छोटा, भारी-हल्का, मोटा-पतला, दूर-पास, अधिक-कम, पहले-बाद में, गर्म-ठंडा आदि पर चर्चा आवश्यक है। जानने और समझने के लिए पाँचों इंद्रियों का प्रयोग बहुत महत्वपूर्ण है। बच्चे इन्हीं के माध्यम से सीखते हैं। यदि इन्द्रियों का विकास सही नहीं होगा तो बच्चों में गलत एवं अपूर्ण संबोध विकसित होंगे। पाँच इंद्रियाँ होती हैं—

1. सुनने की इंद्रियाँ
2. देखने की इंद्रियाँ
3. स्पर्श अनुभव करने की इंद्रियाँ
4. स्वाद इंद्रियाँ
5. सूँघने की इंद्रियाँ

प्रत्येक इंद्रिय को विकसित करने के लिए कई कविताएँ, खेल, क्रियाएँ आयोजित कर सकते हैं। संख्या-संबोध-संबंधी विकसित करने की लिए क्रियाएँ कारवाई जा सकती हैं। जैसे—

© NCERT not to be republished

1. एक वस्तु से एक वस्तु के साथ का संबंध स्थापित करना (one-to-one correspondence)
2. Self-correcting puzzles (मिलान करना) वस्तु की संख्या और अंक का मिलान करना
3. कार्ड की सहायता से मिलान करने के खेल खेलना

बच्चों के भाषायिक विकास और संज्ञानात्मक विकास में कठपुतली का प्रयोग

बच्चों के भाषायिक विकास और संज्ञानात्मक विकास में कठपुतली का प्रयोग बहुत सहायककारी होता है। भारतीय संस्कृति का प्रतिबिंब लोक कलाओं में झलकता है। इन्हीं लोककलाओं में कठपुतली कला भी शामिल है। यह देश की सांस्कृतिक धरोहर होने के साथ प्रसार का सशक्त माध्यम भी है। कठपुतलियों का इस्तेमाल संप्रेषण के लिए काफ़ी पहले से हो रहा है। हमारे देश में तो यह कला लगभग दो हज़ार वर्ष पुरानी है। पहले नाटकों को प्रस्तुत करने का एक मात्र माध्यम कठपुतलियाँ ही थीं। आज तो आधुनिक तकनीक वाले कई माध्यम, जैसे— रेडियो, टी.वी., आधुनिक तकनीकी सुविधाओं वाली रंगशालाएँ, मंच सभी कुछ हैं।

भाषा सिखाने में कठपुतलियों का प्रभावशाली ढंग से उपयोग किया जा सकता है। कठपुतलियाँ नाच सकती हैं, बात कर सकती हैं, गा सकती हैं, कूद सकती हैं, पढ़ सकती हैं, लिख सकती हैं और पढ़ा भी सकती हैं। कठपुतलियों के साथ कक्षा जीवंत हो जाती है।

परिणामस्वरूप बच्चे-दूसरों के साथ संवाद कर सकते हैं। उनमें सुनने का कौशल विकासित होता है। बच्चे सामाजिक उपकरण की तरह भाषा का इस्तेमाल कर पाते हैं। उनकी अभिव्यक्ति प्रवाहमय और स्वाभाविक होती है और साफ-साफ अपनी बात कह पाते हैं। यदि कठपुतलियों के साथ कोई लेबल और संकेत चिह्न इस्तेमाल किए जाएँ, तो बच्चे लिखित भाषा भी सीख सकते हैं। जिस ढंग से बच्चे कठपुतलियों के प्रति प्रतिक्रिया करते हैं, वह दिलचस्प होती है वे हकीकत में कठपुतलियों के साथ ऐसे व्यवहार करने लगते हैं, जैसे कि कठपुतलियाँ प्राणवान हों। कठपुतलियाँ संवाद को बढ़ावा देती हैं, क्योंकि बच्चे इन कठपुतलियों के नाम, उनकी पसंद और नापसंद को जानने का प्रयत्न करते हैं। वे बच्चे जिनका रवैया हमेशा सहयोगात्मक नहीं होता, या जो कक्षा में बहुत ज़्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाते, वे भी कठपुतलियों की ओर बहुत सकारात्मक ढंग से प्रतिक्रिया करते हैं। कठपुतलियों का संचालन करने के लिए अलग-अलग किरदारों के लिए अलग -अलग आवाज़ों का इस्तेमाल करना आवश्यक है। कठपुतली-संचालकों के लिए यह सीखना ज़रूरी है कि कठपुतलियों को कैसे चलाया जाता है। कठपुतलियाँ जो कह रही हैं ठीक उसी मुताबिक उनके मुँह खुलना चाहिए, कभी-कभी कठपुतलियों को स्थिर रहना होता है, या उपयुक्त ढंग से मोड़ना या चलना होता है, और साथ ही ध्यान से मंच पर प्रवेश करना व बाहर भी निकलना होता है। हालाँकि, बच्चों का कठपुतलियों पर बस इतना नियंत्रण होना चाहिए कि उनका नाटक रोचक रहे और दर्शकों के रूप में बैठे उन्हीं के साथियों को पूरा नाटक समझ में आ सके।

© NCERT not to be republished

कठपुतली में गति व भाषा होती है, जिसके माध्यम से किसी भी संदेश को किसी भी समूह या व्यक्ति विशेष के पास बहुत ही आसानी से पहुँचाया जा सकता है। कठपुतलियाँ कई प्रकार की होती हैं, जैसे—

- धागे/रस्सी से बनी कठपुतलियाँ
- लकड़ी से बनी कठपुतलियाँ (इनका प्रयोग उड़ीसा व हैदराबाद में अधिक किया जाता है।)
- परछाई से बनी कठपुतलियाँ
- उँगलियों पर बनाई जाने वाली कठपुतलियाँ
- दस्ताने से बनी कठपुतलियाँ
- हाथ द्वारा नचाई जाने वाली कठपुतलियाँ

शिक्षक द्वारा पेपर मोड़कर जानवरों और पक्षियों के आकार बनाए जा सकते हैं, जैसे— लोमड़ी, कौआ, मेंढक, तितली, मगरमच्छ आदि। कुछ स्टिक पपेट्स, कागज़ के घोड़े, बिल्ली, चिड़िया आदि के मुखौटे भी बनाए जा सकते हैं।

निष्कर्ष

बच्चों के सर्वांगीण विकास में शिक्षक की अहम भूमिका होती है। पूर्व-प्राथमिक स्तर पर पाठ्यचर्या का मतलब केंद्र में होने वाली विभिन्न प्रकार की खेल क्रियाओं से है। इस स्तर पर परंपरागत विषयों के स्थान पर व्यावहारिक क्रियाएँ विशेष महत्व रखती हैं। अतः बच्चों के शारीरिक, संज्ञानात्मक विकास, भाषा विकास, सामाजिक और सृजनात्मक विकास की क्रियाओं को कराने के लिए खेल सामाग्री की भी आवश्यकता होती है। शिक्षकों को इसके लिए अभिभावकों और बच्चों की मदद के साथ-साथ स्थानीय कारीगरों और साथी शिक्षकों की भी मदद लेनी चाहिए और खेल गतिविधियों के माध्यम से ही सिखाना चाहिए। वे जो भी स्त्रोत सामग्री बनाएँ उनका प्रयोग कक्षा में निरंतर करना चाहिए, क्योंकि छोटे बच्चे देखकर और महसूस करके सीखते हैं। उन्हें मौखिक गतिविधियाँ उतनी आकर्षित नहीं करती हैं जितना करके सीखने वाली गतिविधियाँ आकर्षित करती हैं।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

कौल, विनीता. 1996. *प्रारंभिक बाल शिक्षा कार्यक्रम*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

महिला और बाल विकास मंत्रालय. 2013. *नेशनल अर्ली चाइल्डहुड केयर एंड एजुकेशन पॉलिसी*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

रा.शै.अ.प्र.प. 2019. *निष्ठा : विद्यालय प्रमुखों और शिक्षकों की समग्र उन्नति के लिए राष्ट्रीय पहल*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2022. *नेशनल करिकुलम फ्रेमवर्क फॉर फाउंडेशनल स्टेज*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली. https://ncert.nic.in/pdf/NCF_for_Foundational_Stage_20_October_2022.pdf

वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण
दशा एवं दिशा

प्रभाकर कुमार*

"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कै मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै न हिय कै सूल।।"

वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण की स्थिति पर विचार करना आवश्यक है। इस आलेख में इसी बिंदु को ध्यान में रखकर वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण— दशा एवं दिशा पर बात की गई है। इसमें लेखक द्वारा वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण की स्थितियों पर चर्चा की गई है तथा हिंदी शिक्षण में समय की माँग को देखते हुए, किन-किन चीज़ों में बदलाव करने की आवश्यकता है और क्यों है? इसका असर विद्यार्थियों पर किस प्रकार से पड़ रहा है और हिंदी शिक्षण को किस प्रकार प्रभावित कर रही है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो अनुभवात्मक अधिगम शिक्षणशास्त्र की बात की गई है उसे लागू करने में किस प्रकार से मददगार साबित होगी, इस पर बात की गई है।

वर्तमान समय में हिंदी को राजभाषा के नाम से भी जानते हैं, क्योंकि हिंदी का विकास साहित्येत्तर क्षेत्रों में भी हो रहा है। वर्तमान समय में अंग्रेज़ी भाषा की लोकप्रियता काफ़ी बढ़ चुकी है और ज़्यादातर लोगों का झुकाव भी अंग्रेज़ी भाषा की ओर हो रहा है। ऐसे में अगर हम हिंदी शिक्षण की स्थिति की बात करते हैं, तो पाते हैं कि हिंदी शिक्षण की स्थिति दिन-प्रतिदिन बदलती जा रही है। हिंदी भारत के 9 राज्यों की मातृभाषा और भारत में सबसे अधिक लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा है, इसके बावजूद वह अपना अस्तित्व बनाए रखने के लिए अंग्रेज़ी के साथ लगातार संघर्ष कर रही है। वर्तमान समय में हिंदी के प्रति लोगों का नज़रिया भी बदल रहा है। हिंदी विषय को सिर्फ़ नाटक उपन्यास और कहानी तक सीमित माना जाता था और हिंदी पढ़ने वाले पाठकों के प्रति लोगों का नज़रिया भी दूसरा होता था। हिंदी के विद्यार्थी भी हिंदी विद्यार्थी बोलने में हिचकिचाने की स्थिति में होता था। लेकिन आज तकनीकी के

*पीएच.डी. शोधार्थी, हिंदी विभाग, हैदराबाद केंद्रीय विश्वविद्यालय

© NCERT not to be republished

साथ जुड़कर भाषा का नया रूप सामने आ रहा है। इन सबके बावजूद हिंदी की तरफ लोगों का झुकाव है। हिंदी के प्रति शिक्षकों का झुकाव कम होता जा रहा है। वर्तमान समय में ज़्यादातर हिंदी शिक्षक अपनी कक्षा के दौरान कुछ नयापन नहीं करना चाहते हैं। वे अध्ययन-अध्यापन के लिए व्यवहारवादी पद्धति का ही प्रयोग करते हैं। वे अपनी कक्षा को रोचक तथा विद्यार्थियों को परिवेश से जोड़ पाने में असफल हैं, क्योंकि वे पुरानी परंपरा को छोड़कर नई परंपरा को अपना नहीं पा रहे हैं। अन्य विषयों के शिक्षण के लिए जिस प्रकार से तरह-तरह की शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग हो रहा है उस तरह की सामग्री का हिंदी शिक्षण में उपयोग नहीं हो रहा है। इसका सीधा असर विद्यार्थियों पर पड़ता है जिसके कारण उन्हें पाठ्यवस्तु समझने में दिक्कत आती है। हिंदी शिक्षण की व्याख्यान विधि का ही बोलबाला होने के कारण हिंदी शिक्षण का स्वरूप नीरस है। वर्तमान समय में हिंदी के बहुत ही कम शिक्षक हैं जो निर्माणात्मक पद्धति से कक्षा में अध्यापन करते हैं। ज़्यादातर शिक्षक तो अपना पाठ्यक्रम पूरा करने में ही अपना दायित्व समझते हैं। प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक कक्षाओं की बात करें तो पाते हैं कि आज भी हिंदी शिक्षण के बहुत ही कम शिक्षक हैं जो अपनी कक्षाओं को रोचक बनाने में तथा विद्यार्थियों को समझाने हेतु शिक्षण सहायक सामग्री का प्रयोग करते हैं। उदाहरण के लिए— फ्लैश बोर्ड, रेखाचित्र, चार्ट, डायग्राम, कटआउट्स, पोस्टर, नक्शे और डायोरमा आदि। इन शिक्षण सहायक सामग्रियों का प्रयोग बहुत ही कम देखने को मिलता है। अगर हिंदी शिक्षण को और समृद्ध करना है, तो उसके शिक्षण में बदलाव लाना होगा। परंपरावादी सीमाओं को तोड़कर आगे बढ़ना होगा। अगर ऐसा कर पाने में हम सफल होते हैं तो निश्चित तौर पर हिंदी शिक्षण को नया रूप दे पाएँगे। अगर हम ऐसा कर पाए तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में जो भाषा शिक्षण के लिए अनुभवात्मक अधिगम शिक्षणशास्त्र की बात की गई है। उसे पूर्णरूपेण लागू कर पाएंगे और नीति भी सफल होगी। इसके अलावा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 में शिक्षा तथा शिक्षण में जिस विषयवस्तु को बाहरी वातावरण से जोड़ने की बात की गई, उसे भी हम कर पाएँगे। कोई भी नीति या रूपरेखा तभी सफल हो पाएगी जब हम मिलकर उसके अनुसार कार्य करेंगे। अगर मिलकर कार्य करेंगे तो निश्चित रूप से राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी सफल होगी और पूरे भारत के हिंदी के विद्यार्थियों को लाभ इसका मिलेगा।

महान शिक्षा शास्त्री जे. कृष्णमूर्ति के अनुसार, "एक सिस्टम आदमी को नहीं बदल सकता है, बल्कि आदमी सिस्टम को बदलते हैं।" ठीक उसी प्रकार सिस्टम को भी बदला जा सकता है जब हम उससे बाहर निकलकर कुछ अलग सोचें और जो परंपरावादी शिक्षण विधियों तक ही सीमित हैं, उससे बाहर निकलें। अगर हमें हिंदी में कुछ अलग करना है तो सिर्फ़ हिंदी के बारे में बातें करने से नहीं होगा, बल्कि उसके लिए आगे बढ़कर कार्य भी करना होगा, क्योंकि आज तक हम उन समस्याओं पर सिर्फ बातें करते आ रहे हैं। अपनी इस आदत को हमें बदलना होगा। हिंदी शिक्षण की वर्तमान स्थिति को सुधारना है तो हमें प्राथमिक स्तर से बदलाव शुरू करना

होगा। अगर हमारी नींव मज़बूत होगी तो निश्चित ही हम आगे और अच्छे तरीके से कार्य कर सकते हैं। हिंदी शिक्षण में ये बदलाव तभी संभव हैं जब हम उसके अनुसार पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम बनाएँ तथा परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली को भी बनाएँ। पाठ्यचर्या, पाठ्यक्रम, परीक्षा प्रणाली और मूल्यांकन प्रणाली में सुधार करने की बात रा.शै.अ.प्र.प. के फोकस समूह के आधार पत्र परीक्षा प्रणाली में सुधार में किया गया है। वर्तमान समय में जो परीक्षा प्रणाली है उसमें काफ़ी बदलाव करने की ज़रूरत है। अगर परीक्षा प्रणाली में बदलाव करना है तो निश्चित तौर पर शिक्षण विधियों में भी बदलाव करना होगा। आज की परीक्षा प्रणाली 21वीं सदी के अनुसार न होकर परंपरावादी और रटंत विद्या पर आधारित है। परीक्षा का अर्थ "परितः इक्षणम" अर्थात छात्रों को चारों ओर से देखना, आंतरिक और बाह्य दोनों रूपों में कक्षा में छात्रों ने क्या सीखा है और कितना सीखा है। इसकी जाँच करने की प्रणाली का नाम परीक्षा प्रणाली है, लेकिन आज की परीक्षा प्रणाली के प्रश्न बिना समझे रटने की आदत डालते हैं। वर्तमान परीक्षा प्रणाली केवल स्मरण शक्ति के कौशल की जाँच करती है। वर्तमान स्वरूप में परीक्षाएँ— परीक्षा पूर्व तथा परीक्षा पश्चात दोनों ही परिस्थिति में विद्यार्थियों में दबाव एवं दुश्चिंता उत्पन्न करती हैं। इसलिए परीक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता है। परीक्षा प्रणाली में सुधार की आवश्यकता क्यों है इसे विस्तार से जानने के लिए निम्नलिखित बिंदुओं को देखा जा सकता हैं—

- भारत में विद्यालय बोर्ड की परीक्षाएँ 21वीं सदी के ज्ञान समाज और इसके नवाचारी समस्या समाधानकर्ताओं की आवश्यकता के अत्यंत अनुपयुक्त है।
- यह सामाजिक न्याय की ज़रूरतों को पूरा नहीं करती।
- प्रश्नपत्रों की गुणवत्ता काफ़ी कम होती है।
- इसमें लचीलापन नहीं है। एक नीति सबके लिए उपयुक्त के सिद्धांत पर आधारित है।
- ये परीक्षाएँ अत्यधिक तनाव एवं चिंता उत्पन्न करती हैं। परीक्षाजनित आत्महत्याएँ एवं नर्वस ब्रेकडाउन की घटनाएँ बढ़ रही है।
- यहाँ ग्रेड देने और ग्रेड/अंक रिपोर्ट में अक्सर पूर्ण प्रकटीकरण और पारदर्शिता का अभाव है। जिसके संबंध में राष्ट्रीय सलाहकार समिति ने 'शिक्षा बिना बोझ के' (1993) में सुझाया गया है कि— कक्षा 10वीं और 12वीं के अंत में ली गई बोर्ड परीक्षाएँ नौकरशाही सिद्धांतों पर आधारित है। इसके अलावा अगर हम बोर्ड परीक्षाओं की बात करें तो पाते हैं कि बोर्ड परीक्षाएँ भी विद्यार्थियों में रटने पर ज़ोर देती हैं। वहीं अगर हम भाषा मूल्यांकन की बात करें, तो पाते हैं कि भाषा मूल्यांकन के समय भाषा अधिगम की प्रकृति पर ध्यान नहीं दिया जाता है। हम किन तथ्यों का परीक्षण करें और किस प्रविधि से करें, उस पर भी ध्यान नहीं दिया जाता है। साहित्य के परीक्षण में प्रायः भाषा के सभी कौशलों को किसी न किसी प्रकार साधन के रूप में स्वीकार किया जाता है, जैसे— किसी कविता या कहानी को सुना जा सकता है, लेकिन इन सभी बातों पर ध्यान न देकर सिर्फ़ बोर्ड परीक्षाओं में ज्ञानात्मक प्रश्नों की बहुलता

© NCERT not to be republished

होती है। बोधात्मक और क्रियात्मक प्रश्नों की संख्या भी काफ़ी कम होती है। इसकी वजह से विद्यार्थियों में रचनात्मक क्षमता का विकास न होकर सिर्फ रटने की आदत लग जाती है। इसके अलावा मूल्यांकन में भी सिर्फ़ परीक्षा प्रणाली का प्रयोग किया जाता है। मौखिक परीक्षा एवं सामूहिक कार्य मूल्यांकन बहुत कम कराया जाता है। मूल्यांकन करते समय भी ध्यान सिर्फ़ प्रश्नों के उत्तर की ओर होता है। विद्यार्थी क्या समझा, क्या नहीं और उसमें क्या सुधार करने की आवश्यकता है? इस तरफ मूल्यांकनकर्ता का ध्यान बहुत ही कम जाता है। विद्यार्थियों की सोच तथा विचार से उनका कोई लेना-देना नहीं होता है। इसका एक कारण यह भी हो सकता है कि अगर विद्यार्थियों को उनकी विचारधारा लिखने की इजाज़त दी जाए तो उन्हें प्रश्न-पत्र जाँच करते वक्त काफ़ी समय लगेगा, क्योंकि सबकी अपनी अलग-अलग विचारधारा होगी। वहीं ज्ञानात्मक प्रश्नों में इस प्रकार की समस्या नहीं होती है, इसलिए ज़्यादातर प्रश्न ज्ञानात्मक होते हैं जो कि उचित नहीं है। अगर हमें इस समस्या से निकलना है तो इसमें परीक्षा प्रणाली में निश्चित रूप से बदलाव करना होगा और परंपरावादी विचारधारा से बाहर निकलना होगा। परंपरावादी विचारधारा से निकलने में अगर सफल हो गए, तो निश्चित रूप से हिंदी शिक्षण की स्थिति में सुधार कर पाने में सफल हो सकेंगे। यह सुधार प्राथमिक स्तर से करना होगा। प्राथमिक, माध्यमिक व उच्च माध्यमिक स्तर पर हिंदी की कक्षाओं का उद्देश्य निर्धारण करना होगा। उदाहरण के लिए, कौन-सी कक्षा में क्या पढ़ाया जाए और कैसे पढ़ाया जाए तथा उसे पढ़ाने का उद्देश्य क्या है? इन बातों का मूल्यांकन भी आवश्यक है। जो उद्देश्य निर्धारित किया गया था वह कितना सफल हुआ है और उसे पूरा कैसे किया जा सकता है, अगर इन सब उद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्य किया जाए तो हिंदी का भविष्य निश्चित रूप से सुनहरा होगा। इसके लिए पाठ योजना में भी सुधार करना होगा। यह सब तभी संभव होगा जब हम कुछ अलग करने की सोच रखेंगे तथा उसके अनुसार कार्य करने को तैयार रहेंगे तथा उसमें आने वाली चुनौतियों से लड़ने के लिए भी तैयार रहेंगे। वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण की तकनीकी को लेकर कम चर्चा होती है। अगर होती भी है तो उसे पूर्णरूपेण लागू नहीं किया जाता है। तकनीकी को लेकर की गई चर्चाएँ व्याख्यान तक ही सीमित रह जाती हैं। अगर किसी तकनीकी के उपयोग का कोई प्रयास किया भी जाता है तो वह सफल नहीं हो पाता। उसका सबसे बड़ा कारण यह है कि हिंदी शिक्षकों को उसके लिए तैयार नहीं किया जाता है। अगर हिंदी शिक्षक स्वयं तकनीकी का प्रयोग करना नहीं जानते तो वह अपनी कक्षा में तकनीकी का प्रयोग नहीं कर पाएँगे। रवीन्द्रनाथ टैगोर ने कहा है, "एक दीपक दूसरे दीपक को तब तक प्रज्वलित नहीं कर सकता जब तक कि वह स्वयं प्रज्वलित ना रहे।" इसी प्रकार एक शिक्षक भी तब तक अध्यापन नहीं कर सकता जब तक वह स्वयं उस विषय के बारे में ज्ञान न

रखता हो। अगर वेदों की बात करें तो अथर्ववेद में कहा गया है कि गुरुवर आप ऐसे खेल-खेल में पढ़ाइए है कि जो कुछ भी मैं सुनूँ वह मुझमें ही रहे। इसके अलावा राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी अधिगम प्रक्रिया के माध्यम से विद्यार्थियों को रटने की प्रणाली से मुक्त कराने की बात करती है। वह इस बात पर ज़ोर देता है कि पाठ्यचर्या पाठ्यपुस्तक केंद्रित न रह जाए। वहीं अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की बात करें तो राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भी इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि रटकर सीखने के बजाय रचनावादी तरीके से सीखने पर ज़ोर दिया जाना चाहिए। इसके साथ-साथ स्कूल की पाठ्यचर्या में भी बदलाव होना चाहिए। यह सब तभी लागू होगा जब शिक्षकों को भी उसी के अनुरूप प्रशिक्षित किया जाएगा, क्योंकि शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। पाठ्यचर्या और पाठ्यक्रम या फिर तकनीकी का प्रयोग किया जाना चाहिए। ये सब ठीक तरह से तभी कार्य कर पाएँगे जब शिक्षक उसके अनुसार ही प्रशिक्षित होंगे। कार्य शिक्षक को ही करना है, इसलिए शिक्षकों का प्रशिक्षण भी समय की माँग को देखकर करना होगा। इसके लिए आवश्यक है कि शिक्षकों को समय की माँग के अनुसार प्रशिक्षित किया जाए। इसके अलावा हिंदी में होने वाले शोधों में भाषा शिक्षण शोध पर ज़ोर देना चाहिए। अगर वर्तमान समय की बात करें तो पाते हैं कि हिंदी में होने वाले अनुसंधान का 90 फीसदी साहित्य केंद्रित होता है और भाषा, जनसंचार आदि पर मुश्किल से 10 फीसदी काम होता है। इसमें बढ़ोतरी करनी होगी। अगर भाषा पर ज़्यादा से ज़्यादा शोध होंगे तो निश्चित तौर पर नई-नई बातें निकल कर सामने आएँगी। इससे हिंदी शिक्षण को आगे बढ़ने में काफ़ी मदद मिलेगी। इसके अलावा रा.शै.अ.प्र.प. के दस्तावेज *परीक्षा प्रणाली में सुधार* में परीक्षा प्रणाली की बात की गई है या विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा 2019 में प्रकाशित रिपोर्ट *उच्चत्तर शिक्षा संस्थानों में मूल्यांकन सुधार* में जो तथ्य दिया गया है कि सार्थक सीखने को क्रियांवित करने के लिए मूल्यांकन को सीखने के परिणामों और संस्थागत लक्ष्यों से जोड़ा जाना चाहिए। दोनों ही दस्तावेजों द्वारा सुझाई गई बात लागू कर पाएँगे और दोषपूर्ण परीक्षा प्रणाली को ठीक कर पाएँगे जिसकी ज़रूरत भारतीय शिक्षा जगत को वर्षों से है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष के रूप में हम कह सकते हैं कि वर्तमान समय में हिंदी शिक्षण की जो दशा एवं दिशा है उसमें समय की माँग को देखते हुए काफ़ी कुछ बदलाव करने की ज़रूरत है, जैसे— परीक्षा प्रणाली में सुधार, मूल्यांकन के तरीकों में सुधार, शिक्षण विधियाँ में सुधार, शिक्षण सहायक सामग्री में बढ़ोतरी आदि। इसकी वकालत राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005 भी करती है। अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 को सफल बनाना है और अनुभवात्मक अधिगम शिक्षणशास्त्र को पूर्णरूपेण लागू करना है तो इसके लिए किस प्रकार का

बदलाव लाना होगा इस पर विचार किया जाना चाहिए और सबको मिलकर उसके अनुसार प्रयास करना होगा। किस प्रकार हिंदी शिक्षण को एक नई दिशा प्रदान कर सकते हैं और हिंदी के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं इन सभी बातों की ओर ध्यान आकृष्ट करना होगा।

संदर्भ

पारख, जवरीमल्ल. 2008. हिंदी शोध की दशा और दिशा. *भारतीय हिंदी शिक्षण सम्मेलन-2008 के लेख और वक्तव्य*. पृ. 170. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.

यू.सी.जी. 2019. *उच्च शिक्षा संस्थानों में मूल्यांकन सुधार*. पृ.सं. 1–13. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग.

रा.शै.अ.प्र.प. 2005. *राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा* 2005. *पृ. सार संक्षेप*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

———. 2008. *परीक्षा प्रणाली में सुधार— आधार पत्र*. पृ.सं. 1–14. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

शर्मा, किशोरीलाल. *भाषा में मूल्यांकन तथा परीक्षण*. पृ.सं. 1–71. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. पृ.सं. 21–22. शिक्षा मंत्रालय. भारत सरकार, नई दिल्ली.

शुक्ला, भारती. 2008. हिंदी शिक्षण : वर्तमान दशा-दिशा : अवधारणात्मक विमर्श. *भारतीय हिंदी शिक्षण सम्मेलन— 2008 के लेख और वक्तव्य*. पृ.सं. 136–37. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.

© NCERT not to be republished

4

प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं के विद्यालय छोड़ने-संबंधी कारकों का अध्ययन

अय्याज़ अहमद खान*

शालात्यागी बालिकाओं से तात्पर्य उन प्रतिभागियों से है जो किसी कारणवश अपने शैक्षिक चक्र या शिक्षा पूर्ण करने से पहले ही स्कूल की सदस्यता छोड़ दते हैं। इस शोध पत्र में प्राथमिक स्तर पर अल्पसंख्यक समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन किया गया है। इसके अतिरिक्त अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की बालिकाओं के परिपेक्ष्य में विद्यालय छोड़ देने संबंधी कारकों के अध्ययन का भी प्रयास किया गया है। प्रतिदर्श इकाई के रूप में पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के कुल 32 अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं तक तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि द्वारा पहुँचा गया और उनकी प्रतिक्रियाएँ ली गईं। प्रदत्त संकलन हेतु उपकरण के रूप में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। इस शोध अध्ययन में परिणामस्वरूप यह पाया गया है कि अधिकतम अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाओं का संबंध सामान्य वर्ग संयुक्त परिवार से है तथा इनके अभिभावक कम शिक्षित हैं। वहीं व्यावसायिक रूप से अधिकतर लड़कियों के पिता दैनिक मज़दूर और माताएँ गृहिणी हैं। संस्थागत पृष्ठभूमि के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अधिकांश अल्पसंख्यक (मुस्लिम) समुदाय की शालात्यागी बालिकाएँ ग्रामीण क्षेत्र से तथा सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल में नामांकित हैं। वहीं अधिकांश प्रतिभागियों ने पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता को प्राथमिक स्तर पर विद्यालय छोड़ देने का प्रभावी कारक माना है।

आधुनिक युग में शिक्षा समाज के विकास के लिए सबसे महत्वपूर्ण पहलू है। शिक्षा एक आवश्यकता के साथ हर व्यक्ति का मौलिक अधिकार भी है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम (2009) के अंतर्गत 6 से 14 वर्ष की आयु के सभी बच्चों को निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा का अधिकार देता है। साथ ही यह भी निर्देश देता है कि कोई बच्चा स्कूल में प्रवेश से वंचित न रहे, भले ही उसके पास आयु-प्रमाण पत्र

**असिस्टेंट प्रोफेसर*, शिक्षा विभाग-मुर्शिदाबाद, अलीगढ़ मुस्लिम यूनिवर्सिटी, अलीगढ़ 202 001

© NCERT not to be republished

न हो। निस्संदेह इस अधिनियम के कार्यान्वयन से प्राथमिक विद्यालयों के आधारभूत सुविधाओं और मानव संसाधनों में सुधार हुआ है। दुर्भाग्य से आज भी कुछ ऐसे विद्यार्थी हैं, जो नामांकन के उपरांत निर्धारित शैक्षिक स्तर के पहले ही शिक्षा अथवा स्कूल को छोड़ देते हैं, उसे हम शालात्याग कहते है। इस प्रघटना को दो तरह से परिभाषित किया गया है। प्रथम अर्थ में शालात्याग करने वाले उन बच्चों को संदर्भित करता है, जो शिक्षा चक्र को पूरा किए बिना संस्था से अपनी सदस्यता समाप्त कर लेते हैं (अग्निहोत्री, 2010)। वहीं दूसरे अर्थ में वे सभी बच्चे जो शिक्षा चक्र के किसी एक पायदान पर पहुँचने के उपरांत अगले पायदान पर नामांकित नहीं होते हैं (सिंह और राय; 2020)।

शाला त्यागना एक सार्वभौमिक और बहुआयामी प्रघटना है, जो शिक्षा के प्रत्येक स्तर पर पाई जाती है। स्वतंत्रता के पश्चात शिक्षा के प्रसार हेतु भारत सरकार द्वारा समय-समय पर नीतियाँ और योजनाएँ बनाई गईं, जिसका लक्ष्य देश के प्रत्येक बालक-बालिका को विद्यालय से जोड़ना अर्थात स्कूल में नामांकन दर में वृद्धि और साथ ही इनके ठहराव को सुनिश्चित करना है। सर्व शिक्षा अभियान, मध्याह्न भोजन योजना और शिक्षा का अधिकार अधिनियम जैसी पहल के माध्यम से भारत ने हाल के वर्षों में विद्यालय स्तर पर नामांकन दर की वृद्धि में उल्लेखनीय प्रगति की है। निश्चित रूप से इन सभी नीतियों और योजनाओं के परिणामस्वरूप प्रत्येक स्तर पर शालात्यागी बच्चों की दरों में गिरावट देखी गई है। हालाँकि, शालात्यागी बच्चों की दर में प्रत्यक्ष गिरावट और इस दिशा में निरंतर प्रयासों के बावजूद आज भी ये समस्या एक चिंता का विषय है। गौड़ा और शेखर (2014) ने अपने अध्ययन में पाया कि मुस्लिम, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति में शालात्यागी बच्चों की संख्या सबसे अधिक है। इस समस्या की गंभीरता को समझते हुए राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) ने इस संदर्भ में कहा है, "स्कूली शिक्षा प्रणाली के प्रथम लक्ष्यों में हमें यह सुनिश्चित करना है कि बच्चों का स्कूल में नामांकन हो और उन्हें नियमित रूप से विद्यालय भेजा जाए"। जिला शिक्षा सूचना प्रणाली (यू-डाइस प्लस) ने वर्ष 2019–2020 के वार्षिक रिपोर्ट में प्राथमिक, उच्च प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर पर शालात्याग दर क्रमशः 1.5, 2.6 और 16.1 प्रतिशत रेखांकित किया, जो पूर्णरूप से यह दर्शाता है कि सरकारी पहल के बावजूद आज भी ज़मीनी स्तर पर शालात्याग के मामले मौजूद हैं।

शोध समस्या का औचित्य

भारत में शिक्षा के लक्ष्यों को प्राप्त करने में शालात्याग की समस्या सबसे बड़ी बाधा है। यह समस्या प्रत्येक समुदाय, जाति, वर्ग और लिंग में पाई जाती है। समकालीन समाज में शिक्षित लड़कियों से तर्कसंगत, स्वतंत्र और सशक्त होने की उम्मीद की जाती है, शैक्षिक प्राप्ति में जेंडर असमानता एक अहम मुद्दा है, जो मुस्लिम समुदाय के संदर्भ में अधिक महत्वपूर्ण है, क्योंकि मुस्लिम समुदाय शैक्षिक और आर्थिक रूप से सबसे अधिक पिछड़ा अल्पसंख्यक समुदाय है (प्रधानमंत्री की उच्चस्तरीय

© NCERT not to be republished

समिति, 2006)। वही अगर साक्षरता दर की बात करें तो जनगणना (2011) के अनुसार जहाँ देश की औसत साक्षरता दर 72.04 प्रतिशत है, वहीं पुरुष एवं महिला में ये दर क्रमशः 82.14 और 65.46 प्रतिशत है। जबकि मुस्लिम समुदाय में साक्षरता दर 59.1 प्रतिशत है, वहीं पुरुष एवं महिला में ये दर क्रमशः 67.6 और 50.1 प्रतिशत है। इन आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि मुस्लिम महिलाओं की साक्षरता दर मुस्लिम पुरुषों की तुलना में 17.5 प्रतिशत कम है और राष्ट्रीय औसत महिला साक्षरता दर से 15.36 प्रतिशत कम है। अतः शिक्षा के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों के संदर्भ में यह आवश्यक है कि मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग करने से संबंधी कारकों का अध्ययन किया जाए, जिसका प्रयास शोधार्थी ने इस अध्ययन के माध्यम से किया है।

संबंधित साहित्य का अध्ययन

शालात्याग से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन के अंतर्गत बरुआह और गोस्वामी (2012) ने अपने शोध अध्ययन में पाया कि घरेलु कार्य में संलिप्तता, मार्गदर्शन की कमी, परिवार का आकार और निम्न आर्थिक स्थिति, परीक्षा में असफलता, रुचि की कमी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या, अभिभावक की अशिक्षा, शिक्षकों द्वारा दंडित करना, आदि प्राथमिक स्तर पर बच्चों के स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण हैं। गौड़ा और शेखर (2014) ने शालात्याग के अग्रणी कारकों के रूप में घर के आकार, बच्चों की संख्या, माता-पिता की शिक्षा, परिवार की आर्थिक तंगी, पढ़ाई में रुचि का आभाव, आदि को निर्धारित किया है। इसी प्रकार अहीर (2015) ने बच्चों के स्कूल छोड़ने के प्रमुख कारणों के रूप में वित्तीय संसाधनों की कमी, रुचि की कमी, माता-पिता की धारणाएँ, अपेक्षित परिणाम न होना, आदि को निर्धारित किया हैं। साथ ही लड़कियों के संदर्भ में घर के काम और भाई-बहनों की देखभाल को कारण पाया है। कोका (2017) ने जम्मू और कश्मीर के जनपद पुलवामा पर किए गए अध्ययन में पाया कि पारिवारिक गरीबी, घरेलू काम में व्यस्तता, स्कूल से दूरी, छात्राओं की सुरक्षा, परीक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली, कक्षा में बैठने की खराब व्यवस्था, माता-पिता की अशिक्षा, पढ़ाई में रुचि की कमी, आदि कारणों से बच्चें स्कूल छोड़ देते हैं। वहीं पिल्लई (2019) ने पुणे जनपद पर खोजपूर्ण अध्ययन में पाया कि ड्रॉपआउट को प्रभावित करने वालो कारकों में व्यक्तिगत, प्रवास और आर्थिक कारण प्रमुख हैं। सलमान (2020) ने दिल्ली में माध्यमिक स्तर पर मुस्लिम लड़कों के ड्रॉपआउट-संबंधी कारणों के अध्ययन में यह पाया कि लड़कों में स्कूल छोड़ने का मुख्य कारण शिक्षा के प्रति अरुचि और स्व-रोजगार है। मजूमदार और मित्रा (2020) ने पश्चिम बंगाल में शालात्यागी बच्चों पर एक केस अध्ययन में पाया कि समृद्ध परिवार और शिक्षित माता-पिता के बच्चों का स्कूल छोड़ने की संभावना कम होती है।

वहीं लड़कियों के विशेष संदर्भ में शालात्याग की प्रघटना का साहित्यिक सर्वेक्षण के अंतर्गत अली (2014) ने पश्चिम बंगाल के मालदा जनपद

© NCERT not to be republished

में मुस्लिम समुदाय के प्राथमिक शिक्षा छोड़ने की समस्या का लिंग और आर्थिक स्थिति के संबंध में एक तुलनात्मक अध्ययन किया। इसमें इन्होंने पाया कि बच्चों को प्राथमिक शिक्षा से वापस लेने का माता-पिता का निर्णय उनके लिंग पर नहीं, बल्कि परिवार की आर्थिक स्थिति पर निर्भर करता है। शाहिदुल और करीम (2015) ने मलेशिया में स्कूल शालात्याग पर आधारित अध्ययन में यह पाया कि कई अंतर-संबंधित सामाजिक, आर्थिक, संस्थागत और सांस्कृतिक कारक हैं जो लड़कियों के शालात्याग दर को बढ़ाते है। पटनायक और गुंडेमेडा (2016) ने ओडिशा में शालात्यागी लड़कियों के अध्ययन में यह निष्कर्ष प्राप्त किया कि जन्म-क्रम, जाति, परिवार के प्रकार, परिवार की आर्थिक स्थिति, माता-पिता की शिक्षा एवं व्यवसाय, आदि कारक लड़कियों की शिक्षा को प्रभावित करते हैं। सेनगुप्ता और रूज (2018) ने भारत में मुस्लिम समुदाय की शिक्षा में लैंगिक असमानता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन किया और पाया कि परिवार की निम्न आर्थिक स्थिति ही शिक्षा में मुस्लिम लड़कियों की भागीदारी को कम करती है। साथ ही लैंगिक असमानता के लिए अभिभावक की अशिक्षा को ज़िम्मेदार पाया है। पटेल और अन्य (2018) ने ग्रामीण भारत में लड़कियों के स्कूल छोड़ने के समग्र सामुदायिक प्रभावों के अध्ययन में पाया कि पारिवारिक गरीबी और माँ की असाक्षरता के कारण शालात्याग की संभावना लड़कियों में तीन गुना अधिक है।

अध्ययन के उद्देश्य

- प्राथमिक स्तर पर शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।
- मुस्लिम लड़कियों के परिपेक्ष्य में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों का अध्ययन करना।

शोध का परिसीमन

प्रस्तुत शोध कार्य पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के मुस्लिम लड़कियों तक सीमित किया गया है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध एक वर्णनात्मक अध्ययन है। शोध की प्रकृति मात्रात्मक है।

जनसंख्या तथा प्रतिदर्श

प्रस्तुत शोध पश्चिम बंगाल राज्य के मुर्शिदाबाद जनपद के शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों पर आधारित है। अतएव इस शोध की जनसंख्या मुर्शिदाबाद जनपद की सभी मुस्लिम लड़कियाँ हैं, जिन्होंने प्राथमिक स्तर की शिक्षा पूरी किए बिना स्कूल छोड़ दिया था। प्रतिदर्श के चयन हेतु सर्वप्रथम मुर्शिदाबाद जनपद के पाँच अनुमंडलों में से जंगीपुर अनुमंडल का चयन अन्वेषक ने अपनी सुविधानुसार किया है। इसके बाद जंगीपुर अनुमंडल के 7 प्रखंडों में से समसेरगंज का

© NCERT not to be republished

चयन शोधार्थी ने इसकी न्यूनतम साक्षरता दर (54.98 प्रतिशत) के आधार पर किया। तत्पश्चात शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों तक पहुँचने के लिए तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि (Snowball Sampling Method) का उपयोग किया गया है। अतः प्रतिदर्श के रूप में कुल 32 शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों को शामिल किया गया है।

शोध उपकरण

प्रस्तुत शोध में स्वनिर्मित प्रश्नावली का उपयोग किया गया है। इस प्रश्नावली के सभी प्रश्नों का चयन शालात्याग साहित्यिक सर्वेक्षण और साक्षात्कार के आधार पर किया गया था। इस प्रश्नावली में कुल 14 प्रश्न थे, जो दो खंडों में विभाजित हैं। खंड 'क' में शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि संबंधी 6 प्रश्न थे, जिसमें मुख्यतः प्रतिभागी की जाति, परिवार के प्रकार, माता-पिता की शिक्षा, माता-पिता का व्यवसाय, स्कूल के प्रकार, स्कूल का स्थान आदि हैं। खंड 'ख' में मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग-संबंधी कारकों पर आधारित 8 प्रश्न थे, जिसमें मुख्यतः पारिवारिक गरीबी, घरेलू कार्य में संलिप्तता, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या, पढ़ाई में अरुचि, परीक्षा में असफलता, अभिभावक की शिक्षा, स्कूल से दूरी और असुरक्षा की भावना है। इस खंड में प्रश्नों को तीन स्तरों— सहमत, उदासीन तथा असहमत पर प्रतिक्रियाएँ ली गईं। जिसमें प्रतिभागी को एक विकल्प के सामने सही का चिह्न लगाना था।

आँकड़ों के संकलन की प्रक्रिया

आँकड़ों के संग्रहण हेतु शोधार्थी द्वारा समसेरगंज प्रखंड के शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों तक तुषारपिंडीय प्रतिचयन विधि के माध्यम से पहुँचा गया और प्रश्नावली भरवाई गई। आँकड़ों का संग्रह वर्ष 2022 के अगस्त माह में पूरा किया गया था।

आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या

इस सोपान के अंतर्गत संकलित आँकड़ों का विश्लेषण एवं व्याख्या उद्देश्यवार प्रस्तुत की गई है। प्रश्नावली के प्रत्येक खंड के विभिन्न प्रश्नों एवं कथनों पर प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं की आवृत्ति को प्रतिशत में बदलकर विभिन्न तालिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है।

प्रथम उद्देश्य— प्राथमिक स्तर पर शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों की पारिवारिक और संस्थागत पृष्ठभूमि का अध्ययन करना।

तालिका 1— जातीय श्रेणी और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

जातीय श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
सामान्य वर्ग	18	56.25
अन्य पिछड़ा वर्ग	14	43.75
कुल	32	100.00

तालिका 1 के अवलोकन से ज्ञात होता है कि 56.25 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ सामान्य वर्ग से हैं, जबकि 43.75 प्रतिशत अन्य पिछड़े वर्ग से है। अतः प्राप्त आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ सामान्य वर्ग से आती हैं।

© NCERT not to be republished

तालिका 2— पारिवारिक पृष्ठभूमि और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

चर		श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
परिवार के प्रकार		संयुक्त परिवार	21	65.63
		एकल परिवार	11	34.37
शैक्षिक योग्यता	पिता	निरक्षर	10	31.25
	माता		14	43.75
	पिता	प्राथमिक	11	34.37
	माता		09	28.12
	पिता	उच्च-प्राथमिक	08	25.00
	माता		05	15.63
	पिता	माध्यमिक	02	06.25
	माता		04	12.50
	पिता	उच्चत्तर माध्यमिक	01	03.13
	माता		00	00.00
व्यवसाय	पिता	खेती/किसानी	07	21.87
		दैनिक मज़दूरी	13	40.63
		अपनी दूकान	05	15.63
		छोटा व्यापार	07	21.87
	माता	दैनिक मज़दूरी	04	12.50
		घरेलु कार्य	28	87.50

© NCERT not to be republished

तालिका 2 में प्रस्तुत आँकड़ों से यह स्पष्ट होता है कि प्राथमिक स्तर 65.63 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध संयुक्त परिवार से हैं, जबकि 34.37 प्रतिशत का संबंध एकल परिवार से हैं। अतः कहा जा सकता है कि संयुक्त परिवार की मुस्लिम लड़कियों की शालात्याग संख्या एकल परिवार की तुलना में अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि संयुक्त परिवार की महिलाओं पर घरेलु कार्य का बोझ अधिक होता है, जिसकी वजह से लड़कियों को घर के कामों में हाथ बँटाना पड़ता है। संभवतः घरेलू कार्यों में संलग्न होने के कारण ये लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं। बरुआह

और गोस्वामी (2012), पटनायक और गुंडेमेडा (2016) ने अपने अध्ययनों में परिवार के आकर को ड्रॉपआउट का कारण पाया है। वहीं अभिभावक की शैक्षिक योग्यता के आधार पर निरक्षर, प्राथमिक शिक्षा, उच्च-प्राथमिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा एवं उच्चत्तर माध्यमिक शिक्षा प्राप्त मुस्लिम माता-पिता की लड़कियों का ड्रॉपआउट क्रमशः 43.75 व 31.25, 28.12 व 34.37, 15.63 व 25.00, 12.5 व 6.25 और शून्य व 3.13 प्रतिशत है। अतः प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के माता-पिता प्राथमिक स्तर और इससे कम शिक्षित है। इसी तरह का परिणाम पटनायक और गुंडेमेडा (2016) और कोका (2017) ने भी अपने शोध अध्ययन में पाया है। वहीं कई शोध अध्ययनों में यह पाया गया है कि माता-पिता का कम शिक्षित होना लड़कियों के शालात्याग का एक कारण है (पटनायक और गुंडेमेडा, 2016; पटेल और अन्य, 2018)। शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पिता मुख्य रूप से खेती/किसानी (21.87 प्रतिशत), दैनिक मज़दूरी (40.63 प्रतिशत), अपनी दूकान (15.63 प्रतिशत) तथा छोटा व्यापार (21.87 प्रतिशत), आदि व्यवसाय से जुड़े हुए है। जबकि माताएँ मुख्य रूप से घरेलु कार्य (87.50 प्रतिशत) करती हैं। अतः प्राप्त आँकड़ों के आधार पर हम कह सकते है कि व्यावसायिक रूप से अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों के पिता दैनिक मज़दूरी करते हैं और माताएँ गृहिणी हैं।

तालिका 3— संस्थागत पृष्ठभूमि और मुस्लिम लड़कियों का शालात्याग

चर	श्रेणी	आवृत्ति	प्रतिशत
स्कूल का स्थान	शहरी	02	06.25
	ग्रामीण	30	93.75

तालिका 3 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 93.75 प्रतिशत शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध ग्रामीण क्षेत्र से है, जबकि 6.25 प्रतिशत का संबंध शहरी क्षेत्र से हैं। इसकी एक वजह शायद यह हो सकती है कि ग्रामीण क्षेत्रों के अधिकांश परिवार की सामाजिक आर्थिक स्थिति निम्न स्तर की होती है और घरेलु कार्यों में लड़कियों को भी हाथ बटाना पड़ता है, जिसकी वजह से ये लड़कियाँ पढ़ाई पर ध्यान केंद्रित नहीं कर पातीं और धीरे-धीरे पढ़ाई छोड़ देती हैं। इसी प्रकार प्रतिभागियों की प्रतिक्रियाओं के विश्लेषण से पता चलता है कि सभी शालात्याग सरकारी सहायता प्राप्त स्कूल से संबंधित हैं। इसी तरह का परिणाम कोका (2017) ने अपने शोध में पाया कि परीक्षा की दोषपूर्ण प्रणाली और कक्षा में बैठने की खराब व्यवस्था के कारण शालात्याग की प्रघटना होती है।

द्वितीय उद्देश्य

मुस्लिम लड़कियों के परिपेक्ष्य में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों का अध्ययन करना।

इसके अंतर्गत प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों पर आधारित प्रश्नों की प्रतिक्रियाओं को प्रतिशत में प्रस्तुत किया गया है।

© NCERT not to be republished

तालिका 4— शालात्याग-संबंधी कारकों के संदर्भ में मुस्लिम लड़कियों की प्रतिक्रियाएँ

क्र.सं.	कथन	असहमत (%)	उदासीन (%)	सहमत (%)
1.	क्या पारिवारिक गरीबी के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	12.50	3.12	84.38
2.	क्या घरेलू कार्य में संलिप्तता लड़कियों की शालात्याग के लिए ज़िम्मेदार है?	15.63	6.25	78.12
3.	क्या व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या की वजह से लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	15.63	3.12	81.25
4.	क्या पढ़ाई में अरुचि के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	28.13	21.87	50.00
5.	क्या परीक्षा में असफलता के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	68.75	9.38	21.87
6.	क्या अभिभावक की कम शिक्षा के कारण लड़कियों में शालात्याग की प्रघटना है?	37.50	15.63	46.87
7.	क्या स्कूल से दूरी के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	78.12	3.12	18.76
8.	क्या असुरक्षा की भावना से लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं?	93.75	00	6.25

तालिका 4 में प्राथमिक स्तर पर शालात्याग-संबंधी कारकों के प्रति मुस्लिम लड़कियों की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने से पता चलता है कि 84.38 प्रतिशत लड़कियाँ पारिवारिक गरीबी को शालात्याग का कारक मानती हैं। 81.25 प्रतिशत मुस्लिम लड़कियों का मत है कि व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या के कारण लड़कियाँ स्कूल छोड़ देती हैं। 78.12 प्रतिशत मुस्लिम लड़कियों का मानना है कि घरेलू कार्य में संलिप्तता शालात्याग की वजह हैं, जबकि शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों में 50 प्रतिशत पढ़ाई में रुचि की कमी और 46.87 प्रतिशत अभिभावक की शिक्षा को कारण मानती हैं। वहीं शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों में केवल 6.25 प्रतिशत असुरक्षा की भावना, 18.76 प्रतिशत स्कूल से दूरी और 21.87 प्रतिशत परीक्षा में असफलता को कारक मानती हैं।

अतः प्राप्त आँकड़ों के विश्लेषण के आधार पर हम कह सकते है कि मुस्लिम लड़कियों के शालात्याग के लिए पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता महत्वपूर्ण कारक हैं। कई शोध अध्ययनों में आर्थिक तंगी को शालात्याग का एक प्रमुख कारक पाया गया है (बरुआह और गोस्वामी, 2012; अली, 2014; गौड़ा और शेखर, 2014; पटनायक और गुंडेमेडा, 2016; कोका, 2017; सेनगुप्ता और रूज, 2018; पटेल और अन्य, 2018; पिल्लई, 2019; मजूमदार और मित्रा, 2020; सलमान, 2020)। बरुआह और गोस्वामी (2012) ने प्राथमिक स्तर पर ड्रॉपआउट के लिए व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या को कारक बताया है। इसी प्रकार घरेलू कार्य में व्यस्तता को बरुआह और गोस्वामी (2012), अहीर (2015) और कोका (2017)

© NCERT not to be republished

ने कारक माना हैं। इसकी वजह शायद यह भी हो सकती है कि बड़े या संयुक्त परिवार में महिलाओं पर गृहस्थी कार्यों का दबाव अधिक होता है, जिसके कारण लड़कियों को गृहस्थी के कार्यों में हाथ बटाना पड़ता है।

निष्कर्ष

शोध आँकड़ों के विश्लेषण से प्राप्त परिणामों के आधार पर निम्न निष्कर्ष निकलते हैं—

- पारिवारिक पृष्ठभूमि के आधार पर अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियों का संबंध सामान्य वर्ग और संयुक्त परिवार से है। वहीं अधिकतर लड़कियों के माता-पिता निरक्षर या प्राथमिक शिक्षा प्राप्त हैं, जबकि व्यावसायिक रूप से अधिकतम प्रतिभागियों के पिता दैनिक मज़दूर और माताएँ गृहिणी है।
- संस्थागत पृष्ठभूमि के आधार पर यह ज्ञात होता है कि अधिकांश शालात्यागी मुस्लिम लड़कियाँ ग्रामीण क्षेत्र के अंतर्गत आती हैं।
- प्राथमिक स्तर पर शालात्याग के प्रभावी कारक के रूप में अधिकांश मुस्लिम लड़कियों ने पारिवारिक गरीबी, व्यक्तिगत स्वास्थ्य समस्या और घरेलू कार्य में संलिप्तता को माना है।

शोध के शैक्षिक निहितार्थ

वर्तमान शोध अध्ययन के निष्कर्षों के विश्लेषण से निम्नलिखित शैक्षिक निहितार्थ प्राप्त हुए हैं—

- मुस्लिम अभिभावकों की शैक्षिक जागरूकता पर बल दिया जाना चाहिए, ताकि वे शिक्षा के महत्व को समझें और बेटियों को शिक्षा का समान अवसर प्रदान करे।
- सरकारी स्कूलों की शिक्षा में सुधार हेतु सरकार को चाहिए कि स्कूलों के बुनियादी ढाँचे को बेहतर करें और साथ ही शिक्षकों की कमी का तुरंत निपटारा करे।
- सरकारी स्कूलों में शिक्षकों को विद्यार्थियों के साथ संलग्नता को बढ़ावा देना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों में शिक्षा के प्रति धनात्मक दृष्टिकोण का विकास होगा।
- मुस्लिम समुदाय में लड़कियों के शिक्षा स्तर को बेहतर करने के लिए नियमित पाठ्यक्रम के साथ हस्तशिल्प, कंप्यूटर प्रशिक्षण, सिलाई, बुनाई, आदि जैसे विभिन्न व्यावसायिक प्रशिक्षण को स्कूल में लागू करने की आवश्यकता है, ताकि शिक्षा के साथ इन्हें आर्थिक रूप से सबल बनाया जाए।

संदर्भ

अग्निहोत्री, आर. 2010. *आधुनिक भारतीय शिक्षा— समस्याएँ और समाधान*. पृ. 56. हिंदी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर.

अली, ए.एम. 2014. ए कम्पेरेटिव स्टडी ऑन द ड्रॉपआउट प्रॉब्लम इन प्राइमरी एजुकेशन अमंग मुस्लिम कम्युनिटी इन रिलेशन टु जेंडर एंड इकनोमिक स्टेटस. *ई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ ह्यूमैनिटिज एंड सोशल साइंस*. 19(12), पृ.सं. 76–78. https://www.iosrjournals.org/iosr-jhss/papers/Vol19-issue12/Version-1/L0191217678.pdf

अहीर, के.वी. 2015. ड्रॉपआउट्स इन स्कूल एजुकेशन इन इंडिया— मैगनीटुड एंड रीजन्स. *इंडियन जर्नल ऑफ रिसर्च*. 4(5), पृ.सं. 363–364. https://www.worldwidejournals.com/paripex/recent_issues_pdf/2015/May/May_2015_1431776966__118.pdf

© NCERT not to be republished

कोका, ए.ए. 2017. कॉसेस ऑफ स्कूल ड्रॉपआउट्स इन जम्मू एंड कश्मीर वीद स्पेशल रिफरेंस टु डिस्ट्रिक्ट पुलवामा. https://dx.doi.org/10.2139/ssrn.3323794

गौड़ा, एम., सतीश और टी.वी. शेखर. 2014. फैक्टर्स लीडिंग टु स्कूल ड्रॉपआउट्स इन इंडिया— ऐन एनालिसिस ऑफ नेशनल फैमिली हेल्थ सर्वे-3 डाटा. *आई.ओ.एस.आर. जर्नल ऑफ रिसर्च एंड मेथड इन एजुकेशन.* 4(6), पृ.सं. 75–83. https://doi.org/10.9790/7388-04637583

पटनायक, डी. और एन. गुंडेमेडा. 2016. पुशआउट्स फ्रॉम स्कूलिंग— ए सोशियोलॉजिकल स्टडी ऑफ गर्ल्स एजुकेशन इन ओडिशा. *जर्नल ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन.* 30(3), जुलाई, पृ.सं. 247–260. नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ एजुकेशनल प्लानिंग एंड एडमिनिस्ट्रेशन, नई दिल्ली.

पटेल, आर., ए.के. सिंह. एम. चंद्रा, टी. खन्ना, और एस. मेहरा. 2018. इस मदर एजुकेशन आर हाउसहोल्ड पावर्टी ए बेटर प्रिडिक्टर फॉर गर्ल्स स्कूल ड्रॉपआउट? *एविडेंस फ्रॉम अग्रेगेटेड कम्युनिटी इफेक्ट्स इन रूरल इंडिया.* https://www.hindawi.com/journals/edri/2018/6509815/

पिल्लई, टी.जे. 2019. ऐन एक्सप्लोरेटरी स्टडी ऑफ फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग स्कूल ड्रॉपआउट्स ऑफ पुणे डिस्ट्रिक्ट. *इंडियन जर्नल ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी.* 12(36), पृ.सं. 1–7. https://dx.doi.org/10.17485/ijst/2019/v12i36/146942

प्रधानमंत्री की उच्चस्तरीय समिति. 2006. *भारत में मुसलमानों की सामाजिक, आथिक और शैक्षणिक स्थिति— एक रिपोर्ट.* पृ.सं. 237. भारत सरकार, नई दिल्ली.

बरुआह, एस.आर. और यु. गोस्वामी. 2012. फैक्टर्स इन्फ्लुएंसिंग स्कूल ड्रॉपआउट्स एट द प्राइमरी लेवल. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ फार्म साइंसेज.* 2(1), पृ.सं. 141–144. https://citeseerx.ist.psu.edu/viewdoc/download?doi=10.1.1.1017.4911&rep=rep1&type=pdf

मजूमदार, ए. और सी. मित्रा. 2020. ड्रॉपआउट बिहेवियर ऑफ चिल्ड्रेन— द केस ऑफ वेस्ट बंगाल. *इंडियन जर्नल ऑफ ह्यूमन डेवलपमेंट.* 14(2), पृ.सं. 275–289. https://www.researchgate.net/publication/344045965_Dropout_Behaviour_of_Children_The_Case_of_West_Bengal

यू-डाइस प्लस. 2019–2020. एकीकृत जिला शिक्षा सूचना प्रणाली की चर्चा की गई है. स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

शाहिदुल, एस.एम. और ए.एच.एम.जेड. करीम. 2015. फैक्टर्स कंट्रीब्यूटिंग टु स्कूल ड्रॉपआउट अमंग द गर्ल्स— ए रिव्यु ऑफ लिटरेचर. *यूरोपियन जर्नल ऑफ रिसर्च एंड रिफ्लेक्शन इन एजुकेशनल साइंसेज.* 3(2), पृ.सं. 25–36. https://www.idpublications.org/wp-content/uploads/2015/02/Abstract-FACTORS-CONTRIBUTING-TO-SCHOOL-DROPOUT-AMONG-THE-GIRLS.pdf

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020.* भारत सरकार, नई दिल्ली.

सलमान, ए. 2020. आई फेल्ड टु वर्क हार्ड—रीजंस फॉर सेकेंडरी स्कूल ड्रॉपआउट अमंग मुस्लिम मैन इन दिल्ली. *कंटेम्परारी एजुकेशन डायलॉग.* 17(1), पृ.सं. 45–69. https://journals.sagepub.com/doi/pdf/10.1177/0973184919882795

सिंह, ए. और ए.के. राय. 2020. मुस्लिम समुदाय के प्रतिभागियों की विद्यालय ड्रॉपआउट की समस्याएँ एवं उनका परिप्रेक्ष्य. *भारतीय आधुनिक शिक्षा.* 41(1), पृ.सं. 101–113. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नई दिल्ली.

सेनगुप्ता, आर. और डी. रूज. 2018. फैक्टर्स अफ्फेक्टिंग जेंडर डिस्पैरिटी इन मुस्लिम एजुकेशन इन इंडिया. https://doi.org/10.1177%2F2455133317737936

© NCERT not to be republished

5

कोरोना महामारी के बाद इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों का अधिगम ह्रास एवं समाधान

भानु प्रताप सिंह*
रोहित गोस्वामी**

कोविड-19 महामारी के दौरान जहाँ विश्व की अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई थी, वहीं भारत के युवाओं को जो महामारी में शिक्षा से वंचित हो रहे थे, उनके लिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स वरदान साबित हुए थे। वहीं कोविड-19 से पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के छात्रों के जो माता-पिता उन्हें मोबाइल, टेलीविज़न एवं लैपटॉप आदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से दूर रहने की सलाह देते थे तथा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के अत्यधिक प्रयोग करने पर दंड भी देते थे। साथ ही इनके द्वारा बच्चों के मस्तिष्क एवं शरीर पर पड़ने वाले दुष्प्रभावों एवं परिणामों पर बच्चों को उनके अभिभावकों द्वारा मार्गदर्शन दिया जाता था। कोविड-19 महामारी में उन्हीं माता-पिता द्वारा उन्हें इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स प्रदान कराए गए जिससे छात्र अपने शिक्षकों एवं विद्यालय से जुड़ सकें तथा इसके सकारात्मक परिणाम देखने को मिले थे, जैसे— कोविड-19 के दौरान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स तथा उपकरणों द्वारा शिक्षा में व्यस्त होने के कारण छात्रों के तनाव में कमी आई थीं। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रयोग कुछ हद तक उच्च शिक्षा में तो प्रभावकारी प्रतीत होता है, लेकिन यह प्राथमिक शिक्षा पर पूर्णतः लागू नहीं किया जा सकता, क्योंकि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स बच्चों की कम उम्र में अधिक दुष्प्रभाव डालते हैं। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स सीमित रूप में मिश्रित प्रणाली शिक्षा या ब्लेंडेड शिक्षा (जिसमें विद्यार्थी पाठ्यक्रम का एक भाग कक्षा में पूरा करता हैं और दूसरा भाग डिजिटल एवं ऑनलाइन अभिभावको की निगरानी में करता हैं) के रूप में प्रयोग किए जा सकते हैं। कोविड-19 महामारी के दौरान जहाँ विश्व की अर्थव्यवस्था, स्वास्थ्य एवं शिक्षा व्यवस्था चरमरा गई, वहीं भारत के स्कूल की व्यवस्था इन्हीं इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के सहारे चलती रही। बच्चे जो महामारी के कारण शिक्षा से वंचित हो रहे थे, उनके लिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स वरदान साबित हुए।

*क्षेत्रीय निदेशक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, चंडीगढ़
**सहायक, इग्नू क्षेत्रीय केंद्र, चंडीगढ़

© NCERT not to be republished

जहाँ देश कोरोना के कारण लॉकडाउन में बंद पड़ा था, सभी शिक्षण संस्थान बंद पड़े थे। न छात्रों की पढ़ाई हो रही थी, अध्यापक अपने को इस नए हालात से निबटने में खुद को सक्षम नहीं पा रहे थे, शिक्षण संस्थान उहापोह के दौर से गुजर रहे थे। इन हालातों में जो इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के प्रयोग के विशेषज्ञ थे, अपने अध्यापकों को उचित ऑनलाइन प्रशिक्षण देकर अपने व्यापक इन्फ्रास्ट्रक्चर— ज्ञानवाणी, टेलीकॉन्फ्रेंसिंग, ज्ञानदर्शन आदि के अलावा वेब कॉन्फ्रेंसिंग को भी जोड़ते हुए विद्यार्थियों के सीखने-सिखाने में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

लॉकडाउन के दौरान ही 21 सितंबर, 2020 को भारत की नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति घोषित हुई, जो इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से ही जनता तक पहुँची। शिक्षा नीति वास्तविक धरातल के बहुत करीब है तथा व्यक्ति को वातावरण एवं समाज से सीखने को प्रेरित करती है। कोविड-19 महामारी के दौरान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स, जैसे— मोबाइल, लैपटॉप आदि द्वारा विद्यार्थी अपने शिक्षकों एवं विद्यालय से जुड़ सके थे तथा इसके निम्न सकारात्मक परिणाम देखने को मिले—

- विद्यार्थियों की शिक्षा बिना किसी व्यवधान के पूर्ण हो रही थी।
- कोविड-19 के दौरान बीमारी के कारण हुए तनाव में कमी देखी जा रही थी जब बच्चे अपने आप को शिक्षा में व्यस्त कर रहे थे तब ऑनलाइन सीखने एवं सिखाने को बढ़ावा मिला।
- ऑनलाइन शिक्षा के नए आयामों का सृजन हुआ, शिक्षा के लिए नए-नए एवं सस्ते इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स तथा उपकरणों का निर्माण एवं प्रयोग हुआ।
- ऑनलाइन वेबिनारों एवं कार्यशालाओं का प्रयोग शुरू हुआ जिससे इनके आयोजनों में होने वाले खर्चों में कमी आई थी।
- विद्यार्थियों ने गैजेट्स की सहायता से (जिसमें व्हाट्सएप, यूट्यूब एवं अन्य मीडिया शामिल हैं) अपनी शिक्षा पूरी की।

साथ ही इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से प्राथमिक शिक्षा के विद्यार्थियों को पढ़ाने के संबंध में विभिन्न दैनिक समाचार-पत्रों में छपे शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के साक्षात्कार, लेखों, मतों तथा व्हाट्सएप ग्रुप पर दिए गए अपने विचारों के माध्यम से निम्न परिणाम प्राप्त हो रहे थे—

- अधिकांश शिक्षकों के पास महामारी के दौरान बच्चों को पढ़ाने हेतु लैपटॉप, डिजिटल बोर्ड आदि उपलब्ध नहीं थे। विद्यार्थियों को विद्यार्थियों से जुड़ने तथा ऑनलाइन पढ़ाने हेतु उन्हें मोबाइल, इंटरनेट, लैपटॉप, डिजिटल बोर्ड आदि की व्यवस्था जुटाने हेतु काफ़ी मेहनत एवं परेशानी का सामना करना पड़ा था।
- शिक्षकों ने यह भी माना कि ऑनलाइन शिक्षण हेतु उन्हें भी सीखने की ज़रूरत पड़ी महामारी के दौरान तथा मित्रों एवं कर्मियों के सहयोग से यह संभव हो सका। इससे शिक्षकों को भी कुछ नया सीखने का मौका मिला।
- विद्यार्थियों को पढ़ाना शिक्षकों का सर्वोपरि कर्म एवं धर्म है। इसे शिक्षकों ने न केवल स्वीकार किया, बल्कि महामारी के दौरान बढ़-चढ़कर

© NCERT not to be republished

सीखने-सिखाने के डिजिटल मोड में अपनी सक्रिय भूमिका निभाई थी।

महामारी के दौरान विद्यार्थियों, अभिभावकों एवं शिक्षकों ने यह महसूस किया है कि अगर यह इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स नहीं होते तो इसके दूरगामी परिणाम सुखद एवं दुखद दोनों हो सकते थे, जैसे—

- विद्यार्थी खाली समय में महामारी के दौरान एकांत में रहे थे, घर से बाहर नहीं निकले, ऐसे में वे तनावग्रस्त एवं अवसाद के शिकार हो सकते थे।
- महामारी के दौरान सीखने एवं सिखाने का क्रम टूट सकता था जिससे विद्यार्थी 1 या 2 शैक्षणिक वर्ष पीछे होने के कारण उनका आत्मविश्वास भी टूट सकता था।
- आवश्यकता आविष्कार की जननी है यह सत्य है, इसी क्रम में यह मान सकते हैं कि महामारी के दौरान सीखने एवं सिखाने हेतु ऑनलाइन विधाएँ आदि का सृजन एवं प्रयोग नहीं हो पाता।

अधिकांश अभिभावकों ने माना कि विद्यार्थी अपने माता-पिता, दादा-दादी एवं नाना-नानी से दूर होते जा रहे थे लेकिन कोविड-19 के दौरान उन्हें उनके पास रहकर न केवल सीखने का मौका मिला, अपितु अभिभावक भी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स एवं उपकरणों के साथ शिक्षा के ऑनलाइन अवसरों से रूबरू हो सके। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की मदद से परस्पर मित्रों, सहपाठियों एवं रिश्तेदारों से विद्यार्थियों का संवाद बढ़ा था और एक-दूसरे की मदद करने की मनोवृत्ति को बढ़ावा मिला था।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 में शिक्षा और पाठ्यक्रम हेतु महत्वपूर्ण सुझाव

दुनियाभर में शिक्षा प्रणालियों में बदलाव एक मूल्यवान सबक प्रदान करता है और शिक्षा, पाठ्यक्रम और शिक्षाशास्त्र को पुन: व्यवस्थित करने का एक अनूठा अवसर प्रदान करता है। भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एन.ई.पी.) 2020 आज देश की शिक्षा प्रणाली की बढ़ती असमानता को दूर करने का प्रयास करती है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के तीन महत्वपूर्ण सुझाव हैं—

डिजिटल डिवाइस को मज़बूत करना। प्रौद्योगिकी में सार्वभौमिक गुणवत्ता की शिक्षा प्राप्त करने और सीखने के परिणामों में सुधार करने की आवश्यकता है। डिजिटल क्षमताओं, आवश्यक बुनियादी ढाँचे और कनैक्टिविटी को दूरस्थ और सबसे गरीब समुदायों तक पहुँचना चाहिए। सूचना युग में प्रौद्योगिकी और इंटरनेट तक पहुँच एक तत्काल आवश्यकता है।

पाठ्यक्रम को पुनः प्रस्तुत करना। आज जबकि शिक्षक अपने विद्यार्थियों के साथ संवाद करने के डिजिटल तरीकों को सीखने के लिए संघर्ष कर रहे हैं, स्पष्ट है कि संकट हमें सिखा रहा है कि विद्यार्थियों की वास्तविकताओं, महत्वपूर्ण रचनात्मक और लचीली सोच, लचीलापन तथा विद्यार्थियों में सहानुभूति को बढ़ावा देने में पाठ्यक्रम को आधार बनाया जाना चाहिए। हमारे पर्यावरण के साथ एक सहजीवी संबंध विकसित करना चाहिए। विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए।

© NCERT not to be republished

शिक्षकों के व्यापक कैडर को सशक्त बनाना। यह संकट शिक्षकों को अपनी भूमिका को सुदृढ़ करने के लिए मजबूर कर रहा है, ताकि सूचना को स्थानांतरित करने से लेकर सीखने में सक्षम बनाया जा सके। दूरस्थ शिक्षा में बदलाव ने अलग-अलग सिखाने के कई अवसर दिए हैं, जैसे— आत्म-शिक्षा को प्रोत्साहित किया, विविध संसाधनों से सीखने के अवसर प्रदान हुए, और उच्च-तकनीक तथा निम्न-तकनीकी स्त्रोतों के माध्यम से विविध आवश्यकताओं के लिए अनुकूलित सीखने की अनुमति मिली आदि।

शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए एक विकेंद्रीकृत, लोकतांत्रिक समुदाय-आधारित दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है। इसके लिए महत्वपूर्ण है कि स्थानीय शिक्षकों की नियुक्ति हो, जो बच्चों के परिवारों के साथ विद्यार्थियों के जीवन के साथ सहानुभूति रखे। कोविड-19 में दूरस्थ शिक्षा के साथ उनकी संबंधित चुनौतियों ने हमें यह भी सिखाया कि हमें सीखने को स्वतंत्र करना चाहिए और सूचना हस्तांतरण के साथ-साथ अनुभव-आधारित शिक्षा पर भी बल देना चाहिए।

विद्यार्थी जीवन में इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रभाव

वर्तमान में प्रौद्योगिकी हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन रही है तथा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स निश्चित रूप से हमारे दिन-प्रतिदिन के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। गैजेट्स को तेज गति से विकसित करने वाली प्रौद्योगिकी में काफ़ी वृद्धि हुई है। छोटी उम्र से लेकर बुढ़ापे तक, हर किसी को इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करते देखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक उपकरण टी.वी., स्मार्टफोन, लैपटॉप, टैबलेट आदि रहे हैं। प्रौद्योगिकी ने इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की मदद से अध्ययन के विभिन्न तरीकों से मानव जीवन को बदल दिया है तथा सीखना आसान बन गया है। वर्तमान में हम देखते हैं कि विद्यार्थी नोटबुक के बजाय टैबलेट का उपयोग कर रहे हैं। यह निश्चित रूप से एक महान बदलाव है, लेकिन विद्यार्थी इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से इतने आकर्षित होते हैं कि वे भूल जाते हैं कि वे क्या कर रहे हैं, यह एक दयनीय स्थिति है। यद्यपि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स ने आकर्षक वीडियो, चित्रमय व्याख्या द्वारा और अधिक सीखने की अवधारणाओं को आसान बना दिया है, लेकिन उन्होंने बच्चों के जीवन को प्रतिकूल रूप से प्रभावित किया है। यदि इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग एक सीमा में किया जाता है तो इसका मानव जाति पर कम प्रभाव पड़ता है। इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के फ़ायदे हैं, क्योंकि उसने हमारे जीवन को आसान बना दिया है, लेकिन साथ ही उनके नुकसान भी हैं। विद्यार्थियों द्वारा उपयोग किए जाने वाले इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के कुछ प्रमुख प्रभाव इस प्रकार हैं—

- आमतौर पर टी.वी., मोबाइल, लैपटॉप, जैसे— इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स में विभिन्न प्रकार के मनोरंजन कार्यक्रम और बहुत सारी हिंसक सामग्री दिखाई जाती है। यहाँ तक कि बच्चे अवांछित चीज़ों, सर्फिंग और बहुत कुछ में स्वयं को शामिल कर लेते हैं। ये बच्चे के जीवन पर भारी प्रभाव डालते हैं। सोशल मीडिया और

© NCERT not to be republished

गैजेट्स पर बातचीत करने वाले बच्चे अपनी आक्रामकता में अचानक वृद्धि पाते हैं।

- विद्यार्थियों को मोबाइल और लैपटॉप की इतनी बुरी लत होती है कि वे पूरी रात गेम खेलने, सर्फिंग, चैटिंग आदि में बिताते हैं, यह खतरनाक हो सकता है। पूरे दिन सक्रिय रहने के लिए बच्चों को पर्याप्त नींद की आवश्यकता होती है, लेकिन वर्तमान पीढ़ी के बच्चे फोन और लैपटॉप पर अधिक निर्भर हैं। इसके अलावा इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स की स्क्रीन द्वारा उत्सर्जित किरणें दृष्टि को नुकसान की ओर ले जाती हैं। इससे रेटिना में समस्या हो सकती है और अस्थायी दृष्टि-हानि हो सकती है। माता-पिता द्वारा बच्चों को बुद्धिमानी से गैजेट्स का उपयोग करने के बारे में शिक्षित किए जाने की आवश्यकता है।
- आजकल छोटे बच्चे आउटडोर गेम खेलने में दिलचस्पी नहीं दिखाते, क्योंकि वे मोबाइल और टैबलेट पर व्यस्त रहते हैं। इसके साथ-साथ, बच्चे इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का प्रयोग करते समय सचेत हुए बिना, बहुत अधिक जंक फूड खाते हैं, इससे मोटापा हो सकता है।
- बच्चे और किशोर अधिक मात्रा वाले इयरफोन और हैडफोन पहने हुए मोबाइल और टैबलेट का उपयोग करते हैं। इससे उनके कानों को नुकसान होगा और वे बहरे हो सकते हैं। इयरफोन पहनना प्रतिबंधित नहीं है, लेकिन कम मात्रा और कम समय बनाए रखने की आवश्यकता है। बच्चे पूरे दिन अपने ईयरफोन के साथ फोन का इस्तेमाल करते हैं जो श्रवण हेतु खतरनाक है।
- सभी इलेक्ट्रॉनिक उपकरण प्रकाश किरणों का उत्सर्जन करते हैं जो हानिकारक हैं। लंबे समय तक लगातार इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को देखने से लोगों के नेत्रों को नुकसान होता है। आँखों में मौजूद तरल सूख सकता है और दृष्टि की समस्या पैदा कर सकता है।
- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स से निकलने वाला रेडिएशन कैंसर पैदा करने वाला एजेंट है जिससे कैंसर की समस्या हो सकती है। बच्चे विभिन्न प्रकार के कैंसर, जैसे— ल्यूकेमिया, त्वचा, थायरॉयड, स्तन और पेट के कैंसर से व्यापक रूप से प्रभावित हो सकते हैं।
- इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करने के कारण स्वास्थ्य-संबंधी प्रमुख समस्याओं में से एक पीठ दर्द है। बच्चे इस बात से अनजान हैं, लेकिन यह उन्हें धीरे-धीरे प्रभावित करता है। बच्चे लंबे समय तक लगातार इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करते हैं, जिसके परिणामस्वरूप पीठ दर्द होता है। इसलिए इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स का उपयोग करने वाले बच्चों के लिए एक प्रारंभिक चेतावनी हो सकती है कि गैजेट्स का उपयोग एक सीमा में करें। विद्यार्थियों के जीवन में अत्यधिक गैजेट्स के कई नकारात्मक प्रभाव हैं। यदि हम अपने छोटे बच्चों को अत्यधिक उपयोग से रोक नहीं सकते हैं तो इससे गंभीर मानसिक और स्वास्थ्य समस्याएँ हो सकती हैं। गैजेट्स का उपयोग करने के लिए विद्यार्थी कुछ समय खुद को आराम दें और फिर दूसरे काम पर वापस जाएँ। गैजेट्स का ज़्यादा इस्तेमाल न करें और उनका बुद्धिमानी से उपयोग करें।

© NCERT not to be republished

कोरोना काल में ऑनलाइन शिक्षण, शिक्षकों के लिए चुनौती

जब देश पहली बार लॉकडाउन में चला तो हर संभव तरीके से शिक्षक अपने विद्यार्थियों से जुड़े। यह शिक्षकों के लिए एक चुनौतीपूर्ण कार्य था, हालाँकि शिक्षक मोबाइल फोन के माध्यम से अपने विद्यार्थियों से जुड़े। शिक्षकों ने कोविड-19 महामारी संकट के बारे में सटीक जानकारी फैलाकर, मिथकों को दूर करने, सावधानी बरतने और घबराहट से न डरने की तरफ विद्यार्थियों का ध्यान केंद्रित किया। जिन विद्यार्थियों के परिवार ने आजीविका खो दी थी, उनके पास कोई बचत नहीं थी और भोजन की आवश्यकता थी। शिक्षकों ने सरकारी राहत उपायों, हेल्पलाइनों और व्यक्तिगत रूप से उन परिवारों को राशन और पका हुआ भोजन उपलब्ध कराने में मदद की। एक बार जब इन बुनियादी ज़रूरतों पर ध्यान दिया गया, तो शिक्षकों ने अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए जो भी डिजिटल साधन उपलब्ध थे, उनका उपयोग किया। कम-तकनीकी विद्यार्थियों तक पहुँचने के लिए, शिक्षकों ने आवाज़-संदेश, पाठ-संदेश और फोनकॉल का उपयोग किया। उच्च-तकनीकी विद्यार्थियों (यानी स्मार्टफोन के साथ) के लिए, शिक्षकों ने लंबे वीडियो भेजे और चर्चा के लिए व्हाट्सएप समूहों का उपयोग किया।

कोरोना महामारी में अधिगम हेतु चुनौतियाँ

इंटरनेट के लिए छत पर जाने को मजबूर विद्यार्थी— केरल की 20 साल की विद्यार्थी फोन और इंटरनेट की खराब कनेक्टिविटी से परेशान थी। उनके मुताबिक, "घर के आस-पास और पड़ोस में कई जगहों पर इंटरनेट इस्तेमाल करने की कोशिश की, लेकिन कहीं भी अच्छा सिग्नल नहीं मिला। जब भी फोन आता था, बात करने के लिए छत पर भागना पड़ता था।" गाँव में हाई-स्पीड ब्रॉडबैंड की सुविधा नहीं है। उन्होंने अलग-अलग सर्विस-प्रोवाइडर के मोबाइल कनेक्शन लिए, लेकिन किसी में भी स्पीड नहीं मिली। लॉकडाउन में पहले से ज़्यादा लोग फोन का इस्तेमाल कर रहे हैं, इसलिए सर्विस बदतर हुई है।

भारत में गाँव-गाँव तक ऑनलाइन शिक्षा में बाधाएँ— कोरोना महामारी के बाद हुए लॉकडाउन ने स्कूलों और कॉलेजों को भी ठप्प कर दिया, बच्चों की शिक्षा का एकमात्र रास्ता ऑनलाइन क्लास हो गया। लेकिन भारत के ग्रामीण इलाकों में ऑनलाइन पढ़ाई कितनी संभव है? लॉकडाउन के ऐलान के साथ ही जैसे देश में सारे काम अचानक रुक गए थे, वैसे ही देश के लगभग 32 करोड़ विद्यार्थियों के स्कूल-कॉलेज जाने पर भी रोक लग गई थी। सरकार ने ऐलान किया था कि स्कूल-कॉलेज उनके लिए ऑनलाइन शिक्षा का इंतजाम करें। लॉकडाउन की शुरुआत में बड़े शहरों के स्कूलों को ही ऑनलाइन शिक्षा शुरू करने में खासा वक्त लग गया। ये वो स्कूल थे, जिनके पास फंड की कमी नहीं थी। फिर भी बोर्ड एग्जाम समेत कई इम्तिहान रद्द हो गए। फिर सोचिए कि देश के गाँवों का क्या हाल होगा? क्या गाँव तक ऑनलाइन शिक्षा बिना किसी रुकावट के पहुँच सकती है? कोरोना लॉकडाउन में लगी बंदिशें तो खुल गई थीं। लेकिन 20 लाख से ज़्यादा कोरोना के मामलों के बीच जीवन अभी भी रुका हुआ था। स्कूलों के खुलने

© NCERT not to be republished

पर रोक थी। चार महीने बाद भी स्थिति वैसी ही थी और समस्याएँ अनेक। सरकार ने सरकारी स्कूलों को ऑनलाइन लाने के लिए कई तरह की मदद पहुँचाने के वादे किए, लेकिन कई बुनियादी समस्याएँ अभी भी वहीं की वहीं थीं।

गाँव में इंटरनेट से लेकर चार्जिंग तक की चुनौतियाँ— सरकार ने जब ऑनलाइन पढ़ाई के बारे में सोचा होगा तो अधिकारियों के दिमाग में ज़ूम और स्काइप जैसे वीडियो-कॉलिंग एप रहे होंगे। जहाँ बड़े शहरों में ये मुमकिन भी हो गया है, लेकिन गाँवों में अभी तक कनेक्टिविटी की जो हालत है उसमें कॉल ही अपने आप में एक मुसीबत है, ऊपर से कई बच्चों के घरों में स्मार्टफोन नहीं। कुछ राज्य सरकारों की तरफ से ये भी दावा किया गया था कि सरकारी स्कूलों में बच्चों को फोन बाँटे जाएँगे, पर अब तक ये इंतज़ाम हो नहीं पाए। ऐसे में सिर पर इस मुसीबत के बीच टीचर विद्यार्थियों को पढ़ाने के नायाब तरीके निकाल रहे थे। कई शिक्षक अपना वीडियो रिकॉर्ड कर व्हाट्सएप पर भेजते थे, तो कुछ फोन पर ही बच्चों को पढ़ाने की कोशिश में थे, लेकिन इसमें भी मुश्किलें कम नहीं थीं। झारखंड के तोर्पा जिले में एक सरकारी स्कूल में पढ़ाने वाली शिक्षिका का कहना है कि—

- पूरे स्कूल में पढ़ने वाले 115 बच्चों में से अब तक कुल 20–25 बच्चे ही ऑनलाइन क्लास का हिस्सा बन पा रहे हैं, क्योंकि ज़्यादातर के पास या तो फोन नहीं या इंटरनेट की कनेक्टिविटी इतनी खराब है कि बच्चों का ऑनलाइन आ पाना ही मुश्किल है।
- कभी टीचर ऑनलाइन आ पाते हैं तो एक या दो बच्चे ही होते हैं, सिर्फ़ कुछ बच्चों को पढ़ाने का क्या फ़ायदा जब बाकी बच्चों को अलग से पढ़ाना ही पड़ेगा। स्कूल के मुताबिक मार्च के महीने से ही उन्हें ये समस्या झेलनी पड़ रही थी, क्योंकि वहाँ सभी बच्चों का एक साथ क्लास के लिए उपस्थित हो पाना भी काफ़ी मुश्किल था।
- एक और बड़ी समस्या यह थी कि फोन होने पर भी बहुत से माता-पिता बच्चों की ऑनलाइन पढ़ाई को अहमियत नहीं दे रहे थे। स्कूल न जाने की स्थिति में कई बच्चे घरेलू काम या खेती में हाथ बँटाने में लग गए।
- पहले माता-पिता को बच्चों की पढ़ाई के लिए मनाना मुश्किल था, फिर जब पढ़ाई घर से ही होनी हो तो मुसीबत और बढ़ जाती है।
- ग्रामीण इलाकों में सरकारी दावों के बावजूद अभी भी हर एक बच्चे के पास स्मार्टफोन नहीं पहुँचे हैं। ज़्यादातर लोग फीचर फोन इस्तेमाल करते हैं और जिन गिने-चुने घरों में स्मार्टफोन हैं भी, तो वहाँ या तो पिता के साथ फोन सारा दिन घर के बाहर रहता है या फिर बड़े भाई के हाथ में। बच्चों की क्लास के टाइम के हिसाब से फोन मिल ही नहीं पाता।
- बच्चों को फोन के न होने पर भी ऑनलाइन लाने के लिए स्कूल की तरफ से कई कोशिशें की गईं, उन्होंने एक फोन के ज़रिए आस-पास के कई बच्चों को एक साथ लाने या पड़ोसी तक से कुछ देर पढ़ाई के लिए फोन देने की अपील भी की, लेकिन उसका भी कोई फ़ायदा नहीं हुआ।

© NCERT not to be republished

सिर्फ़ झारखंड ही नहीं, उत्तर प्रदेश में भी गाँवों में चल रही ऑनलाइन पढ़ाई का भी ऐसा ही हाल था। लखीमपुर खीरी जिले के जनबहादुर गाँव में एक स्कूल चलाने वाले शिक्षक कहते हैं कि—

- कुछ वक्त के लिए स्कूल में पढ़ाई बंद करवानी पड़ी, क्योंकि ऑनलाइन पढ़ाई में हिस्सा ले पा रहे बच्चों की संख्या वहाँ पढ़ने वाले बच्चों की संख्या की आधी से भी कम है।
- ये टीचरों के लिए भी मुसीबत है कि क्लास में अगर सिर्फ़ दो ही बच्चे ऑनलाइन आ पा रहे हैं, तो टीचर उनको अलग से पढ़ा के क्या करें? उनके स्कूल की एक महिला टीचर को अपने बच्चे को सिर्फ़ इसलिए रिश्तेदार के पास भेजना पड़ा, ताकि वो वहाँ फोन का इस्तेमाल कर ऑनलाइन पढ़ाई कर सके।
- छोटे शहरों में स्कूलों का मुख्य साधन बच्चों की फीस है, लेकिन कोरोना लॉकडाउन के दौरान स्कूलों को फीस भी नहीं मिल रही थी। स्कूल में कई महीनों से बच्चों के परिवारों द्वारा फीस नहीं जमा की गई, लेकिन उसका सबसे बड़ा कारण ये था कि वहाँ कई लोगों के रोज़गार ठप्प पड़ गए। कई मज़दूर जो बाहर से अपनी नौकरियाँ छोड़ कर आए थे उनके पास खाने के भी पैसे नहीं थे, फिर ऐसे में बच्चों की फीस कैसे जमा करते?

ऑनलाइन शिक्षण के साधन जुटाने हेतु जुगत—

सरकारी स्कूलों से दूर हुए बच्चे पढ़ाई के अलावा भी काफ़ी कुछ खो रहे हैं। पढ़ाई के साथ उनके स्कूल से मिलने वाला मिड-डे मील भी अब उनको खिलाने की जगह नाप के राशन की तरह भेजा जा रहा है। यही नहीं ऐसे कई परिवार हैं जिन्हें खाना खरीदने या फोन खरीदने के बीच चुनना पड़ गया। कुछ वक्त पहले हिमाचल प्रदेश से एक किसान के स्मार्टफोन खरीदने के लिए अपनी गाय बेचने की एक खबर आई थी जिसने सोशल मीडिया पर कई लोगों का ध्यान खींचा था। दरअसल पैसों की कमी की वजह से किसान को अपनी एकमात्र गाय बेचकर कर्ज़ चुकाने और बच्चों की पढ़ाई के लिए फोन खरीदने का कदम उठाना पड़ा, लेकिन कुलदीप अकेले ऐसे इंसान नहीं जिन्हें लॉकडाउन में ठप्प पड़े काम के बीच खाने और स्मार्टफोन में फोन को चुनना पड़ा हो। असम से भी एक खबर थी कि एक परिवार को बच्चे की ऑनलाइन शिक्षा के लिए अपने घर की गाय बेचनी पड़ी। यह इकलौती गाय ही उनके परिवार की आर्थिक आय का ज़रिया थी। ये वो मामले थे जो सामने आए, पर ऐसी न जाने कितनी ही कहानियाँ होंगी जो लॉकडाउन के बोझ तले दबा दी गईं।

ऑनलाइन कक्षाएँ एक अस्थाई इंतज़ाम से ज़्यादा कुछ नहीं—

देश के ज़्यादातर बड़े निजी स्कूलों ने ज़ूम कक्षाओं का सहारा लिया, लेकिन बच्चों के अभिभावकों का कहना है कि यह सब एक अस्थाई इंतज़ाम से ज़्यादा कुछ नहीं है। स्कूल जा रही दो बच्चियों के पिता ने बीबीसी को बताया, "मेरे बच्चे ज़ूम पर रेगुलर क्लास ले रहे हैं, लेकिन इस ऑनलाइन पढ़ाई-लिखाई का अनुभव बस ठीक ही है। हर बच्चे पर विशेष रूप से ध्यान देने की समस्या इसमें दिखाई दे रही है"। इस तरह की बात तकरीबन हर

© NCERT not to be republished

शख्स ने बताई है, चाहे वह शिक्षक हो, विद्यार्थी या पेरेंट्स इस महामारी ने कैंपस एक्सपीरियंस के पूरे आइडिया को ही बदल दिया है। शिक्षक बताते हैं, "पूरी संभावना है कि हमारे अगले सेमेस्टर के इम्तिहान ऑनलाइन हों। हमने विद्यार्थियों को कोर्स मैटेरियल ऑनलाइन दे दिया है। साइंस के विद्यार्थियों के लिए यह थोड़ा चुनौती भरा है, क्योंकि इनमें लैब में जाकर प्रयोग करने पड़ते हैं"। स्कूल और यूनिवर्सिटी ने यह भी विचार किया कि खुलने के बाद वे किस तरह से काम करेंगे।

स्कूलों की जगह नहीं ले सकती ऑनलाइन पढ़ाई—
कुछ अन्य स्कूलों ने विद्यार्थियों के बिल्डिंग या कक्षा में प्रवेश के दौरान उनका तापमान लेना अनिवार्य बना दिया है, लेकिन भारत जैसे सामाजिक और आर्थिक विविधता वाले देश में अलग-अलग विद्यार्थियों को देखते हुए शिक्षा का भविष्य शायद कुछ अलग रहेगा। ऑनलाइन शिक्षा भले ही एक नया ट्रेंड बनकर उभर रही है, लेकिन हाशिए पर मौजूद बच्चों के लिए किस तरह से इसे मुमकिन बनाया जाएगा? सीखने के अलावा, स्कूल में दोस्त बनते हैं, बातचीत होती है और मिड-डे मील भी मिलता है। ये सब चीज़ें अब खत्म हो गई हैं।

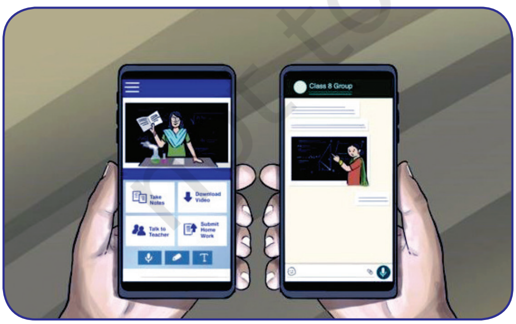

बड़े स्कूल कंप्यूटर पर कक्षाएँ ले रहे हैं, लेकिन बहुत से विद्यार्थियों के पास तो स्मार्टफोन तक नहीं है। बहुत से विद्यार्थी एक कमरे के घर में सारा दिन रहते-रहते परेशान हैं। लेकिन बड़ा सवाल यह है कि कोविड-19 के बाद की दुनिया में मोबाइल एप्लिकेशन-आधारित शिक्षण व्यवस्था भारत जैसे देश में कैसे बड़ी तादाद में बच्चों तक पहुँच सकती है जहाँ बहुत सारे लोगों के पास न तो स्मार्टफोन हैं और न ही इंटरनेट तक उनकी पहुँच है।

न केवल विद्यार्थी, बल्कि शिक्षकों के लिए भी है चुनौती—
शिक्षक नेटवर्क के ज़रिए डिजिटल खाई को पाटने की कोशिश कर रहे हैं। व्हाट्सएप के ज़रिए अधिकतम विद्यार्थियों तक पहुँचने की कोशिश कर रहे हैं। उन्हें वीडियो और ऑडियो ट्यूटोरियल भेज रहे हैं, लेकिन गरीब परिवारों से आने वाले अधिकतर बच्चों के माता-पिता काम पर चले जाते हैं और फोन अपने साथ ले जाते हैं। ऐसे बच्चे केवल शाम के वक्त ही फोन पर ऑनलाइन ट्यूटोरियल पढ़ पाते हैं। शिक्षक भी ऑडियो और वीडियो का इस्तेमाल करना सीख रहे हैं। यह काफ़ी थकाऊ है, लेकिन हमारे पास दूसरा कोई विकल्प नहीं है।

कोविड-19 के बाद बच्चों की पढ़ाई कैसे हो

कोविड-19 ने उनके लिए स्थितियाँ पूरी तरह से बदल दी हैं। कोरोना वायरस फैलने के बाद डिजिटल साधनों तक पहुँच में बड़ी असमानता भारत में शिक्षा के लिए एक बड़ी चुनौती बन गई है, लेकिन अधिकांश द्वारा माना जाने लगा कि इलेक्ट्रॉनिक

© NCERT not to be republished

गैजेट्स के माध्यम से ही भारत की शिक्षा उन्हें उसी स्तर पर पहुँचाने की ओर अग्रसर है जिससे भारत एक बार स्वयं को विश्व गुरु के रूप में स्थापित कर सकता है। ऐसे में अब सरकारों के लिए ऐसे पाठ्यक्रम को राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा में एकीकृत करने का समय आ गया है, जिसमें विद्यार्थियों द्वारा सामाजिक और राजनीतिक चेतना का विकास शिक्षा का एक प्रमुख लक्ष्य होना चाहिए और यह कि समानता और मूल लोकतांत्रिक मूल्यों का पाठ उतना ही दिया जाना चाहिए।

शैक्षिक नीतियों में आमूल-चूल बदलाव की ज़रूरत

कोरोना वायरस ने शिक्षाविदों को नए सिरे से सोचने और मौजूदा शैक्षिक नीतियों को फिर से तैयार करने के लिए मजबूर कर दिया है। विकसित देशों के मुकाबले भारत के हालात बिल्कुल जुदा है। भारत की अगर बात करें तो यहाँ कई स्कूलों और विश्वविद्यालयों ने ऑनलाइन शिक्षा को अपनाया है, लेकिन यहाँ शिक्षाविदों और विद्यार्थियों का इसे लेकर मिलाजुला अनुभव है। शिक्षाविद कहते हैं, "ऑनलाइन पढ़ाई की तरफ शिफ्ट होना ज़्यादातर तो आसान रहा था। लॉकडाउन छुट्टियों के दौरान हुआ और इसके तुरंत बाद हम ऑनलाइन पर शिफ्ट हो गए। सभी कक्षाएँ या तो गूगल मीट या ज़ूम पर हो रही हैं, लेकिन इसके साथ ही कुछ विद्यार्थी ऐसे भी हैं जिन्हें इंटरनेट की दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है। ये विद्यार्थी अमूमन दूर-दराज़ के इलाकों के हैं।"

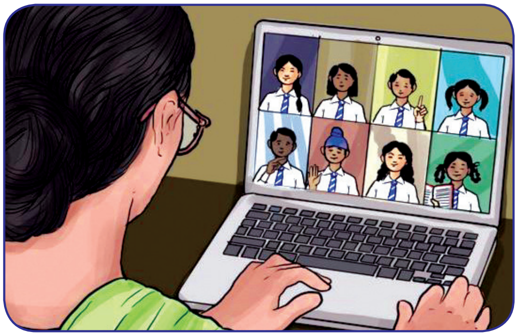

इनोवेशन की ज़रूरत

चुनिंदा शहरी स्कूलों के ऑनलाइन क्लासेज कराने और इनकी पहुँच सीमित होने के चलते शिक्षाविदों को हर तरह के आर्थिक-सामाजिक पृष्ठभूमि वाले बच्चों के लिए पढ़ाई के इनोवेटिव तरीकों को ढूँढने की चुनौती पैदा हो गई है। भले ही यह ऑनलाइन शिक्षा का दौर है, लेकिन यह स्कूलों की जगह कभी नहीं ले पाएगी।

स्कूलों को खुद को प्रासंगिक बनाने के तरीके ढूँढने होंगे

कोविड-19 के बाद की दुनिया में स्कूलों को प्रासंगिक बनाए रखने के लिए खुद को पूरी तरह से दोबारा खड़ा करना पड़ेगा। ऑनलाइन शिक्षा अब एक हकीकत है। ऐसे में स्कूलों को यह सोचना पड़ेगा कि वे किस तरह से बच्चे की ज़िंदगी में अपना योगदान दे सकते हैं। इस समय देश में इंटरनेट और स्मार्टफोन की सुविधा का विस्तार और लैपटॉप या टैबलेट हर विद्यार्थी को देने की व्यवस्था पर विचार करने की ज़रूरत है। शिक्षकों को भी डिजिटल शिक्षा के लिए तैयार करना होगा और उनकी ट्रेनिंग करानी होगी। डिजिटल एजुकेशन

© NCERT not to be republished

के लिए सिलेबस भी बदलना होगा और नए टीचिंग मटेरियल तैयार करने होंगे। सरकार की नई शिक्षा नीति में भी ऑनलाइन पढ़ाई पर ज़ोर है, तो माना जाना चाहिए जल्द ही हमें शिक्षा में ये बुनियादी बदलाव देखने को मिलेंगे।

निष्कर्ष

कोरोना महामारी के समय में विद्यालय प्रशासन एवं भारत सरकार के सयुंक्त प्रयासों से न केवल विद्यार्थी, महामारी के भयभीत वातावरण से दूर रह सकें, अपितु उन्हें विभिन्न इलेक्ट्रॉनिक गैजेट्स के माध्यम से नया सीखने का अवसर मिले, लेकिन इसमें कोई संदेह नहीं की यह लाभ दूर-दराज़ के विद्यार्थियों को नहीं मिल पाया है। आज जबकि कोरोना काल समाप्ति की ओर है, विद्यालय प्रशासन, अभिवावक एवं भारत सरकार द्वारा संयुक्त प्रयास करने होंगे कि पूर्व की तरह नियमित शिक्षा प्रणाली को वापस ला सकें तथा ऑनलाइन पठन-पाठन को सहायक के रूप में प्रयोग में लाया जा सके।

संदर्भ

इंटरनेट की राह देख रहे इन बच्चों के लिए घर पहुँचा स्कूल— https://hindi.news18.com/news/career/no-internet-school-comes-home-in-rural-sikkim-3211982.html

कोरोना महामारी के दौर में इंटरनेट नहीं होना कितनी बड़ी मुसीबत? https://www.bbc.com/hindi/india-53196019

कोरोना वायरस का शिक्षा पर प्रभाव— https://www.researchgate.net/publication/358164473_korona_vayarasa_ka_siksa_para_prabhava

कोविड-19 के बाद आपके बच्चों की पढ़ाई कैसे हो पाएगी? https://www.bbc.com/hindi/india-53194793

न मोबाइल, न इंटरनेट— ऑनलाइन क्लास में कैसे पढ़ें बच्चे— https://www.bbc.com/hindi/india-53875570

बच्चों पर पड़ने वाले गैजेट्स के बुरे प्रभाव— https://www.bhaskar.com/news/LIF-LEI-9-harmful-effects-of-gadgets-on-children-4872529-PHO.html

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को पूरा करने के लिए, पारंपरिक रूप से इस क्षेत्र को प्रभावित करने वाली चुनौतियों का समाधान किया जाना चाहिए। https://www.thehindubusinessline.com/opinion/columns/can-nep-make-india-a-knowledge-hub/article32346401.ece

साभार, 2020–2021. *अमर उजाला न्यूज़.* उत्तर प्रदेश.

© NCERT not to be republished

हिंदी भाषा और भविष्य की राह

अन्नू इंदौरा*

हिंदी भाषा भारत राष्ट्र की भाषा है। यह भाषा भूगोल की दृष्टि से भारत के एक-तिहाई से भी अधिक भाग के लोगों द्वारा बोली, समझी और पढ़ी जाती है। यही नहीं बल्कि भारत जैसे बहुभाषी देश में हिंदी भाषा एकमात्र ऐसी भाषा है जो प्रारंभ से ही भारत देश में चर्चा और विमर्शों की भाषा रही है। वास्तव में प्रत्येक भाषा-भाषी का अपने क्षेत्र की भाषा के प्रति अपने झुकाव को ज़ाहिर करना स्वाभाविक भी है, किंतु देश में हिंदी भाषा के ऐतिहासिक भूमिका और महत्व को देखते हुए उसकी केंद्रीय स्थिति से इनकार नहीं किया जा सकता है। वर्तमान संदर्भ में ही यदि बात की जाए तो जो लोग आज के युग को अंग्रेज़ी प्रधान युग कहते हैं, उन्हें हिंदी भाषा की वास्तविक स्थिति के विषय में भी जानना आवश्यक है। किसी भाषा की स्थिति को जानने का माध्यम उसे बोलने, समझने वाले लोगों की संख्या के साथ उसमें अपना दैनिक, शैक्षिक और व्यावसायिक काम करने वालों की संख्या भी होती है। हिंदी भाषा पर चूँकि वर्षों से वाद-विवाद व संवाद सबसे अधिक होता रहा है, इसलिए हिंदी भाषा की रोज़गारपरक संभावनाओं की पड़ताल करना अपने आप में आवश्यक ही नहीं, बल्कि एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। यह प्रश्न उठने स्वभाविक है कि आज यह हिंदी भाषा हमें क्या दे रही है, इसके बिना हम क्या खो देंगे, यह कैसे विश्व के देशों में भारत को एक अलग पहचान दिलाती है आदि प्रश्नों के उत्तर हमें हिंदी भाषा के महत्व और प्रयोग को समझने में सहायक होंगे।

वर्षों से भारत देश न केवल विश्वगुरु है, बल्कि यह विश्व का आध्यात्मिक गुरु भी रहा है। आज भारत के अनेकों धार्मिक स्थलों पर दुनिया के विभिन्न देशों के लाखों विदेशियों को देखा जा सकता है, जो भारत की पुण्यभूमि पर अपनी आध्यात्मिक उन्नति और शांति प्राप्ति के उद्देश्य से आकर शरण लेते हैं और संस्कृत तथा हिंदी भाषा को सहज ही सीख लेते हैं। आध्यात्मिकता की क्षुधा लिए इन विभिन्न

**शोधार्थी व सहायक प्रोफेसर* (हिंदी), राजकीय कन्या महाविद्यालय, गुरुग्राम, हरियाणा

© NCERT not to be republished

विदेशी लोगों ने भी हिंदी भाषा के वैश्विक विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। यूरोपीय विद्वान फादर कामिल बुल्के हिंदी प्रेम के कारण बैल्जियम की नागरिकता त्याग कर भारत के नागरिक बने तथा जीवन पर्यंत भारत में ही रहे। यह हिंदी के ऐतिहासिक वैश्विक प्रभाव का मात्र एक प्रमाण है। ऐसे हज़ारों उदाहरण हमारे पास हैं जो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी भाषा को पुष्पित और पल्लवित करने में अनेक भारतीय और गैर-भारतीय लोगों के प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष सराहनीय योगदान को दिखाते हैं और विश्व के विभिन्न देशों में हिंदी भाषा की गहरी जड़ें होने के प्रमाण को साबित होते हैं।

एक समाज में किसी भी भाषा के अस्तित्व की अक्षुण्णता के लिए उस भाषा का रोज़गारपरक होना अत्यंत आवश्यक है। इस संदर्भ में हिंदी भाषा की रोज़गारपरक संभावनाओं का क्षितिज अत्यंत विस्तृत है। वास्तव में एक जीवित भाषा वही होती है जो स्वयं को समाज, समय की परिस्थितियों के अनुसार गति दे सके। इस दृष्टि से हिंदी भाषा की स्थिति और उसमें रोज़गार का अवलोकन किया जाए तो हिंदी भाषा का भविष्य उज्जवल है। हिंदी भाषा का विश्व की तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा बनने का एक कारण यह भी है कि आज न केवल हिंदी भाषा में ज्ञान प्राप्ति के माध्यम बढ़ रहे हैं, बल्कि उस ज्ञान का प्रयोग कर सकने के लिए मंच भी मिल रहे हैं। जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में आज हिंदी भाषा का प्रयोग और उपयोग दोनों बढे हैं। प्रस्तुत लेख में आगे उन महत्वपूर्ण क्षेत्रों की चर्चा की गई है जिसने हिंदी भाषा के पंखों में नई जान डाल दी है। यहाँ हिंदी भाषा के महत्व के साथ क्रमवार रूप से उन क्षेत्रों की चर्चा की गई है, जिसमें हिंदी भाषा प्रयोक्ता अपने लिए रोज़गार की संभावनाओं को देखते हुए अपने भविष्य को आकार दे सकते हैं—

अनुवाद— सर्वप्रमुख हिंदी भाषा में रोज़गार की संभावनाओं को अनुवाद के क्षेत्र में देखा जा सकता है। आज वैश्वीकरण के बहुसांस्कृतिक परिदृश्य में विश्व की विभिन्न भाषाओं में उपस्थित ज्ञान संपदा तक अपनी पहुँच को सुनिश्चित करने के लिए अनुवाद का क्षेत्र महत्वपूर्ण है। आज विश्व के प्रसिद्ध रचनाकारों की पुस्तकें हों या वैज्ञानिक तकनीकी विषयों की पुस्तकें या प्रेरणादायक या अध्यात्मिक पुस्तकों की विषयवस्तु सभी कुछ का अनुवाद हिंदी भाषा में आज तेज़ी से हो रहा है। अत: अनुवाद का क्षेत्र अत्यंत संभावनाओं से भरा क्षेत्र है। हिंदी में वैज्ञानिक तकनीकी विषयों की जानकारी आम लोगों तक पहुँचाने के लिए इनसे संबंधित विषयवस्तु के अनुवाद की अपार संभावनाएँ आज मौजूद हैं। ज़रूरत है कि विषय का गहन ज्ञान और भाषा पर मज़बूत पकड़ हो।

प्रकाशन संस्था— आज हिंदी भाषा के पाठकों की संख्या पहले की अपेक्षा बढ़ी है। ऐसे में सृजनात्मक, रचनात्मक लेखन में रुचि रखने वाले लोग कविता, कहानी, पुस्तकें लिखकर लेखक के रूप में स्वयं को स्थापित कर सकते हैं। साथ ही अन्य लोगों द्वारा हिंदी भाषा में लिखी जाने वाली प्रकाशनाधीन पुस्तकों की प्रूफरीडिंग एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, जहाँ पुस्तक को उसके अंतिम रूप में आने तक के सफर में योगदान दिया जा सकता है।

© NCERT not to be republished

शिक्षा— शिक्षा के क्षेत्र में भी हिंदी भाषा का प्रयोग और अवसर बढे हैं। शिक्षा के प्राथमिक, माध्यमिक, उच्च स्तर के लिए पाठ्यपुस्तक, अन्य सहायक पाठ्यसामग्री और अभ्यास-कार्य पुस्तक निर्माण का कार्य किया जा सकता है।

अध्यापन— हिंदी भाषा में शोध के साथ हिंदी भाषा और साहित्य शिक्षण के क्षेत्र में आज अपार संभावनाएँ हैं। इसी के साथ कोरोना काल के कारण हम देखते हैं कि ऑनलाइन शिक्षण भी हमारी ज़रूरत के रूप में उभरकर आया है। अत: यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है।

विदेशी विश्वविद्यालय में शिक्षण कार्य— आज विश्व के लगभग 150 विश्वविद्यालयों में हिंदी विभाग की स्थापना की जा चुकी है। यह इस बात का प्रमाण है कि आज के तकनीकी और अंग्रेज़ी प्रधान युग में भी हिंदी भाषा ने अपनी प्रासंगिकता और आवश्यकता को कम नहीं होने दिया है। विश्व में हिंदी के प्रसार में इन विदेशी विश्वविद्यालयों के हिंदी प्रेम और ज़रूरत ने भी हिंदी भाषा में रोज़गार के अवसरों को जीवंत बनाया हुआ है।

पत्रकारिता— पत्रकारिता के अंतर्गत विभिन्न न्यूज एजेंसीस में हिंदी भाषा में विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों की अच्छी जानकारी के साथ हिंदी भाषा की अच्छी व्याकरणिक तथा संदर्भगत समझ रखने वाले लोगों की हमेशा से ही आवश्यकता रही है। अत: इस क्षेत्र में संपादक, पत्रकार आदि के रूप में अपना कार्य प्रारंभ किया जा सकता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया— इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का कार्यक्षेत्र आज निरंतर विस्तृत होता जा रहा है जिसने इस क्षेत्र में पहले से बहुत अधिक *नवीन कार्य श्रेणियों* को विकसित किया है। न्यू मीडिया के रूप में आज सोशल मीडिया के रूप में यूट्यूब, फेसबुक, ट्विटर, पॉडकास्ट आदि में हिंदी भाषा के लोगों को अपनी प्रतिभा दिखाने के अनगिनत अवसर प्रदान कर रहे हैं। इन मंचों पर नित्य नवीन विषयवस्तु को बनाने और लिखने की चुनौती रोज़गार के नवीन आयामों को खोलती है। आज इन माध्यमों की विषयवस्तु को देखने, पढ़ने, सुनने वाले दर्शकों और पाठकों की संख्या लाखों में बढ़ती जा रही है।

फिल्म जगत— फिल्म की दुनिया इस संदर्भ में एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है जहाँ पटकथा लेखन, संवाद लेखन, डबिंग के क्षेत्र में कुशल हिंदी भाषी लोगों के लिए अवसर हैं।

विज्ञापन— विज्ञापन का क्षेत्र हिंदी भाषी लोगों के लिए अत्यंत संभावनाओं से भरा क्षेत्र है। आज हिंदी विश्व की तीसरी बोली जाने वाली भाषा बन चुकी है, ऐसे में विभिन्न राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय कंपनियां अपने उत्पादों को अधिसंख्य ग्राहकों तक कम समय में पहुँचाने के लिए जन-भाषा हिंदी को ही प्राथमिकता दे रही हैं। अत: इस संदर्भ में कंपनियों को उत्पाद के लिए आकर्षक स्लोगन लेखन की आवश्यकता सदा रहती है। इस क्षेत्र में डिजिटल मार्केटिंग में भी हिंदी भाषा प्रयोक्ताओं के लिए बहुत अवसर हैं। जहाँ भाषा कौशल के साथ अच्छे तकनीकी ज्ञान की भी दरकार रहती है।

बैंक— सभी बैंकों में चाहे वे सरकारी हों, गैर-सरकारी या अर्द्ध सरकारी, उनमें एक हिंदी भाषा अधिकारी की नियुक्ति अनिवार्य है, ताकि बैंक समय-समय पर

© NCERT not to be republished

ग्राहक से संबंधित सभी आवश्यक सूचनाओं को जन-भाषा में उन तक पहुँचा सके। अत: बैंकों में हिंदी भाषीयों के लिए काफ़ी अवसर हैं।

प्रशासनिक सेवा— आज लगभग सभी उच्च सरकारी पदों की नियुक्ति के लिए होने वाली परीक्षाओं में हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाकर अपनी सेवाएँ हिंदी भाषा के माध्यम से देने के अवसर हैं। अत: प्रशासनिक सेवाओं में जाकर अपने भविष्य की राह तय की जा सकती है। इसी क्रम में देख सकते हैं कि भारत सरकार के सभी विभागों, कार्यालयों में राजभाषा अधिकारी जैसे पदों की अनिवार्यता हिंदी में भविष्य की राह को व्यापक बनाती है।

हिंदी वेबसाइट्स— आज हिंदी में और हिंदी साहित्य से संबंधित बहुत-सी साहित्यिक वेबसाइट्स बनाई जा चुकी हैं। जो हिंदी में अच्छी गुणवत्तापूर्ण और प्रमाणिक जानकारी उपलब्ध करा रही हैं। अत: ऐसी साइट्स के लिए विषयवस्तु लेखन का कार्य एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है। हिंदी भाषी पाठकों को संबोधित करने के उद्देश्य से बहुत-सी ई-पत्रिकाएँ भी अब अस्तित्व में आ चुकी हैं जिनके लिए नियमित रूप से विषयवस्तु लेखन का कार्य किया जा सकता है।

पर्यटन— भारतीय समाज, संस्कृति की विविधता और अनूठेपन के प्रति दुनिया के लोगों की आरंभ से ही एक स्वाभाविक जिज्ञासा और रुचि रही है। ऐसे में विदेशी लोगों को भारत देश के वैविध्यपूर्ण वैभव से परिचय कराने का काम विदेशी भाषा के साथ हिंदी भाषा जानने वाले लोग अधिक अच्छे से कर सकते हैं, क्योंकि अपनी भाषा से जुड़ने का अर्थ है अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ना और अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने का सबसे सशक्त माध्यम अपनी भाषा ही हो सकती है।

ब्लॉग लेखन— सृजनात्मक लेखन का एक प्रकार ब्लॉग लेखन है। आज हिंदी भाषा में बहुत से ब्लॉग बनाए जा चुके हैं जो अत्यंत महत्वपूर्ण और गुणवत्तापूर्ण जानकारी देने में सक्षम हैं। कुछ ब्लॉग तथ्य और जानकारी-आधारित सामग्री उपलब्ध करा रहे हैं तो कुछ मनोरंजनात्मक उद्देश्य के साथ लेखक की स्वयं की रुचि से संबंधित जानकारी उपलब्ध करा रहे हैं। विभिन्न प्रकार के फूड ब्लोग्स और यात्रा अनुभवों पर आधारित ब्लोग्स इसके उदाहरण हैं। अत: सृजनात्मक लेखन के क्षेत्र में हिंदी भाषियों के लिए अपार अवसर हैं जहाँ वे नित्य नवीन विषयों पर अपने नवोन्मेषी विचारों को लिखकर दुनिया के सामने रख सकते हैं।

वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग— हिंदी भाषा के ज्ञान के प्रसार के लिए सक्रिय वैज्ञानिक और तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो के कार्यलयों में कार्य किया जा सकता है। शब्दावलियों के निर्माण और विकास के साथ-साथ वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग द्वारा विश्वविद्यालय स्तर पर ग्रंथ निर्माण योजना की भी शुरुआत की गई है। अत: इस प्रकार की योजनाओं में कार्य कर नया अनुभव प्राप्त किया जा सकता है। वास्तव में आज वैज्ञानिक और तकनीकी के क्षेत्र में ही सबसे अधिक हिंदी भाषा के जानकार लोगों की आवश्यकता है, ताकि तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान को भी हिंदी के एक पाठक वर्ग के लिए सुलभ बनाया जा सके।

© NCERT not to be republished

इसके अतिरिक्त कॉल सेंटर, रेडियों जॉकी जैसे महत्वपूर्ण क्षेत्र हैं जिसमें हिंदी भाषी लोग अपना अच्छा भविष्य बना सकते हैं।

इस प्रकार हम देखते हैं कि अपनी वैश्विक पहचान बना चुकी हिंदी भाषा को माध्यम के रूप में अपनाते हुए हम स्वावलंबन के विभिन्न क्षेत्रों में अपना भविष्य गढ़ सकते हैं। आज के तेज़ी से बदलते दौर में ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है जहाँ हिंदी भाषी लोगों ने अपनी प्रतिभा द्वारा सकारात्मक हस्तक्षेप न किया हो ऐसे में हमें ज़रूरत है कि हम हिंदी भाषा को लेकर फैले भ्रम से बाहर निकलें और अपनी स्व-भाषा के महत्व को समझते हुए न केवल शिक्षा के क्षेत्र में सीखने-सिखाने और ज्ञान अर्जन के माध्यम के रूप में हिंदी भाषा को अपनाएँ, बल्कि रोज़गार के विभिन्न क्षेत्रों में उभरती हिंदी की नई ज़मीन से भी खुद को जोड़ते हुए देश के प्रति अपने नागरिक उत्तरदायित्व को निभाने का प्रयास करें।

आज धर्म, संगीत. साहित्य, ज्ञान, विज्ञान, तकनीक, अनुवाद, लेखन, प्रकाशन, प्रशासनिक पद, सिनेमा, विज्ञापन, व्यापार, अर्थव्यवस्था, दर्शन, चिंतन, शिक्षण और शोध आदि ऐसा कोई क्षेत्र नहीं जहाँ हिंदी भाषा का प्रयोग और प्रसार ना हो रहा हो। मुख्य बात नज़रिए की है, क्योंकि भाषा चाहे कोई भी हो हमारी पहचान का पहला साधन होती है। ऐसे में जहाँ तक हिंदी भाषा की बात है तो इसके विकास की ऐतिहासिक कड़ियों को समझते हुए उसे माध्यम के रूप में अपनाकर हिंदी भाषा के बोलने वाले अपनी स्वयं की संस्कृति, वर्तमान स्थिति और पहचान को मज़बूती प्रदान कर सकते हैं। विश्व पटल पर हिंदी भाषा के प्रसार और उज्ज्वल भविष्य का कारण हिंदी की अपनी आंतरिक शक्ति, गुणवत्ता, सरलता एवं लोकप्रियता ही है। इसे भारत में भी कम नहीं होने देना हैं और यह दायित्व हिंदी भाषी लोगों पर अधिक है, क्योंकि गैर-हिंदी भाषियों द्वारा हिंदी के प्रचार और विस्तार के अनेकों उदहारण हमारे पास मौजूद हैं (आज कई फिल्मी हस्तियाँ और अंग्रेज़ी माध्यम के लोग हिंदी में पुस्तकें प्रकाशित या अनुवाद करवा रहे हैं, अपने यूट्यूब चैनल आदि बना रहे हैं, हिंदी भाषा सीख रहे हैं), किंतु हिंदी भाषियों को भी अपनी ओर से इस दिशा में अतिरिक्त और आवश्यक प्रयास करने की आवश्यकता है और आचार्य विनोबा जी का यह संकल्प पूरा करने में अपना योगदान देने की आवश्यकता है, जिसे उन्होंने इस वाक्य के द्वारा अभिव्यक्त किया था— 'हिंदी को गंगा नहीं, समुद्र बनाना होगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में हिंदी भाषा के महत्व और स्थान को देखते हुए भी हम आशांवित हो सकते हैं, क्योंकि जैसे ही किसी भाषा को देश की शिक्षा नीतियों (निःसंदेह पहले की शिक्षा नीतियों में भी हिंदी भाषा पर बात की गई थी) में अपना वास्तविक स्थान मिलता है तो भविष्य में संबंधित भाषा में रोज़गार के नवीन क्षेत्रों के सृजन की संभावनाएँ भी प्रबल होती हैं। इस संदर्भ में हिंदी भाषा के शिक्षण से जुड़े शिक्षकों की भूमिका और महत्वपूर्ण बन जाती है कि वे अपनी पेशेगत प्रतिबद्धताओं के प्रति पूरी ईमानदारी बरतें और हिंदी भाषा के शिक्षण के प्रति अपनी विषयगत मजबूरी तथा उदासीनता के रवैए को त्यागकर हिंदी भाषा शिक्षण की नवीन रणनीतियों को अपनाएँ। यह तब ही संभव है जब एक हिंदी भाषा

© NCERT not to be republished

शिक्षक स्वयं हिंदी भाषा के महत्व और भूमिका से परिचित हो, क्योंकि किसी भी भाषा को सीखना मात्र उसकी व्याकरणिक कोटियों पर महारत हासिल करने तक सीमित नहीं होता है, बल्कि इसमें संबंधित भाषा के ऐतिहासिक योगदान के साथ उनकी साहित्यिक जड़ों से जुड़कर वर्तमान में उसकी नई भूमिका और प्रयोग क्षेत्रों की ज़मीन तलाशना भी शामिल होता है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप में कह सकते हैं कि जो भाषा रोज़गारोन्मुख नहीं होगी, वह निश्चित ही संकुचित हो जाएगी। इस दृष्टि से आज हिंदी भाषा में रोज़गार की अपार संभावनाएँ हैं। हिंदी ने अपने रोज़गारपरक रूप के बल पर न केवल देशीय स्तर पर, बल्कि वैश्विक स्तर पर अपना एक विस्तृत बाज़ार खड़ाकर अपने महत्व को स्थापित किया है। वैश्विक यथार्थ को समझने के लिए आज हिंदी भाषा किसी से पीछे नहीं है। आज विभिन्न क्षेत्रों में हिंदी भाषा की स्वीकृति और प्रयुक्ति बढ़ी है और अब लोगों को कई क्षेत्रों में हिंदी में रोज़गार मिल रहा है। वास्तव में हिंदी एक ऐसी भाषा है जिसे स्वावलंबन की भाषा कहा जा सकता है। अपनी इसी विशेषता के कारण हिंदी भाषा के माध्यम से ज्ञान के विस्तार और विकास का अनंत क्रम निरंतर जारी है और आगे भी रहेगा।

© NCERT not to be republished

संदर्भ

दुबे, अभय कुमार. 2014. *प्रतिमान (समय, समाज, संस्कृति, जुलाई–दिसंबर) पत्रिका*, वाणी प्रकाशन.

पाण्डेय, नंदकिशोर. 2016. *गवेषणा (जनवरी–जून) पत्रिका*. केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा.

मदान, अमन. 2018. *शिक्षा और आधुनिकता*. एकलव्य, भोपाल.

मिश्र, गिरीश्वर. 2015. *बहुवचन*. महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र.

शर्मा, गोविन्द प्रसाद. 2022. *शिक्षा और समाज*. राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली.

7

छात्राध्यापकों में वृत्तिक कौशल विकास हेतु एक नवीन प्रयास
एकीकृत शिक्षण अभ्यास

दीपक कुमार*
शिल्पी कुमारी**

प्रस्तुत शोध आलेख में बी.एड. छात्राध्यापकों के कौशल विकास में एकीकृत शिक्षण अभ्यास की आवश्यकता पर बल दिया गया है। वर्तमान समय में सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए लगभग सभी अध्यापक शिक्षा संस्थानों में सूक्ष्म शिक्षण तकनीक को अपनाया जाता है। इस प्रशिक्षण तकनीक में एक आभासी कक्षा वातावरण में एक समय में केवल एक शिक्षण कौशल का अभ्यास कराया जाता है, जबकि वास्तविक कक्षा वातावरण में शिक्षण-अधिगम के दौरान अनेक कौशल एक साथ प्रयोग होते हैं, जिसमें मृदु कौशल भी शामिल होते हैं और इसके साथ-साथ अध्यापकों को विद्यार्थियों के अधिगम कौशल पर भी ध्यान देने की आवश्यकता होती है, इसलिए वास्तविक कक्षा वातावरण में अध्यापकों को प्रशिक्षण के समय अभ्यास किए गए कौशलों का प्रयोग करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। प्रस्तुत शोध आलेख में सूक्ष्म शिक्षण, दीर्घ शिक्षण (Mega teaching) एवं एकीकृत शिक्षण के विषय में चर्चा करते हुए एकीकृत शिक्षण अभ्यास की आवश्यकता की ओर अध्यापक शिक्षा के विद्वानों का ध्यान आकृष्ट करने की कोशिश की गई है।

"शिक्षा के गुणात्मक सुधार के लिए यह अनिवार्य है कि अध्यापकों में वृत्तिक शिक्षण का एक समुचित कार्यक्रम हो" (कोठारी आयोग, 1964–1966)। शिक्षण का सामान्य अर्थ है अध्यापक व विद्यार्थी के बीच परस्पर अंतर्क्रिया। हम सभी जानते हैं कि किसी कार्य को सही ढँग से करने के लिए उस कार्य के उपयुक्त कौशल में दक्ष होना चाहिए जिससे उस कार्य को बेहतर ढँग से किया जा सके। अध्यापक अपने विद्यार्थियों को सर्वोत्तम ज्ञान देने के लिए विभिन्न विधियों का प्रयोग करते हैं। वे विद्यार्थियों में संप्रत्यय की समझ विकसित करने तथा उन्हें प्रोत्साहित करने की पूरी कोशिश करते हैं अर्थात हम कह सकते हैं कि अध्यापक अपने शिक्षण को व्यावहारिक स्वरूप प्रदान करने के लिए अनेक कौशलों का प्रयोग करते हैं।

किसी कार्य (जैसे— अध्यापन) को करने में एक कौशल के साथ-साथ अन्य कौशल भी स्वाभाविक

* *शोधार्थी,* शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001
** *सहायक प्राध्यापिका,* शिक्षा विभाग, शिक्षा विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा, महाराष्ट्र 442 001

© NCERT not to be republished

रूप से जुड़े होते हैं, जैसे— कक्षा में शिक्षण-अधिगम के दौरान विषयवस्तु की व्याख्या करने में व्याख्या कौशल के साथ उद्दीपन परिवर्तन और संप्रेषण जैसे अनेक कौशलों का स्वतः ही प्रयोग होता रहता है। शिक्षण-अधिगम के समय केवल शिक्षण/कठोर कौशल का ही उपयोग नहीं होता, बल्कि इन शिक्षण/कठोर कौशलों (व्याख्या कौशल, उद्दीपन-परिवर्तन कौशल, दृष्टांत कौशल इत्यादि) के साथ-साथ मृदु कौशलों का भी उपयोग स्वाभाविक रूप से होता रहता है, परंतु अध्यापक शिक्षा संस्थानों में इन मृदु कौशलों के विकास या अभ्यास पर अपेक्षाकृत बहुत कम ध्यान दिया जाता है। परंपरागत अभ्यास शिक्षण कार्यक्रम में मुख्य ज़ोर छात्राध्यापकों को विषयवस्तु की जानकारी संप्रेषित करने के कौशल पर होता है (नाइक, 1986)। ज्ञातव्य है कि वर्तमान समय में अध्यापक शिक्षा संस्थानों में बी.एड. छात्राध्यापकों के वृत्तिक कौशल विकास/अभ्यास के लिए सूक्ष्म शिक्षण विधि का उपयोग किया जाता है।

सूक्ष्म शिक्षण

सूक्ष्म शिक्षण, सेवा-पूर्व अध्यापकों के कौशल विकास से संबंधित एक ऐसी तकनीक है जो वर्तमान समय में लगभग पूरी दुनिया में प्रचलित है। इस तकनीक द्वारा छात्राध्यापकों (सेवा-पूर्व अध्यापक) में शिक्षण कौशल का विकास करने का प्रयास किया जाता है। "यह शिक्षक-प्रशिक्षण की एक तकनीक है जिसमें प्रशिक्षणार्थी एक विषय इकाई को, एक शिक्षण कौशल का प्रयोग करके, छात्रों की एक छोटी संख्या को अल्प-अवधि तक पढ़ाता है" (शरतेन्दु, 2018, पृ. 3) अर्थात सूक्ष्म शिक्षण तकनीक में एक समय में केवल एक ही कौशल का प्रशिक्षण प्रदान किया जाता है तथा इसका अभ्यास एकल अवधारणा को स्पष्ट करने हेतु किया जाता है। भावी अध्यापकों को प्रभावी बनाने के लिए एक पद्धति के रूप में सूक्ष्म शिक्षण के कौशलों का अभ्यास कराया जाता है (अंबिली, 2013)। सूक्ष्म शिक्षण वास्तविक शिक्षण की जटिलताओं को कम करता है। सूक्ष्म शिक्षण का अभ्यास काल्पनिक वातावरण में साथी-समूह (सहपाठी) के साथ किया जाता है जिससे अभ्यासकर्ता को वास्तविक परिस्थिति का ज्ञान बहुत कम रहता है। इस प्रकार से छात्राध्यापकों (सेवा-पूर्व अध्यापक) के शिक्षण-अधिगम व्यवहार में शिक्षण अभ्यास द्वारा सुधार लाने की प्रक्रिया होती है, परंतु बदलती परिस्थितियों के अनुरूप कौशल विकास/अभ्यास शिक्षण में सुधार की आवश्यकता प्रतीत होती है, जिससे भावी अध्यापकों में वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप विभिन्न कौशलों (शिक्षण/कठोर कौशल एवं मृदु कौशल) का समन्वित रूप से विकास किया जा सके।

एकीकृत शिक्षण

जिस प्रकार से सूक्ष्म शिक्षण में एक समय में केवल एक कौशल के विकास या अभ्यास पर बल दिया जाता है, उसी प्रकार एकीकृत शिक्षण के द्वारा दो या दो से अधिक शिक्षण कौशलों पर ध्यान देकर सेवा-पूर्व अध्यापक के शिक्षण व्यवहार में सुधार करने का प्रयास किया जा सकता है, इसलिए यहाँ पर सूक्ष्म शिक्षण की जगह 'एकीकृत शिक्षण' शब्द का

© NCERT not to be republished

प्रयोग किया जा रहा है। एकीकृत शिक्षण से तात्पर्य दो या दो से अधिक कौशलों का एक साथ प्रयोग करने से है अर्थात दो या दो से अधिक कौशलों का एकीकरण करने से है।

मंगल (2016) के अनुसार कौशलों के एकीकरण के लिए दो विधियाँ अपनाई जा सकती हैं—

1. आंशिक एकीकरण विधि (Method of integration of part) तथा
2. समग्र एकीकरण विधि (Method of integration as a whole)

आंशिक एकीकरण विधि में दो या दो से अधिक कौशलों का एक साथ एकीकरण किया जाता है, जबकि समग्र एकीकरण में सभी संभावित कौशलों का एक साथ प्रयोग किया जाता है। सेवा-पूर्व अध्यापकों के प्रशिक्षण के लिए आंशिक एकीकरण की विधि को अपनाना अपेक्षकृत अधिक समीचीन प्रतीत होता है, क्योंकि एक समय में सभी शिक्षण कौशलों का एकीकरण करना कठिन कार्य हो जाएगा और प्रशिक्षण में भी कठिनाई का सामना करना पड़ सकता है, इसलिए जो कौशल (कठोर या मृदु) स्वाभाविक रूप से एक साथ प्रयोग हो रहे हों उनका आंशिक एकीकरण अथवा समन्वय द्वारा प्रशिक्षण दिया जा सकता है।

सूक्ष्म शिक्षण एवं एकीकृत शिक्षण को निम्न सारिणी द्वारा दर्शाया गया है। इस सारिणी के अवलोकन से सूक्ष्म शिक्षण एवं एकीकृत शिक्षण के अंतर को स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है—

सारिणी— सूक्ष्म शिक्षण एवं एकीकृत शिक्षण में अंतर

क्र.सं.	सूक्ष्म शिक्षण	एकीकृत शिक्षण
1.	एक समय में केवल एक कौशल का अभ्यास	एक समय में स्वाभाविक रूप से जुड़े एक से अधिक कौशलों का अभ्यास
2.	छात्रों की संख्या 5–10 के बीच होती है।	छात्रों की संख्या अपेक्षाकृत अधिक हो सकती है।
3.	सूक्ष्म पाठ की अवधि 5–10 मिनट की होती है।	किसी समूह में सम्मिलित कौशलों की संख्या पर निर्भर करता है।
4.	इसके द्वारा केवल शिक्षण/कठोर कौशल का अभ्यास करवाया जाता है।	शिक्षण/कठोर कौशल के साथ-साथ मृदु कौशल (Soft skill) का भी विकास किया जा सकता है।
5.	इसमें विद्यार्थियों के अधिगम कौशल पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया जाता है।	इसमें विभिन्न कौशलों के विकास के साथ-साथ विद्यार्थियों के अधिगम कौशल पर भी ध्यान केंद्रित करना सिखाया जा सकता है।

एकीकृत शिक्षण की आवश्यकता

आमतौर पर मौजूदा सूक्ष्म-शिक्षण अभ्यास में छात्राध्यापकों को शिक्षण के सिद्धांतों को पढ़ाने के बाद, शिक्षण अभ्यास (इंटर्नशिप) के लिए स्कूलों में भेजा जाता है, जहाँ पर छात्राध्यापक सूक्ष्म शिक्षण सत्र में सीखे गए विभिन्न शिक्षण कौशलों का एकीकृत तरीके से उपयोग करते हैं, जबकि सूक्ष्म शिक्षण में सभी शिक्षण कौशलों का अलग-अलग अर्थात एक समय में केवल एक कौशल का अभ्यास किए रहते हैं जिससे उन्हें वास्तविक कक्षा-शिक्षण वातावरण में कौशलों

© NCERT not to be republished

को एकीकृत करते हुए शिक्षण कार्य करने में कठिनाई का सामना करना पड़ता है। छात्राध्यापक प्रशिक्षण के दौरान एकीकृत शिक्षण का अभ्यास अपेक्षाकृत कम किए रहते हैं। यदि छात्राध्यापकों को विभिन्न शिक्षण कौशलों का एकीकृत तरीके से अभ्यास कराया जाए तो शायद उनके सामने ऐसी समस्या उत्पन्न नहीं होगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 भी इस बात का समर्थन करती है कि बी.एड. कार्यक्रम में छात्राध्यापकों को नवीनतम तकनीकों के माध्यम से प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए जिससे वर्तमान समय की परिस्थितियों के अनुरूप अध्यापक में विभिन्न वृत्तिक कौशलों का उपयोग करने की दक्षता विकसित की जा सके और शिक्षण-अधिगम को शिक्षार्थी केंद्रित एवं सहयोगात्मक रूप प्रदान किया जा सके।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में यह भी कहा गया है कि शिक्षकों की क्षमताओं को अधिक से अधिक बढ़ाया जाना चाहिए जिससे वे बच्चों को सीखने में सहायता कर सकें।

"सभी बी.एड. कार्यक्रमों में शिक्षणशास्त्र की जाँची-परखी तकनीकों के साथ-साथ हाल ही में सबसे नवीनतम तकनीकों में प्रशिक्षण दिया जाएगा, जिसमें बुनियादी साक्षरता और संख्या ज्ञान के संबंध में शिक्षणशास्त्र, बहुस्तरीय शिक्षण एवं मूल्यांकन, दिव्यांग बच्चों को पढ़ाना, विशेष रुचि या प्रतिभा वाले बच्चों को पढ़ाना, शैक्षिक प्रौद्योगिकी का प्रयोग और शिक्षार्थी केंद्रित एवं सहयोगात्मक शिक्षण शामिल है।"
(राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, पृ. 36)।

"स्कूलों के काम के वातावरण और संस्कृतियों में आमूल-चूल परिवर्तन करने का प्राथमिक लक्ष्य शिक्षकों की क्षमताओं को अधिकतम स्तर तक बढ़ाना होगा, ताकि वे अपना काम प्रभावी ढंग से कर सकें… जिनका एक कॉमन लक्ष्य यह सुनिश्चित करना होगा कि सभी बच्चे सीख रहे हैं" (राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020, पृ. 32)।

इसलिए इन सब बातों को ध्यान में रखते हुए यह आवश्यक हो जाता है कि छात्राध्यापकों द्वारा कौशल विकास हेतु ऐसी नवीनतम पद्धति का उपयोग किया जाए जिससे उनमें वर्तमान परिस्थिति के अनुरूप अपेक्षित कौशलों का विकास हो सके। एकीकृत शिक्षण पर चिंतन करने से प्रतीत होता है कि कौशल विकास हेतु यह एक प्रभावी तरीका सिद्ध हो सकता है। इसलिए छात्राध्यापकों को ऐसे सभी कौशलों का जो स्वतः एक-दूसरे के साथ प्रयोग होते हैं, एकीकृत शिक्षण अभ्यास कराया जाना चाहिए।

"सूक्ष्म शिक्षण का सैद्धांतिक आधार शिक्षण का विश्लेषणात्मक स्वरूप है। इसके अनुसार शिक्षण कार्य पहले बहुत से छोटे-छोटे विशिष्ट शिक्षण कौशलों में विभाजित किया जाता है और फिर इन शिक्षण कौशलों को भी अति सूक्ष्म शिक्षण व्यवहारों (Teaching Behaviours) में बाँट दिया जाता है।

© NCERT not to be republished

इन सूक्ष्म शिक्षण व्यवहारों के उचित अर्जन से ही विशिष्ट बना जा सकता है। सैद्धांतिक रूप से यह बात जितनी उचित जान पड़ती है, व्यावहारिक रूप से उतनी खरी नहीं उतरती। वास्तविक कक्षा शिक्षण में इन शिक्षण कौशलों का अथवा शिक्षण व्यवहारों का प्रयोग अलग-अलग रूप में नहीं होता, बल्कि जिस प्रकार की शिक्षण और अधिगम परिस्थिति होती है, उसके अनुकूल बड़े ही स्वाभाविक और समन्वित ढंग से इन सभी शिक्षण कौशलों का उपयोग किया जाता है। इस दृष्टि से यह आवश्यक हो जाता है कि अलग-अलग रूप से अर्जित किए हुए विभिन्न शिक्षण कौशलों को समन्वित अथवा एकीकृत करके एक पूर्ण शिक्षण कला के रूप में प्रयोग करने का अभ्यास कराया जाए। शिक्षण कौशलों को एकीकृत करने की प्रक्रिया द्वारा ही यह कार्य संभव हो सकता है" (मंगल, एस.के. एवं मंगल, उमा; 2016, पृ.सं. 474–475)।

उपर्युक्त उद्धरणों से स्पष्ट है कि अध्यापक शिक्षा संस्थाओं में छात्राध्यापकों को उन सभी शिक्षण/कठोर एवं मृदु कौशलों का समन्वित अथवा एकीकृत तरीके से अभ्यास कराया जाना चाहिए जो स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के साथ प्रयोग होते हों। स्टीफेन मारेन एवं अन्य (2021) ने अपने अध्ययन "इंटीग्रेटिंग सॉफ्ट स्किल्स इन्टू टीचर एजुकेशन करिकुलम" के आधार पर बताया कि मृदु कौशल विद्यालयों और कार्यस्थलों में बहुत रुचि पैदा कर रहा है। उन्होंने बताया कि मृदु कौशल अध्यापक शिक्षा के लिए आधारभूत कौशल हैं। इससे स्पष्ट है कि छात्राध्यापकों को शिक्षण/कठोर कौशलों के साथ ऐसे मृदु कौशल जो स्वाभाविक रूप से इन शिक्षण/कठोर कौशलों के साथ प्रयोग होते हैं, का भी एकीकृत अथवा समन्वित तरीके से अभ्यास कराया जाना चाहिए।

दीर्घ शिक्षण (मेगा-टीचिंग) उपागम, इसमें सूक्ष्म शिक्षण के ही कौशल शामिल होते हैं। यह उपागम सूक्ष्म शिक्षण का परिष्कृत रूप है। इसमें सूक्ष्म शिक्षण के लगभग सभी कौशल चार समूहों में विभाजित होते हैं। सभी समूहों में कौशलों का वितरण निम्न प्रकार है (नाइक, 1986)—

समूह 'अ' (Set A)

(i) प्रस्तावना/परिचय कौशल
(ii) प्रश्नीकरण कौशल
(iii) अनुशीलन प्रश्न और
(iv) पुनर्बलन

समूह 'ब' (Set B)

(i) व्याख्या कौशल
(ii) उद्दीपन परिवर्तन कौशल
(iii) दृष्टांत कौशल और
(iv) उपस्थित व्यवहार अभिलेखन (Recording attending behaviour)

समूह 'स' (Set C)

(i) श्यामपट्ट लेखन
(ii) अभिव्यक्ति कौशल

© NCERT not to be republished

समूह 'द' (Set D)

(i) मूल्यांकन कौशल

> 'शिक्षा प्रणाली में विकास और शिक्षकों की बदलती भूमिका के साथ दीर्घकालिक और सतत राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षक गुणवत्ता में वृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है' (एन.पी.एस.टी., 2020, पृ. 5)।

नाइक (1986) ने बताया कि समूह में इन कौशलों की भूमिका गेस्टाल्ट के सिद्धांतों पर आधारित है। ये सभी कौशल छात्राअध्यापक अंतर्क्रिया से संबंधित हैं। उन्होंने बताया कि एक सेट के सभी कौशल एक-दूसरे के साथ स्वाभाविक रूप से प्रयोग होते हैं। अतः इन कौशलों का प्रशिक्षण एक साथ कराया जाना चाहिए न कि अलग-अलग। यह अध्ययन उन्होंने सन 1986 में किया था जब हमारी राष्ट्रीय शिक्षा नीति आई थी। आज इसे लगभग 36 वर्ष हो गए और उस राष्ट्रीय शिक्षा नीति की जगह पर अब हमारी नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी आ चुकी है। कहने का तात्पर्य यह है कि अध्यापक शिक्षा संस्थानों में छात्राध्यापकों को कौशलों के एकीकृत अथवा समन्वित रूप से अभ्यास कराने की आवश्यकता 36 वर्ष पहले भी महसूस की गई थी और वर्तमान समय में तो यह अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इनके अध्ययन से स्पष्ट है कि उस समय केवल सूक्ष्म शिक्षण में शामिल शिक्षण/कठोर कौशलों के प्रशिक्षण पर ही बल दिया गया, जबकि वर्तमान समय तेज़ी से आगे बढ़ने का है। कठोर एवं मृदु कौशलों के समन्वय से कार्य को आसान बनाया जा रहा है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति (2020) के सुझाव पर राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद द्वारा तैयार किए गए 'अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय व्यवसायगत मानक (एन.पी.एस.टी.) के प्रारंभिक प्रारूप में भी सृजनात्मकता, आलोचनात्मक चिंतन, उच्च-क्रम चिंतन जैसे अनेक मृदु कौशलों के विकास की बात कही गई है। इससे स्पष्ट होता है कि 21वीं सदी में छात्राध्यापकों में मृदु कौशलों के प्रशिक्षण की अत्यंत आवश्यकता है। इन मृदु कौशलों का शिक्षण/कठोर कौशलों के साथ समन्वित रूप में दिया जाना चाहिए। आज स्मार्टफोन, स्मार्ट बोर्ड, स्मार्ट सिटी आदि का प्रचलन हो गया है, इसलिए शिक्षण/कठोर एवं मृदु कौशलों के एकीकृत शिक्षण से सेवा-पूर्व अध्यापकों को भी स्मार्ट अध्यापक के रूप में विकसित किया जा सकता है।

अध्यापक शिक्षा में एकीकृत शिक्षण अभ्यास को बढ़ावा देने हेतु निम्नलिखित कदम उठाए जाने चाहिए—

- अध्यापक शिक्षा संस्थानों में एकीकृत शिक्षण अभ्यास को बढ़ावा देने हेतु इससे संबंधित कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।
- एकीकृत शिक्षण अभ्यास को बढ़ावा देने हेतु इस दिशा में शोधकार्य को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अध्यापक शिक्षा के विद्वानों द्वारा एकीकृत शिक्षण अभ्यास पर आधारित कार्यक्रम को अभिकल्पित करना चाहिए। इसके लिए वास्तविक कक्षा वातावरण का गहन चिंतन करना एवं स्वाभाविक रूप से एक-दूसरे के

© NCERT not to be republished

साथ उपयोग होने वाले कौशलों की पहचान करनी चाहिए।

- अध्यापक/शिक्षक द्वारा छात्राध्यापकों को सूक्ष्म पाठ योजना के स्थान पर एकीकृत कौशलों पर आधारित पाठ योजना का निर्माण कराना चाहिए और इसके आधार पर कौशलों का विकास करना चाहिए।
- उन कौशलों का समूह तैयार करना चाहिए जो एक-दूसरे के साथ स्वाभाविक रूप से उपयोग होते हैं।

उदाहरणार्थ—

शिक्षक एकीकृत शिक्षण द्वारा कौशल विकास हेतु पाठ योजना का प्रारूप निम्न हो सकता है—

आयाम 1— पाठ की प्रस्तावना तैयारी

एकीकृत कौशलों के अभ्यास हेतु पाठ योजना

दिनांक –	विषय – सामाजिक विज्ञान	कक्षा –7th
छात्राध्यापक का नाम –	उप विषय – भूगोल (हमारा पर्यावरण)	अवधि –
	प्रकरण– पर्यावरण	

एकीकृत कौशल— TS – प्रस्तावना, प्रश्नीकरण; SS – संप्रेषण (इसका उद्देश्य अंतर्संबंध स्थापित करना है); LS – ध्यानपूर्वक सुनना, स्पष्ट रूप से उत्तर देना और ध्यान केंद्रित करना

एकीकृत कौशल के घटक

1. कथनों/प्रश्नों/प्रसंगों/उदाहरणों का विद्यार्थियों के पूर्व-ज्ञान से संबंध (TS – Int)
2. पाठ की प्रस्तावना हेतु उचित उपकरणों/ तकनीकों एवं रणनीतियों का चयन एवं उपयोग (TS – Int)
3. नए पाठ के प्रति जिज्ञासा उत्पन्न करने हेतु प्रश्नों का उपयोग (TS – Que)
4. विद्यार्थियों के दैनिक जीवन से संबंधित व्यावहारिक प्रश्नों का उपयोग (TS – Que)
5. विद्यार्थियों द्वारा स्पष्ट रूप से उत्तर देना (LS)
6. अध्यापक और विद्यार्थियों के मध्य अंतर्संबंध (SS – COS)
7. उद्देश्य कथन एवं केंद्रीय प्रश्नों के माध्यम से पूर्व-ज्ञान को नए ज्ञान से जोड़ना (TS – Int)
8. नए पाठ के प्रति विद्यार्थियों का ध्यान, अभिरुचि एवं जिज्ञासा (LS)

संक्षिप्ताक्षर—TS–शिक्षण कौशल (Teaching Skill), Int – प्रस्तावना (Introduction), Que – प्रश्नीकरण (Questioning), SS – मृदु कौशल (Soft Skill), COS – संप्रेषण (Communication), LS – अधिगम कौशल (Learning skill)।

© NCERT not to be republished

छात्राध्यापक क्रिया	विद्यार्थी क्रिया	कौशल के घटक
छात्राध्यापक विद्यार्थियों का हाल-चाल पूछने के माध्यम से सौहार्द स्थापित करते हुए कहेंगे कि बच्चों आज मैं आपको आपकी किताब से एक कहानी सुनाता हूँ, "रवि नाम का एक लड़का था। जब वह गर्मी की लंबी छुट्टियों के बाद स्कूल जा रहा था तो उसने देखा कि उसके स्कूल के निकट के खेल के मैदान में खुदाई हो गई थी। वही एक मैदान उनके खेलने के लिए वहाँ पर था। लोगों ने बताया कि वहाँ अनेक फ्लैटों वाली एक बड़ी ईमारत बनेगी। जब रवि को समझ आया कि मुलायम घास, गेंद के फूल एवं तितलियों वाला विशाल मैदान अब हमेशा के लिए नष्ट हो चुका है तो उसकी आँखों से आँसू छलकने लगे।" कहानी सुनाने के उपरांत छात्राध्यापक विद्यार्थियों से कहानी एवं उनके (विद्यार्थियों के पूर्व-ज्ञान के आकलन हेतु) व्यावहारिक जीवन से संबंधित कुछ प्रश्न पूछेंगे—	विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुनेंगे और पाठ के प्रति अभिरुचि एवं जिज्ञासा उत्पन्न करेंगे।	1, 2
अच्छा अब आप बताइए। 1. रवि की आँखों से आँसू क्यों छलकने लगे?	**संभावित उत्तर—** क्योंकि जिस मैदान में वह खेलता था उस मैदान में खुदाई हो गई थी; क्योंकि उसे अब तितलियाँ और सुंदर - सुंदर फूल देखने को नहीं मिलेंगे…	
2. आप अपने आस-पास किस प्रकार के पेड़-पौधे देखते हैं?	नीम, जामुन, आम…	3, 4, 5, 6
3. ये पेड़-पौधे हमारे जीवन में किस प्रकार लाभदायक हैं?	इनसे हमें फल मिलते हैं, हवा मिलती है…	
4. जो कुछ हम अपने आस-पास देखते हैं उसे क्या कहते हैं?	अस्पष्ट उत्तर	
उद्देश्य कथन जो कुछ हम अपने आस-पास देखते हैं उसे पर्यावरण कहते हैं। तो बच्चों आज हम पर्यावरण के विषय में निम्नलिखित संदर्भ में विस्तारपूर्वक चर्चा करेंगे— • पर्यावरण से क्या तात्पर्य है? • पर्यावरण के कौन-कौन से घटक हैं और उनका हमारे जीवन में क्या योगदान है?	विद्यार्थी केंद्रीय प्रश्नों को अपनी स्मरण पुस्तिका (Note Book) में लिखेंगे तथा नए ज्ञान के प्रति जिज्ञासु होंगे।	7, 8

© NCERT not to be republished

निष्कर्ष

निष्कर्ष स्वरूप यह कहा जा सकता है कि बी.एड. छात्राध्यापकों के वृत्तिक कौशल विकास में एकीकृत शिक्षण अभ्यास की अत्यंत आवश्यकता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार वर्तमान परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए अध्यापक शिक्षा के विद्वानों से ऐसे कौशल विकास कार्यक्रम को अभिकल्पित करने की अपेक्षा है, जिसमें कठोर एवं मृदु कौशलों का समन्वित तरीके से अभ्यास कराया जा सके और छात्राध्यापकों में विद्यार्थियों के अधिगम कौशल पर भी ध्यान देने की दक्षता विकसित की जा सके। इसके लिए हमें कक्षा वातावरण का गहन चिंतन करना होगा कि वर्तमान समय में एक अध्यापक के लिए कौन-कौन से कठोर, मृदु एवं अधिगम कौशलों की अधिक आवश्यकता है? इन कौशलों का कक्षा में कब और कैसे प्रयोग होता है? वे कौन-से शिक्षण/कठोर, मृदु एवं अधिगम कौशल हैं जो स्वतः एक-दूसरे के साथ प्रयोग होते हैं?

संदर्भ

अंबिली, आर. 2013. माइक्रोटीचिंग, एन. एफिशिएंट टेकनिक्स फॉर लर्निंग इफेक्टिव टीचिंग. *जर्नल्स ऑफ रिसर्च इन मेडिकल साइंस.* https://www.ncbi.nlm.nih.gov/pmc/articles/PMC3724377

एन.सी.टी.ई. 2021. *अध्यापकों के लिए राष्ट्रीय व्यवसायगत मानक (एन.पी.एस.टी., प्रारंभिक प्रारूप) 2021.* राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद्, नई दिल्ली.

नाइक, डी. 1986. अ स्टडी ऑफ दी इफेक्ट ऑफ डिफरेंट मॉडल्स ऑफ इंटीग्रेशन एक्सरसाइज ऑफ टीचिंग स्किल्स लर्न थ्रू माइक्रो-टीचिंग अपॉन टीचिंग इफेक्टिवनेस एंड टीचर एटीट्यूड. *डॉक्टरल थीसिस*, संबलपुर विश्वविद्यालय. 05 अप्रैल 2021, को http://hdl.handle.net/10603/187879 प्राप्त।

मंगल, एस.के. और यू. मंगल. 2016. *शिक्षा तकनीकी*. पीएचआई लर्निंग प्रा. लि., दिल्ली.

मारेन, एस.यू.के. सालेह. और एच. जुलनैदी. 2021. इंटीग्रेटिंग सॉफ्ट स्किल्स इन्टू टीचर एजुकेशन करिकुलम. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइकोलॉजिकल रेहैबिटेशन*. 25(2).

शरतेन्दु, एस. 2018. *सूक्ष्म-शिक्षण तथा अध्यापन कौशल*. शारदा पुस्तक भवन, इलाहाबाद.

शिक्षा मंत्रालय. 1966. *शिक्षा आयोग की रिपोर्ट : शिक्षा और राष्ट्रीय विकास 1964–66*. 4 सितंबर, 2021 को http://14.139.60.153/handle/123456789/2448 प्राप्त।

शिक्षा मंत्रालय. 2020. *राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020*. भारत सरकार, नई दिल्ली.

© NCERT not to be republished

8

कोविड-19 आपदा चुनौतियाँ, सार्थक प्रयास व पहलें

शरद सिन्हा*

कोविड-19 काल में लॉकडाउन के दौरान पूरी दुनिया में सारी गतिविधियाँ प्रभावित हुईं। शिक्षा का क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं रहा। भारत जैसे देश में जहाँ पर शिक्षा व्यापक रूप में दी जाती है और विभिन्न प्रकार के स्कूल और तरह-तरह के परिवेश से छात्र-छात्राएँ आते हैं, ऐसे देश में शिक्षा का प्रचार और प्रसार कोविड-19 काल में अपने आप में एक चुनौती के रूप में उभरा। इस महामारी का शिक्षकों ने डटकर सामना किया। शिक्षकों ने अपनी-अपनी तरह से शिक्षण-अधिगम के पहिये को थमने नहीं दिया। अलग-अलग तरह से बच्चों तक पहुँचने की और शिक्षण सामग्री पहुँचाने की कोशिश की गई। सभी के सार्थक प्रयास से इस कठिन काल में भी बच्चे पढ़ाई से वंचित नहीं रहे। ऐसा ही एक प्रयास 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा किया गया जिसमें उन्होंने कोविड-19 काल के दौरान उभरी हुई चुनौतियों का डट कर सामना किया एवं एक उदाहरण प्रस्तुत किया। साथ ही कोविड-19 काल के दौरान उन्होंने जो तकनीकी जानकारी प्राप्त की उससे न केवल बच्चों का मनोबल बढ़ाया और शिक्षा जारी रखी, बल्कि कोविड-19 काल के बाद भी उस समय सीखे गए कौशल का अनवरत प्रयोग जारी रखा। प्रस्तुत प्रपत्र में इसी समूह की पहलों के बारे में चर्चा की गई है।

कोविड-19 काल शिक्षा जगत के लिए आपदा काल था। जब सभी गतिविधियों का पहिया थम गया था और विश्व में शिक्षा से जुड़े लोग इस विषय पर चिंतित थे कि शिक्षाक्रम को कैसे जारी रखा जाए तथा विभिन्न स्तरों पर शिक्षा क्रियाकलापों को किस तरह व्यवस्थित और सुचारु रूप दिया जाए तब इस विषय को लेकर उत्तर प्रदेश एवं उत्तराखंड के शिक्षकों से एक प्रश्नावली साझा की गई जिसमें उन्होंने इस आपदा को किस प्रकार अवसर में बदला इसके बारे में प्रश्न पूछे गए। ये सभी शिक्षक सुचारु रूप से लॉकडाउन के दौरान उपजी परेशानियों से जूझने के उपाय ढूँढ रहे थे और साथ ही एक समूह से भी जुड़े हुए थे—'मिशन शिक्षण संवाद'।

* *प्रोफेसर* एवं *विभागाध्यक्ष,* अध्यापक शिक्षा विभाग, रा.शै.अ.प्र.प., नई दिल्ली 110 016

© NCERT not to be republished

'मिशन शिक्षण संवाद', सोशल मीडिया के ज़रिए जुड़े 1 लाख रचनात्मक शिक्षकों का अपना मंच है जो 200 से अधिक व्हाट्सएप समूह के माध्यम से 30 हज़ार शिक्षकों से सीधे जुड़ा है और ट्विटर, ब्लॉग, वेबसाइट, फेसबुक पेज, फेसबुक समूह के माध्यम से शिक्षकों के शैक्षिक कार्यों और क्रियाकलापों को साझा करने और प्रोत्साहित करने का प्लेटफॉर्म देता है। विगत 5 वर्षों में 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा टीचर्स क्लब, उत्तर प्रदेश, अन्य साथियों और 1 दर्जन से अधिक राज्यस्तरीय कार्यशालाओं की मदद से अच्छे शिक्षकों को सम्मानित कर उनके कार्यों को एक पहचान दी गई तथा अनवरत शैक्षिक संवाद और शिक्षण अधिगम सामग्री का निर्माण कर हज़ारों विद्यालयों को प्रेषित कर बेहतर शैक्षिक वातावरण निर्माण का प्रयास किया गया। 'मिशन शिक्षण संवाद' कोई रजिस्टर्ड संघ नहीं है और न ही शिक्षक अधिकार के लिए कभी धरना आंदोलन करता है, अपितु यह केवल शिक्षा के प्रसार में अपना योगदान देता है।

'मिशन शिक्षण संवाद' विचार के फाउंडर शिक्षक ने बताया कि वह पिछले 5 वर्षों से अनवरत शिक्षकों को दैनिक पोस्ट के माध्यम से विद्यालय खुलने से पूर्व शैक्षिक सामग्री उपलब्ध करा रहे थे जिसमें दैनिक श्यामपट्ट कार्य, प्रतियोगिता प्रभात आदि प्रमुख थी और अध्यापक इनका प्रयोग छात्रों के लिए करते थे, परंतु लॉकडाउन होते ही सब कुछ रुक-सा गया। चूँकि अब शिक्षक विद्यालय नहीं जा रहे थे, इसलिए अब इस कार्य को समूह पर भेजने के बाद भी छात्रों तक उसे पहुँचा पाना अत्यंत कठिन था।

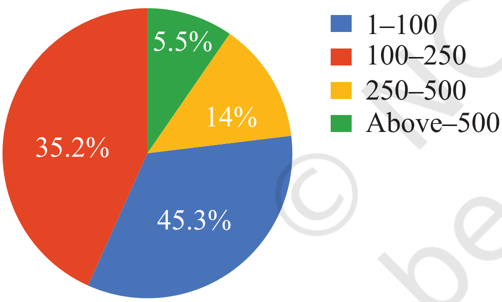

आकृति 1

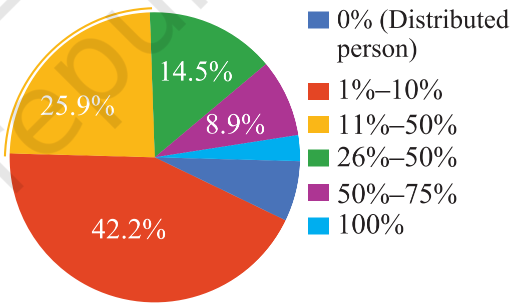

आकृति 2

लगभग 35.2 प्रतिशत स्कूलों में 100 से 250, 45.3 प्रतिशत स्कूलों में 1 से 100, 14 प्रतिशत स्कूलों में 250 से 500 और 5.5 प्रतिशत स्कूलों में 500 से ऊपर बच्चे दाखिल थे (आकृति 1)। जब लॉकडाउन के दौरान संपर्क करने की आवश्यकता हुई तब खोजने पर पता चला कि 45.2 प्रतिशत स्कूलों में 1 से 10 प्रतिशत बच्चों के पास, 25.9 प्रतिशत स्कूलों में 11 से 25 प्रतिशत बच्चों के पास, 14.5 प्रतिशत स्कूलों में 26 से 50 प्रतिशत बच्चों के पास, 8.9 प्रतिशत स्कूलों में 50 से 75 प्रतिशत बच्चों के पास और केवल 1.7 प्रतिशत स्कूलों में 100 प्रतिशत बच्चों के पास ही स्मार्टफोन और मोबाइल डाटा की उपलब्धता थी (आकृति 2)।

© NCERT not to be republished

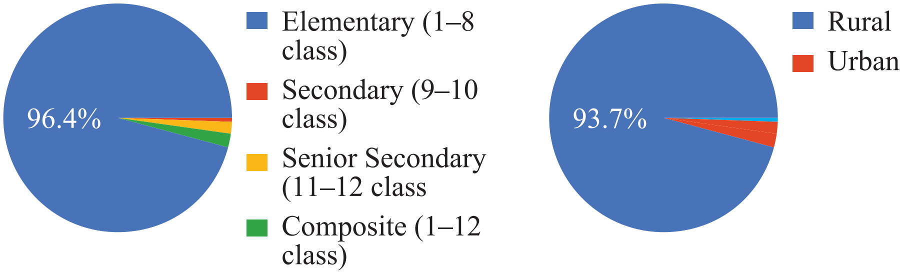

आकृति 3

कुल 2029 शिक्षकों से जो प्रश्नावली साझा की गई थी; उनमें से 96.4 प्रतिशत कक्षा एक से आठवीं तक के शिक्षक थे तथा 93.7 प्रतिशत शिक्षक ग्रामीण इलाकों के स्कूलों में कार्यरत थे (आकृति 3)।

आकृति 4

इनमें से 94.2 प्रतिशत शिक्षकों के पास स्मार्टफोन था, लेकिन 62.9 प्रतिशत शिक्षकों के लिए ऑनलाइन टीचिंग का अनुभव बिलकुल नया था। सर्वेक्षण से यह भी पता लगा कि 37.1 प्रतिशत शिक्षकों को ऑनलाइन टीचिंग के संदर्भ में कुछ जानकारी थी, परंतु 62.9 प्रतिशत शिक्षक बिलकुल अनभिज्ञ थे (आकृति 4)।

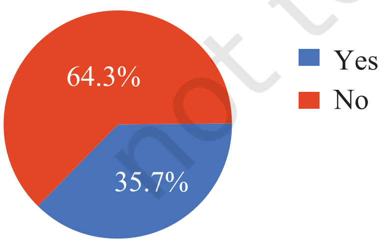

आकृति 5

केवल 35.7 प्रतिशत शिक्षकों ने किसी प्रकार के औपचारिक प्रशिक्षण में इस महामारी के पूर्व भाग लिया था जिसमें कि आभासी माध्यम के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करने और पढ़ाने की विधियों से उन्हें अवगत कराया गया हो (आकृति 5)। साथ ही यह तथ्य भी सामने आया कि अधिकांश वरिष्ठ शिक्षक और कई नए शिक्षक एंड्रॉयड फोन का प्रयोग करना नहीं जानते थे। 'मिशन शिक्षण संवाद' समूह द्वारा एक टेक्निकल टीम गठित की गई और जून की शुरुआत में टेक्निकल टीम ने निर्णय लिया कि अध्यापकों को एंड्रॉयड फोन में उपलब्ध एप और तकनीकी का प्रयोग सिखाया जाए, ताकि जुलाई में विद्यालय न खुलने की दशा में अध्यापक लॉकडाउन में बाधित शिक्षा

© NCERT not to be republished

की चुनौतियों से निपट सकें। अधिकांश शिक्षक गूगल मीट जैसे ऑनलाइन प्लेटफॉर्म को पहली बार इस्तेमाल कर रहे थे जो लॉकडाउन में सभी को जोड़े रखने का बेहतर माध्यम था।

लॉकडाउन में समय का बेहतर इस्तेमाल करने का उपाय मिल गया था, इसलिए मिशन के सभी जनपदों के एडमिन और तकनीकी रूप से कुछ दक्ष साथियों की मदद से पहली राजस्तरीय ऑनलाइन आई.सी.टी. कार्यशाला का प्रयोग किया गया। दस दिवसीय कार्यशाला में प्रतिदिन 2 घंटे के हिसाब से 20 घंटे निर्धारित किए। पाठ्यक्रम के लिए डिजिटल इमेज मेकिंग, एजुकेशनल वीडियो मेकिंग, मोबाइल द्वारा माइक्रोसॉफ्ट वर्ड, एक्सेल और पावरपाइंट की मदद से स्कूल, डॉक्यूमेंटेशन, गूगल फॉर्म, डॉक, ई-मेल, ऑनलाइन डिजिटल प्लेटफॉर्म इस्तेमाल करने का कौशल और शैक्षिक एप की जानकारी को शामिल किया गया। पहले बैच से ही यह तय हो गया कि अध्यापक इसे सीखने को लालायित हैं। बैच के बाद इन अध्यापकों से यह कार्यक्रम अपने जनपद में ले जाने का आग्रह किया गया और एक 20 सदस्यीय टीम को प्रशिक्षक के रूप में तैयार करके इन कार्यक्रमों के सपोर्ट के लिए नियुक्त कर दिया गया। अब तक 'मिशन शिक्षण संवाद' ने उत्तर प्रदेश के 30 जनपदों में 3 राज्यस्तरीय और 2 राष्ट्रीय कार्यशाला का आयोजन कर लगभग 7 हज़ार शिक्षकों को टेक्नोसेवी बनाने की कोशिश की है। इन शिक्षकों से यह भी अनुरोध किया गया कि वे अब अपने विद्यालय के स्टाफ और पास-पड़ोस के विद्यालय के शिक्षकों को तकनीकी रूप से दक्ष बनाने में मदद करें।

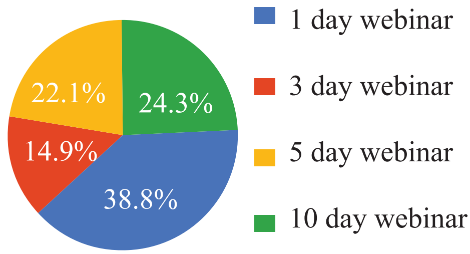

आकृति 6

इन कार्यक्रमों के उद्घाटन एवं समापन दिवस में शिक्षा विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों को आमंत्रित कर कार्यक्रम से जुड़े शिक्षकों को प्रेरित करने का कार्य किया गया। 'मिशन शिक्षण संवाद' सभी कार्यक्रम निःशुल्क आयोजित करवाता है तथा मिशन से जुड़ने और कार्य करने का कोई शुल्क नहीं है। मिशन के समूह पर प्रतिदिन कई शिक्षक लॉकडाउन के दौरान किए गए कार्यों को नियमित रूप से साझा करते रहे। कोविड-19 काल की महामारी के दौरान, आधिकारिक तौर पर 38.8 प्रतिशत शिक्षकों को एक दिवसीय वैबिनार, 14.9 प्रतिशत शिक्षकों को तीन दिवसीय वैबिनार, 22.1 प्रतिशत शिक्षकों को पाँच दिवसीय वेबिनार और 24.3 प्रतिशत शिक्षकों को दस दिवसीय वैबिनार में अभिविन्यास किया गया।

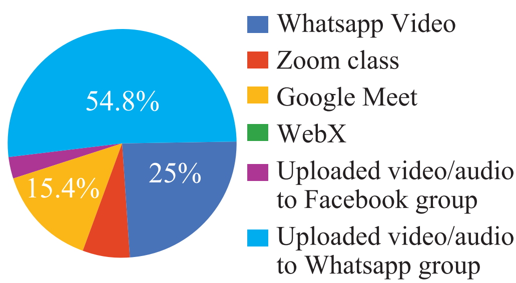

आकृति 7

© NCERT not to be republished

इस काल के दौरान 54.8 प्रतिशत अध्यापकों ने व्हाट्सएप ऑडियो/वीडियो, 3.7 प्रतिशत ने ज़ूम क्लास, 15.4 प्रतिशत ने गूगल मीट, 25 प्रतिशत ने व्हाट्सएप वीडियो के माध्यम से ऑनलाइन शिक्षण किया (आकृति 7)।

लॉकडाउन के चलते अधिकांश शिक्षकों को निम्नलिखित समस्याओं का सामना करना पड़ा—

1. अभी तक जो भी सामग्री विद्यालयों तक भेज रहे थे, वह अध्यापक के माध्यम से बच्चों तक पहुँचती थी जो अब संभव नहीं था।
2. ग्रामीण क्षेत्र के अभिभावकों के पास एंड्रॉयड मोबाइल नहीं थे और वह व्हाट्सएप का इस्तेमाल नहीं कर रहे थे।
3. अभिभावक अपने मोबाइल को छात्रों को देने को तैयार नहीं थे।
4. अभिभावक महंगे इंटरनेट रिचार्ज को लेने में सक्षम नहीं थे।
5. छात्र अभी मोबाइल से पढ़ने के आदी नहीं थे।
6. अध्यापक ऑनलाइन कक्षा जैसे किसी कांसेप्ट से परिचित ही नहीं थे।
7. अध्यापक तकनीकी रूप से मज़बूत नहीं थे और वे विभागीय ऐप के बेहतर प्रयोग से भी अनभिज्ञ थे।
8. अध्यापक डिजिटल कटेंट निर्माण और कक्षा-कक्ष में उनके प्रयोग करना नहीं जानते थे।
9. अध्यापकों को विभागीय सूचना को वर्ड, एक्सेल फॉर्मेट में बनाना और उनका डिजिटल संप्रेषण नहीं आता था।
10. अध्यापकों को अपने मोबाइल फोन का शिक्षा क्षेत्र में बेहतर प्रयोग पता नहीं था।

निदान के लिए किए गए प्रयास

1. समूह ने संदेशों के माध्यम से अध्यापकों को इस बात के लिए तैयार किया कि वे किसी माध्यम से छात्रों के मोबाइल नंबर इकट्ठा करें। चूँकि इस समय विद्यालय तक जा पाना संभव नहीं था, इसलिए स्थानीय आँगनबाड़ी कार्यकर्त्री और शिक्षामित्र का इसमें सहयोग लेने का आग्रह किया गया।
2. अध्यापक से छात्रों के अभिभावकों और छात्रों से बातचीत करने का आग्रह किया गया और उनकी सहमति से व्हाट्सएप समूह का निर्माण किया गया।
3. शैक्षिक सामग्री निर्माण टीम से आग्रह किया गया कि वह अब गृहकार्य से संबंधित इमेज का निर्माण कर जनपदीय समूह के माध्यम से बच्चों तक भेजने का प्रयास करें।
4. इस कार्य से भी बहुत ज़्यादा बच्चे नहीं जुड़ सके, परंतु सोशल मीडिया पर बच्चों के गृहकार्य से संबंधित पोस्ट के आने से बच्चों और अभिभावकों के बीच एक सकारात्मक संदेश गया और उन्हें लगा कि बच्चों को पढ़ाई से जोड़े रखना ज़रूरी है।
5. इस दौरान अभिभावकों को सामान्य संदेश के माध्यम से बच्चों को प्रोत्साहित और प्रेरित करने का निवेदन भी किया जाता रहा।

'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा कोविड-19 काल के दौरान करवाई गई लगभग 100 ऑनलाइन 7–10

© NCERT not to be republished

दिवसीय निःशुल्क ट्रेनिंग के दौरान अध्यापकों को वर्ड, एक्सेल और पॉवरपॉइंट के ज़रिए अभिलेखों के डिजिटल निर्माण, पिक्सेल लैब के ज़रिए डिजिटल, टी.एल.एम. इमेज निर्माण और वीडियो एडिटिंग सॉफ़्टवेयर से एजुकेशनल निर्माण सिखाया गया था और आग्रह किया गया था कि वह अपने विद्यालय के स्टाफ़ और अपने पास-पड़ोस के शिक्षकों को भी यह जानकारी देंगे।

लॉकडाउन के दौरान ही इसके व्यापक सकारात्मक परिणाम देखने को मिले थे पहले समूह में केवल 1 दर्ज़न ही शिक्षक थे जो डिजिटल इमेज बनाते थे। इस ट्रेनिंग के बाद टीम से लगभग 100 शिक्षक और जुड़े जिन्होंने विषयवार और कक्षावार डिजिटल कंटेंट निर्माण में सहयोग प्रदान करना शुरू किया। कोविड-19 काल के दौरान शिक्षकों ने अपने विद्यालयों के व्हाट्सएप समूहों का निर्माण कर वहाँ सीधे छात्रों को जोड़कर उन्हें सामग्री भेजी थी। अब इन्हीं समूहों का प्रयोग पढ़ाई से प्रतियोगिता अभियान की सामग्री भेजने और उन्हें ऑनलाइन परीक्षा तैयारी में किया जा रहा है।

विद्यालय के अभिलेखों के डिजिटल निर्माण की जानकारी के बाद अब मिशन से जुड़े शिक्षक अपनी जानकारियों को ज़्यादा सहज तरीके से बनाना/प्रिंट करना/अपलोड करना सीख गए हैं। वार्षिक परीक्षाफल आदि का निर्माण अब एक्सेल शीट पर कर पा रहे हैं। साथ ही जो छोटी-छोटी समस्याएँ उन्हें पी.डी.एफ. बनाने या मेल आदि करने में थीं, वह भी अब दूर हो चुकी हैं।

कोविड-19 काल वास्तव में 'मिशन शिक्षण संवाद' के लिए बहुत बड़ा अवसर था। ऑनलाइन प्रशिक्षण के बाद से हम न सिर्फ बच्चों को सीधे डिजिटल रूप से जोड़कर उन्हें परीक्षाओं की तैयारी करा पा रहे हैं, बल्कि कक्षाओं को डिजिटल कंटेंट से ज़्यादा जीवंत बना पा रहे हैं, साथ ही अपने दैनिक अभिलेखीकरण को भी ज़्यादा आसानी से कर पा रहे हैं। समय-समय पर डिजिटल कंटेंट को प्रभावशाली बनाने के लिए भी शिक्षकगण आपस में वार्तालाप करते हैं व कोविड-19 काल में छात्रों के लिए भेजी जाने वाली सामग्री का कोविड-19 काल के बाद सबसे अच्छा प्रयोग हो रहा है। कोविड-19 काल से पहले 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा केवल दैनिक श्यामपट्ट कार्य ही प्रेषित किया जाता था। कोविड-19 काल में हुई डिजिटल ट्रेनिंग के बाद कई नए साथी जुड़े जिनकी सहायता से विषयवार और कक्षावार शिक्षण सामग्री का निर्माण और प्रेषण शुरू किया गया। यह सामग्री नियमित शिक्षण में बहुत प्रभावी है। शिक्षकों को अब लैसन प्लान बनाने की ज़रूरत नही होती है। वे इन कंटेंट से विषयों को आसानी से पढ़ा सकते हैं। इसका एक बड़ा फ़ायदा यह भी मिला कि जिन विद्यालयों में संबंधित विषय के शिक्षक नहीं हैं, वहाँ अन्य विषय के शिक्षक इसका प्रयोग करके विषयों का शिक्षण कर लेते हैं। शिक्षकों के मोबाइल में डिजिटल सामग्री उपलब्ध होने से इसका प्रयोग वे कभी भी कर पा रहे हैं व कई शिक्षक इन डिजिटल शैक्षिक इमेज का प्रयोग सीधे प्रोजेक्टर के माध्यम से करके

© NCERT not to be republished

स्मार्ट कक्षाओं का संचालन सरकारी विद्यालय में कर रहे हैं।

कोविड-19 काल में ऑनलाइन प्रशिक्षणों में हमें पता लगा कि राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित राष्ट्रीय आय एवं योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा की पूरी जानकारी ही शिक्षकों को नहीं है, तो मिशन से जुड़े शिक्षकों को ऑनलाइन कार्यशाला के माध्यम से इसकी जानकारी उपलब्ध करवाई गई और छात्रों की तैयारी के लिए आग्रह किया गया। टेक्निकल टीम और मिशन के प्रमुख शिक्षक साथियों की मदद से डिजिटल सामग्री तैयार करके सौ से अधिक समूहों में नियमित भेजना शुरू किया गया। शिक्षकों ने इनका प्रयोग छात्रों की होने वाली परीक्षा की तैयारी में किया। उसी वर्ष हम प्रतिभागी छात्रों की संख्या दुगनी करने में सफल रहे। बाद में इस प्रयोग को शिक्षा निदेशक बेसिक सर्वेन्द्र विक्रम जी द्वारा सपोर्ट मिला और उनके माध्यम से जिला बेसिक शिक्षा अधिकारियों को अधिकतम छात्रों को शामिल करने का निर्देश दिया गया। उसका परिणाम यह हुआ कि कभी जिन जनपदों मे एक सैकड़ा से भी कम छात्र परीक्षा में शामिल होते थे, आज उन्हीं जनपदों में हज़ारों छात्र परीक्षा में शामिल होकर सफलता हासिल कर रहे हैं। वर्तमान में 'मिशन शिक्षण संवाद' द्वारा शिक्षकों की मदद से छात्रों को निःशुल्क ऑनलाइन लाइव क्लास और व्हाट्सएप के माध्यम से परीक्षा की तैयारी लगातार करवाई जा रही है और मासिक टेस्ट के माध्यम से इसका परीक्षण भी किया जाता है।

कोविड-19 काल में आपसी संवाद के लिए गूगल मीट और ज़ूम जैसे प्लेटफॉर्म का उपयोग शिक्षकों ने सीखा और साथ ही अभिलेखों के डिजिटल निर्माण की जानकारी भी हासिल की। अब उसका प्रयोग शिक्षा में बड़े स्तर पर होने लगा है। कोविड-19 काल के बाद आपसी संवाद के लिए एक नया एप कुटुंब मिला। 'मिशन शिक्षण संवाद' मंच ने इसकी मदद से एक लाख से अधिक शिक्षकों, अभिभावकों और छात्रों को आपसी संवाद, कक्षा-कक्ष के प्रयोगों, टी.एल.एम. और शिक्षण कौशल को साझा करने के लिए इसमें जोड़ा गया। वर्तमान में सभी राज्यों से मिलाकर 1 लाख 24 हज़ार लोग एक मंच में शैक्षणिक चर्चा और गतिविधियाँ साझा कर पा रहे हैं। यह समस्त आँकड़ें मई, 2021 में एकत्रित किए गए। तत्पश्चात जब कक्षाएँ सामान्य रूप से शुरू हो गईं तब भी मिशन के शिक्षकों ने अपना कार्य जारी रखा एवं बाद में की गई गतिविधियों की जानकारी अक्तूबर, 2022 तक एकत्रित की गई।

शिक्षकों के अनुभव एवं विचार

- मिशन का उद्देश्य कोविड-19 काल में सभी शिक्षकों को डिजिटल प्लेटफार्म का शिक्षा में बेहतर प्रयोग सिखाना था, ताकि हम सरकारी विद्यालय के छात्रों से जुड़कर उन्हें शिक्षा से जोड़े रख सकें जिसमें हम काफ़ी हद तक सफल रहे। कोविड-19 काल के बाद शिक्षक अपने शिक्षण में डिजिटल माध्यम, ऑनलाइन प्लेटफार्म, एजुकेशनल एप का भरपूर प्रयोग कर पा रहे हैं। हमें भी अब बेहतर डिजिटल एजुकेशनल कंटेंट शिक्षकों से मिल पा रहे हैं और व्हाट्सएप, फेसबुक, वेबसाइट आदि के माध्यम से जुड़े

© NCERT not to be republished

'मिशन शिक्षण संवाद' के लाखों शिक्षक इनका प्रयोग अपने दैनिक शिक्षण में कर पा रहे हैं।

एक *शिक्षक*
संस्थापक 'मिशन शिक्षण संवाद मंच'

- 'मिशन शिक्षण संवाद' का उद्देश्य ज़्यादा-से-ज़्यादा शिक्षकों को शैक्षिक सामग्री और शैक्षिक चर्चा से जोड़ना था। कोविड-19 काल में हमने संवाद के नए रास्ते खोजे और शिक्षकों ने उन माध्यमों का प्रयोग बच्चों को जोड़ने और उनके शिक्षण के लिए किया। कोविड-19 काल के बाद व्हाट्सएप के इन समूहों का प्रयोग शैक्षिक सामग्री के आदान-प्रदान के लिए सबसे कारगर साबित हुआ। अब हम हज़ारों शिक्षकों और छात्रों को सीधे शैक्षिक सामग्री कक्षा शिक्षण के लिए भेज पा रहे हैं, जिनका प्रयोग नियमित शिक्षण में लगातार हो रहा है। कोविड-19 काल में दी गई ट्रेनिंग से अब शिक्षक न्यूनतम संसाधनों में डिजिटल संसाधनों का बेहतर उपयोग शिक्षण में करने लगे हैं।

एक *शिक्षक*
संयोजक 'मिशन शिक्षण संवाद'

- हमें मिशन की शिक्षण सामग्री विद्यालय खुलने से पूर्व अपने व्हाट्सएप समूह पर मिल जाती है, जो पूरे दिन के क्रियाकलापों के लिए पर्याप्त होती है। इसकी मदद से हम दिन भर बच्चों के साथ शिक्षण कर पाते हैं। 'मिशन शिक्षण संवाद', में दैनिक योग, श्यामपट्ट कार्य, सामान्य ज्ञान, प्रतियोगी परीक्षा सामग्री और शिक्षण गतिविधियाँ सभी मिल जाती हैं जिससे हमारी कक्षाएँ काफ़ी रोचक हो रही हैं।

एक *शिक्षिका*, प्रा.वि. अदलपुर
वि.ख.– डिलारी, जनपद, मुरादाबाद

- 'मिशन शिक्षण संवाद' का पढ़ाई से प्रतियोगिता तक का अभियान बहुत अच्छा है। ग्रामीण क्षेत्र के छात्र अब आसानी से प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर पा रहे हैं, जो उनके लिए एक सपना मात्र था। जो छात्र परीक्षा में सफल नहीं भी हो रहे हैं उन्हें भविष्य में इस तैयारी का फायदा ज़रूर मिलेगा। बच्चों के अभिभावकों में नवोदय और राष्ट्रीय आय एवं योग्यता-आधारित छात्रवृत्ति परीक्षा के काफ़ी उत्साह दिख रहा है। इन परीक्षाओं में जनपद के कई छात्रों के सफल होने से अब सरकारी विद्यालयों के प्रति विश्वास बढ़ा है।

एक *शिक्षक*, प्रा.वि. भिटारी
काशी विद्यापीठ, वाराणसी

- 'मिशन शिक्षण संवाद' ने आज तक शिक्षण सामग्री को भेजने में कभी कोई गैप नहीं किया। अगर किसी दिन किसी जनपदीय समूह में सामग्री भेजने में देर हो जाती है तो उस जनपद के शिक्षक फोन करके पूछने लगते हैं। अब तो कुटुंब पर छात्रों के जुड़ने से कई छात्र सीधे ऑनलाइन क्लास, परीक्षा फॉर्म और मासिक टेस्ट के विषय में बात करते हैं, इसलिए भी हमारी ज़िम्मेदारी बनती है कि हम किसी भी हालत में विद्यालय खुलने से पूर्व 150 से अधिक समूहों में शिक्षण सामग्री भेज दें, ताकि जनपदीय समूह इसे अपने अन्य समूहों में भेज सकें।

एक *शिक्षक*,
संयोजक, टेक्निकल टीम, 'मिशन शिक्षण संवाद'
कस्तूरबा आवासीय बालिका विद्यालय, हमीरपुर

विद्यार्थियों को आभासी माध्यम से भेजे गए कार्य एवं गतिविधियाँ

संस्कार संदेश दिनांक - 19.11.2022

दैनिक नैतिक प्रभात -2022/225

बाल कहानी दिन - शनिवार

मिशन शिक्षण संवाद

लालच बुरी बला है।

गोपी एक गरीब किसान था। अपनी थोड़ी-सी जमीन में ही भरपूर मेहनत करता और सदैव सन्तुष्ट रहता, परन्तु उसकी लालची पत्नी रूपा हमेशा उसे ताने मारती कि वह और अधिक धन कमाये। घर में और अधिक सुख-सुविधा के सामान लेकर आये। गोपी उसे समझाता कि- "लालच अच्छी चीज नहीं है। व्यक्ति को सदैव सन्तुष्ट रहना चाहिए।"

एक दिन जब गोपी खेतों में काम करने गया था, तब रूपा को बाहर किसी को आवाज सुनायी दी। रूपा बाहर आयी, तो देखा, कोई साधु खड़े हैं। साधु ने रूपा से दान करने को कहा और कहा कि वे उसकी सभी इच्छाएँ पूरी कर देंगे। बस वह उनको कोई सोने का कोई गहना दे, जिसमें वह दिव्य मन्त्र फूँककर उसे मनोकामना पूर्ण करने वाला गहना बना देंगे, रूपा की सभी इच्छाएँ पूरी कर देगा। रूपा ने इस लालच में आकर अपने पास रखे एकमात्र सोने का हार दे दिया और साधु हार लेकर चला गया। जाते-जाते वह बोला कि- "कल आकर वह इस हार को मनोकामना पूर्ण करने वाला हार बनाकर दे जायेगा।"

कई दिनों बाद भी साधु के वापस न आने पर रूपा ने गोपी को यह बात बतायी। गोपी ने रूपा की मूर्खता को समझ लिया लेकिन अब कुछ किया भी नहीं जा सकता था। गोपी ने समझाया कि- "लालच के ही कारण आज तुमने अपना एकमात्र सोने का हार खो दिया। आगे से तुम कभी लालच नहीं करोगी। जो है उसी में सन्तुष्ट रहकर ही खुश रहेगी। लालच तो बुरी बला है।" रुपा ने आगे से किसी की बातों में फँसकर गुमराह न होने का गोपी को भरोसा दिलाया।

संस्कार संदेश

हमें कभी भी लालच नहीं करना चाहिए क्योंकि लालची व्यक्ति सदैव नुकसान उठाता है।

लेखिका

शिखा वर्मा (इं० स०अ०)

उ० प्रा० वि० स्योढ़ा, बिसवाँ, सीतापुर

http://missionshikshansamvad.com

https://www.facebook.com/shikshansamvad @shikshansamvad.com

गतिविधियाँ

आकृति 8

© NCERT not to be republished

व्हाट्सएप के माध्यम से शैक्षिक सामग्री का आदान-प्रदान

आकृति 9

© NCERT not to be republished

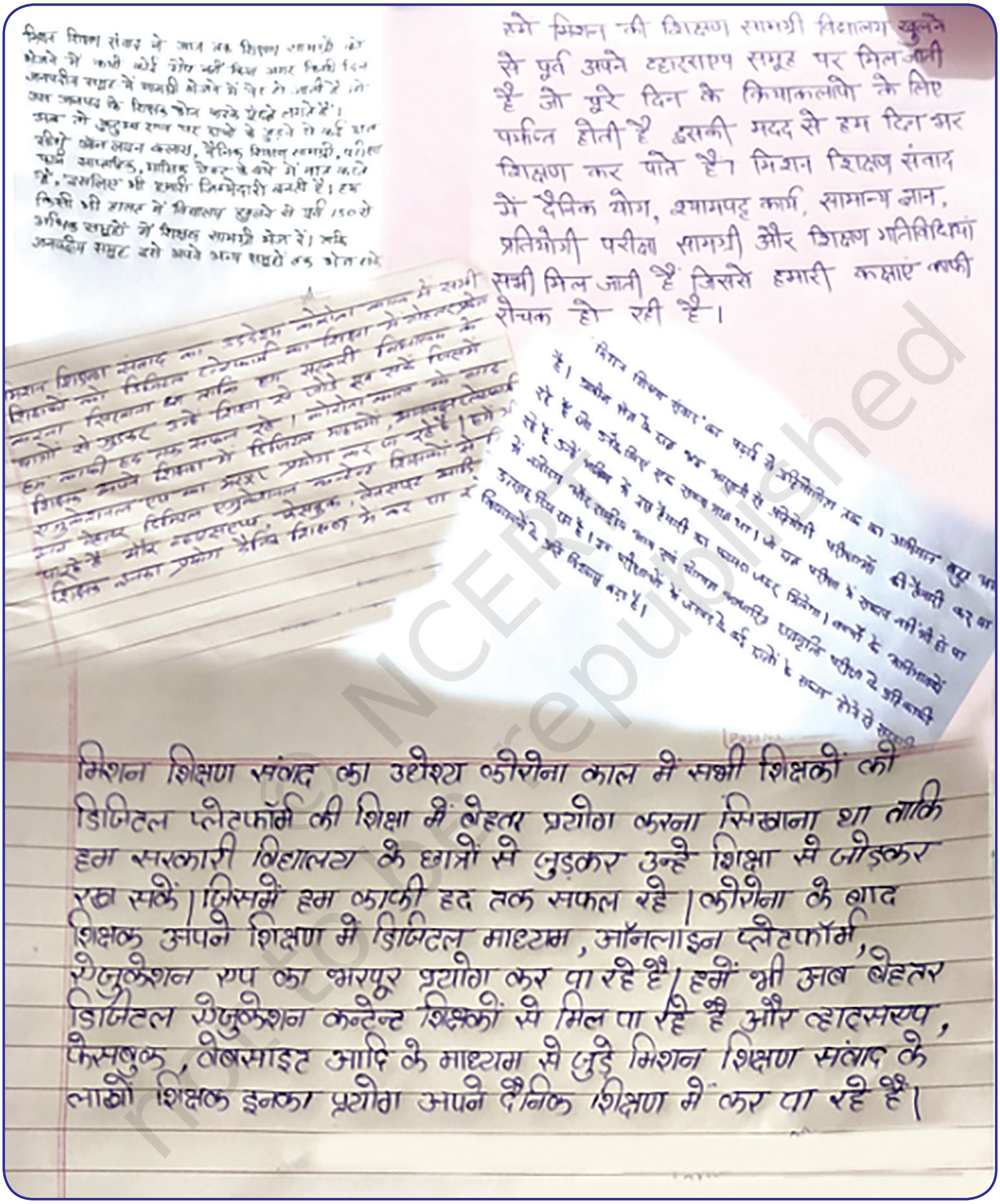

आकृति 10

© NCERT not to be republished

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश (भाग 1)*

बच्चे के जीवन के पहले आठ वर्ष निर्माणात्मक वर्ष होते हैं, जिन्हें मस्तिष्क की वृद्धि और विकास के लिए महत्वपूर्ण समय माना जाता है। हाल ही में हुए तंत्रिका विज्ञान अनुसंधानों (ब्रेन रिसर्च) ने बच्चे के जीवन के प्रारंभिक वर्षों के महत्व की पुष्टि की है। अनुसंधानों से पता चला है कि प्रारंभिक बाल्यावस्था के वर्षों में सार्थक संज्ञानात्मक, भाषायी, सामाजिक और गत्यात्मक क्षमताओं के विकास के लिए कुछ 'विशिष्ट अवधियाँ' महत्वपूर्ण होती हैं, जो बाद के जीवन की सफलता में योगदान देती हैं। यह अवस्था सामाजिक मूल्यों और व्यक्तिगत आदतों के निर्माण की नींव में भी महत्व रखती है। इस अवस्था में बच्चे अपने चारों ओर के लोगों और संसार के प्रति उसके रंगों, आकृतियों, ध्वनियों, आकारों और रूपों के प्रति मुग्ध एवं जिज्ञासु होते हैं। दूसरों से जुड़ने और उनके साथ अपनी भावनाओं को साझा करने की यह योग्यता सीखने का विशेष आधार बनती है। बच्चों में संसार को अनुभव करने वाली योग्यता अधिक समृद्ध और विभिन्नता प्रदान करने वाली होती है। अपने परिवेश की खोजबीन करने हेतु बच्चे प्रेक्षण, प्रश्न पूछने, चर्चा करने, अनुमान लगाने, विश्लेषण करने, खोज करने, जाँच-पड़ताल करने और प्रयोग करने में व्यस्त हो जाते हैं। इस प्रक्रिया में वे व्यापक और विस्तृत संकल्पनाओं और विचारों की रचना करते हैं, उनमें सुधार करते हैं और उन्हें विकसित करते हैं। बच्चों को प्रेक्षण, खोजबीन और जाँच-पड़ताल के पर्याप्त अवसर देने की आवश्यकता होती है, ताकि वे अपने आस-पास के और व्यापक परिवेश की समझ विकसित कर सकें।

छोटे बच्चे एक भावनात्मक रूप से सहायक और सक्षम परिवेश में सबसे अच्छी तरह सीखते हैं, जहाँ एक उत्तरदायी शिक्षक बच्चों के साथ सुरक्षित और सुदृढ़ संबंध बनाने में मदद करता है। ऐसे वातावरण में बच्चे खोजबीन करने, अभिव्यक्त करने, सीखने और आत्मविश्वास हासिल करने हेतु स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं। साथ ही यह स्वाभाविक न्याय (इक्विटी) को प्रोत्साहित करता है, विद्यालय की उपस्थिति में सुधार लाता है, मानव संसाधन में उच्च योगदान अर्पित करता है और समुदायों तथा समाजों को व्यापक लाभ भी पहुँचाता है। अतः प्रत्येक बच्चे

*रा.शै.अ.प्र.प. की *पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश* पुस्तिका को देखें।

© NCERT not to be republished

को समर्थ बनाने वाला वातावरण सुनिश्चित करने के लिए इन प्रारंभिक वर्षों में निवेश करना महत्वपूर्ण होता है, जो कि न केवल उनका अधिकार है, बल्कि जीवनपर्यंत सीखने की नींव डालने का एक तरीका भी है। ऐसा बेहतर प्रावधान सुनिश्चित करके छोटे बच्चों को गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा दी जा सकती है।

भारत सरकार ने पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की गुणवत्ता को सुधारने के लिए कई प्रावधान किए हैं, जैसे— स्वास्थ्य और देखभाल सुविधाओं की उपलब्धि, आधारिक संरचना, पाठ्यचर्या, शिक्षक-प्रशिक्षण और शिक्षण-अधिगम को बढ़ावा देने के प्रयास। (राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986, राष्ट्रीय पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2005, राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा नीति 2013, राष्ट्रीय प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा पाठ्यचर्या की रूपरेखा 2013 और प्रारंभिक देखभाल और शिक्षा के लिए गुणवत्ता मानक, 2013)। अभी हाल में किए गए सर्वेक्षण के अनुसार देश में 3 से 8 वर्ष के बच्चों अर्थात विद्यालय-पूर्व और प्रारंभिक विद्यालय शिक्षा (कक्षा 1 और 2) के लिए प्रावधानों तक पहुँच में वृद्धि हुई है। शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 के लागू होने के साथ, अब सभी बच्चों से अपेक्षा की जाती है कि वे 6 वर्ष के होने पर विद्यालय आएँ। शोध द्वारा पता चलता है कि बच्चों की एक बड़ी संख्या अपर्याप्त विद्यालयी तैयारी के साथ प्राथमिक कक्षाओं में प्रवेश लेती है जिसकी वजह से उनके सीखने का स्तर कम रह जाता है तथा विद्यालय से बाहर होने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं। साथ ही, राष्ट्रीय स्तर पर एक ऐसे पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के लिए मानक प्रतिमान की आवश्यकता है जो लचीला हो और प्रासंगिकता के अनुसार कार्यान्वयन कर्ताओं द्वारा अनुकूल बनाया जा सके।

प्रारंभिक वर्षों में बच्चों को विकास एवं आयु अनुरूप उपयुक्त सीखने के अवसर देने की आवश्यकता है जो उन्हें औपचारिक शिक्षा के लिए तैयार करते हैं और विद्यालय शिक्षा में प्रवेश को सहज और निर्बाध बनाते हैं। इस संदर्भ में, गुणवत्तावूर्ण पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम को प्रभावी रूप से लागू करने के लिए एक दिशा-निर्देश पुस्तिका विकसित करने की आवश्यकता महसूस की गई।

यह दिशा-निर्देश किसके लिए हैं?

यह दिशा-निर्देश सरकारी और निजी, दोनों क्षेत्रों के शिक्षकों, शिक्षक-प्रशिक्षकों, नियोजकों, अनुसंधानकर्ताओं, प्रशासकों और पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के मालिकों के लिए हैं। यह दिशा-निर्देश आवश्यक भौतिक आधारिक संरचनाओं, शिक्षक-विद्यार्थी अनुपात, स्टाफ की योग्यताओं, वेतन और उनकी भूमिकाओं तथा उत्तरदायित्वों के बारे में जानकारी देते हैं। यह प्रवेश प्रक्रिया, सुरक्षा, स्वास्थ्य, स्वच्छता और पोषण के साथ-साथ बनाए जाने वाले रिकॉर्डों और रजिस्टरों पर प्रकाश डालते हैं। यह पाठ्यचर्या का संक्षिप्त परिचय देते हैं और समन्वयनता अभिसरण की आवश्यकता पर ध्यान केंद्रित करते हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की परिभाषा

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा वह शिक्षा है जो 3–6 वर्ष के आयुवर्ग के बच्चों को दी जाती है। यह संयोजित शिक्षा का पहला स्तर है। पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को प्री-स्कूल

© NCERT not to be republished

शिक्षा के नाम से भी जाना जाता है। यह सरकारी और निजी विद्यालयों में किसी भी एक व्यवस्था, जैसे— आँगनबाड़ी, नर्सरी स्कूल, प्री-स्कूल, प्रिपरेटरी स्कूल, किंडरगार्डन, मॉन्टेसरी स्कूल और पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के नाम से दी जाती है।

- यह निर्देश कक्षा 1 से पूर्व 3 वर्ष की पूर्व-प्राथमिक शिक्षा पर बात करते हैं।
- 3 वर्ष की आयु पूरी होने पर पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में प्रवेश की अनुशंसा की गई है।
- यह दिशा-निर्देश 3 वर्ष से कम आयु के बच्चों के संबंध में बात नहीं करते हैं।
- यह 3–6 वर्षों की आयु के बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं पर बात करते हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा की परिकल्पना

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा 3–6 वर्ष के आयुवर्ग के सभी बच्चों के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने के लिए सर्वव्यापक, न्यायसंगत, आनंददायक, समावेशी और संदर्भित सीखने के अवसरों की उपलब्धता को बढ़ावा देने पर विचार करती है। यह सब अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा बच्चों को भावात्मक रूप से समर्पित, सांस्कृतिक रूप से स्थापित, बाल-अभिमुखी, प्रेरक अधिगम वातावरण उपलब्ध कराके सुनिश्चित किया जा सकता है। यह खेल और विकास-संबंधी उपयुक्त पद्धतियों के माध्यम से जीवन भर सीखने के लिए प्रबल आधार निर्मित करके अभिव्यक्ति क्षमता को अधिकतम करने पर लक्षित होती है। यह स्वस्थ प्रवृति, अच्छे मूल्य, विवेचनात्मक चिंतन, सहयोग, संप्रेषण, रचनात्मकता, प्रौद्योगिकी, साक्षरता तथा सामाजिक-भावात्मक विकास को विकसित करना और पूर्व-प्राथमिक विद्यालय से प्राथमिक विद्यालय में आना भी सुनिश्चित करती है। इससे बच्चे भविष्य में उत्पादक और संतोषप्रद जीवन प्राप्त करते हैं।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लक्ष्य

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के अति महत्वपूर्ण लक्ष्य हैं—

- सर्वांगीण विकास और जीवनपर्यंत सीखने के लिए सुदृढ़ आधार उपलब्ध कराना।
- बच्चे को विद्यालय के लिए तैयार करना।

पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के उद्देश्य

- बाल-हितैषी वातावरण सुनिश्चित करना, जहाँ प्रत्येक बच्चे का महत्व हो, उसे आदर मिले, वह सुरक्षा और सुदृढ़ता का अनुभव करें और एक सकारात्मक आत्मधारणा विकसित करें।
- अच्छे स्वास्थ्य, खुशहाली, पोषण, स्वस्थ आदतें और स्वच्छता के लिए ठोस आधार तैयार करना।
- बच्चों को प्रभावी संप्रेषक बनने और ग्रहणशील तथा भावबोधक दोनों भाषाओं को विकसित करने में सक्षम बनाना।
- बच्चों को भागीदारी शिक्षार्थी बनने, विवेचनात्मक रूप से सोचने, रचनात्मक, भागीदार, संप्रेषक बनने और अपने आसपास के परिवेश से जुड़ने में मदद करना।
- बच्चों द्वारा पूर्व-प्राथमिक से प्राथमिक विद्यालय में बदलाव को सहज रूप से समायोजित करना।
- अभिभावकों और समुदायों के साथ हर बच्चे के विकास के अवसर प्रदान करने हेतु एक जोड़ीदार के रूप में कार्य करना।

© NCERT not to be republished

पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के वर्तमान मॉडल

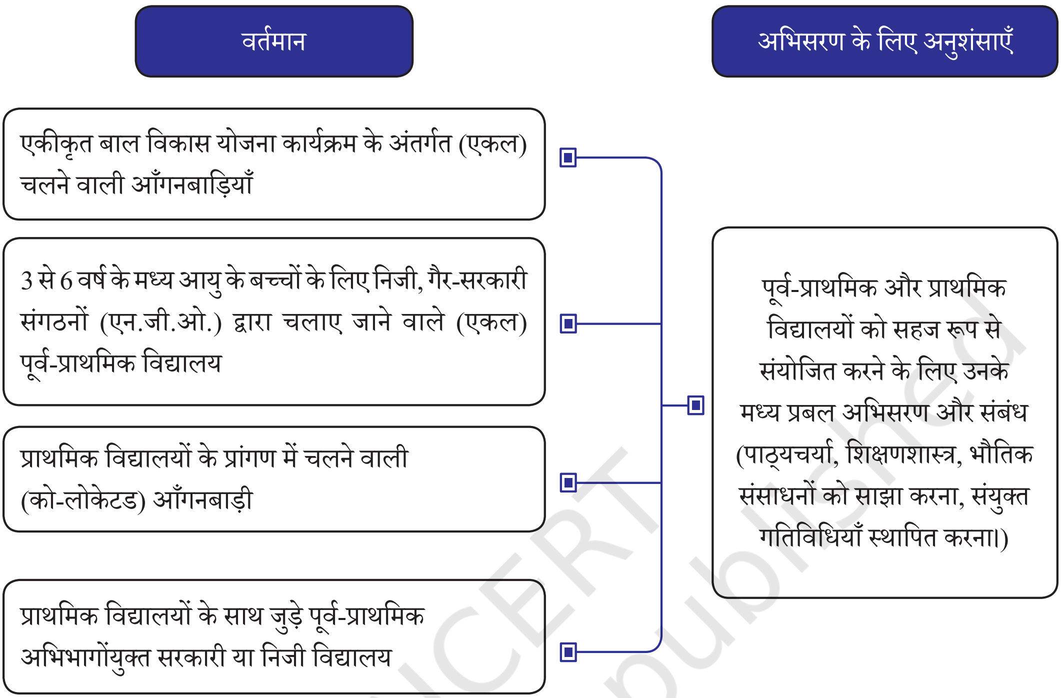

© NCERT not to be republished

देश में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम उपलब्ध हैं। वर्तमान मॉडलों में आँगनबाड़ी, निजी पूर्व-प्राथमिक विद्यालय (स्वचालित), पूर्व-प्राथमिक अभिभागों वाले सरकारी/निजी विद्यालय और सरकारी प्राथमिक विद्यालयों में स्थित आँगनबाड़ी शामिल हैं।

प्राथमिक कक्षाओं के साथ संयोजन (लिंकेज)

पूर्व-प्राथमिक और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षाएँ शिक्षा के लिए, विद्यालय के लिए और जीवन के लिए बुनियादी स्तर का निर्माण करती हैं। 3–z8 वर्ष की आयुवर्ग के बच्चे विकासात्मक सततता प्रदर्शित करते हैं, अतः पाठ्यचर्या, शिक्षणशास्त्र और सीखने के प्रतिफलों के बीच ऊर्ध्वामुखी संबंध (upward linkage) होने की आवश्यकता है। इसके लिए संबंध के तीन क्षेत्रों की पहचान की गई है, जो हैं— व्यवस्थाएँ, तंत्र और व्यक्ति। ऐसे संबंधों को निम्न प्रकार सुनिश्चित किया जा सकता है—

- पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों को प्राथमिक विद्यालयों के परिसर या उनके आस-पास स्थापित करना।
- कक्षा 1 और 2 की भौतिक व्यवस्थाओं को पूर्व-प्राथमिक विद्यालयों के समान ही नियोजित किया जाना चाहिए, जिसमें गतिविधि कोने,

मुद्रित सामग्री से समृद्ध परिवेश और बच्चों के कार्य का प्रदर्शन हो।

- बैठने की व्यवस्था हो, जिसमें बच्चे आपस में बातचीत कर सकें और अनुभव साझा कर सकें, समस्या-समाधान कौशल, सहन करने/सामना करने के कौशल विकसित कर सकें, नियमों का पालन करें और सामाजिक तथा भावात्मक स्वस्थता की समझ प्राप्त कर सकें।
- सिखाने और सीखने में समान शिक्षणशास्त्रीय प्रक्रियाओं का उपयोग करने के साथ-साथ विद्यालय के भौतिक तथा सामाजिक-भावात्मक परिवेश (आधारित-संरचना, संसाधनों, शिक्षक -बालक पारस्परिक क्रियाएँ आदि) के विषय में अच्छी जानकारी बनाए रखें।
- पूर्व-प्राथमिक और प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में की जाने वाली गतिविधियों और बच्चों के पोर्टफोलियो के माध्यम से उनकी प्रगति को साझा करने के लिए निरंतर बातचीत होनी चाहिए।
- प्राथमिक कक्षाओं के साथ संसाधनों को साझा करने और वार्षिक दिवस, खेलकूद दिवस, प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा दिवस, त्यौहार, बाल मेला, वृक्षारोपण दिवस जैसी गतिविधियों को साथ-साथ करने की आवश्यकता है।

भौतिक आधारभूत संरचना

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय मूलतः एक खेल और गतिविधि-आधारित कार्यक्रम है जिसके लिए भीतर और बाहर उपलब्ध स्थान सहित पर्याप्त आधारभूत संरचना की पूर्वापेक्षा होती है। पर्याप्त आधारभूत संरचना का अर्थ आसानी से आवागमन के लिए पर्याप्त स्थान का होना मात्र नहीं है, बल्कि यह सुरक्षा, सफाई, प्रकाश, वायु संचार तथा परिवहन के संदर्भों में भी उपयुक्त होनी चाहिए। एक गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम चलाने के लिए अनिवार्य एवं वांछित भौतिक आधारभूत संरचना नीचे दी जा रही है—

स्थान

अनिवार्य

जिस भवन में पूर्व-प्राथमिक विद्यालय चल रहा हो, उसका स्थान ऐसा होना चाहिए कि—

- वहाँ तक बच्चे आसानी से पहुँच सकें।
- वह भारी यातायात, तालाबों, खाइयों, नालों, कचरे के ढेरों, पशुओं के छतदार बाड़ों, कीचड़, पानी के गड्ढ़ों और बिना ढकी नालियों से दूर होना चाहिए।
- वह एक चारदिवारी या बाड़ से घिरा होना चाहिए और साथ ही एक द्वार होना चाहिए, जिससे उसकी सुरक्षा सुनिश्चित की गई हो।

वांछनीय

- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय भूतल पर स्थित होना चाहिए।
- वहाँ वाहनों के आसानी से पहुँचने और सामान पहुँचाने का सीधा मार्ग होना चाहिए।
- जहाँ तक हो, पूर्व-प्राथमिक विद्यालय प्राथमिक विद्यालय परिसर में ही स्थित होना चाहिए

अथवा प्राथमिक विद्यालय के पास या बगल में होना चाहिए।

- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के आस-पास प्रचुर मात्रा में प्राकृतिक संसाधन होने चाहिए, जिनका उपयोग शैक्षिक सामग्री के रूप में किया जा सके।

खेल और गतिविधि क्षेत्र (बाह्य और आंतरिक क्षेत्र)

बाह्य क्षेत्र

अनिवार्य

- बाह्य खेल क्षेत्र काफ़ी बड़ा होना चाहिए अर्थात कम से कम 300/450 (15 × 20/30) वर्ग मीटर प्रति 25 बच्चे, जहाँ बच्चे सुरक्षित रूप से खेल सकें और चारों ओर दौड़ सकें।
- विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों के लिए खेल का मैदान और सामग्री उनकी आवश्यकताओं के अनुरूप होनी चाहिए।

वांछनीय

- एक रेत से खेलने का क्षेत्र किसी छायादार और बाड़े से घिरे स्थान जैसे पेड़ के नीचे बनाया जा सकता है।
- पानी से खेलने का क्षेत्र बनाया जा सकता है या एक पानी का टब भीतर या बाहर दोनों क्षेत्रों में उपयोग किया जा सकता है।

आंतरिक क्षेत्र

- अधिकतम 25 बच्चों को जगह देने के लिए एक पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कक्षा-कक्ष का मानक फर्श क्षेत्र कम से कम 35 (5 × 7) वर्ग मीटर होना चाहिए।
- यह स्थान भली-भाँति वायु संचारित और प्रकाशित होना चाहिए। इसमें उचित छत, खिड़कियाँ, दरवाजे और फर्श होने चाहिए तथा जहाँ आवश्यकता हो, चटाइयों का प्रावधान होना चाहिए।
- कुर्सियों और मेजों का आकार बच्चों के अनुरूप होना चाहिए।
- लचीली कक्षा-कक्ष व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए एक के ऊपर एक रखा जा सकने वाला बाल-अनुरूप फर्नीचर होना चाहिए जिसे खेल गतिविधियों के अनुसार आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाया जा सके।
- बच्चों की ऊँचाई के अनुरूप एक ब्लैकबोर्ड का प्रावधान होना चाहिए।
- घेरा समय/बड़े समूह की गतिविधियों के लिए एक दरी/गद्दा उपलब्ध कराया जाना चाहिए।
- खेलने और सीखने की सामग्री रखने के लिए कम ऊँचाई के खुले शेल्फ या खुली बड़ी टोकरियाँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए। इन पर चित्र और मुद्रित लेबल लगे हों, जिससे छोटे बच्चों में मुद्रित सामग्री को पढ़ने की जिज्ञासा पैदा हो।
- रोशनी, पंखों और बिजली के अन्य उपकरणों के लिए बिजली उपलब्ध होनी चाहिए।
- मोम के रंग (क्रेयॉन), विविध प्रकार के कागज़, स्केच पेन, रंगीन चॉक आदि जैसी सामग्री का नियमित प्रावधान और आपूर्ति होनी चाहिए।

कक्षा-कक्ष में गतिविधि क्षेत्र बनाए जाने चाहिए। यदि जगह की कमी है तो विषयवस्तु और बच्चों की आवश्यकताओं के अनुसार बदल-बदल कर/

© NCERT not to be republished

अस्थायी रूप से गतिविधि क्षेत्र बनाए जा सकते हैं। गतिविधि क्षेत्रों को बनाते समय ध्यान रखना चाहिए कि वे कमरे के हर भाग से दिखाई दें। इससे शिक्षक सभी बच्चों पर नज़र रख सकेगा। नीचे कुछ प्रस्तावित गतिविधि क्षेत्र दिए गए हैं, जिन्हें बच्चों के लिए पर्याप्त सामग्री के साथ सुसज्जित किया जाना चाहिए।

पुस्तक क्षेत्र— इस क्षेत्र में बच्चों की आयु के अनुरूप विविध प्रकार की पत्रिकाएँ, जानकारी देने वाली पुस्तकें, चित्र पुस्तकें, कहानियों की पुस्तकें, बड़ी पुस्तकें, स्थानीय लोक कथाएँ, विषय-आधारित पुस्तकें, कॉमिक्स, स्लेटें, पेंसिलें, चॉक आदि होनी चाहिए।

गुड़िया क्षेत्र/नाटकीय प्रस्तुति क्षेत्र— इस क्षेत्र की सामग्री में विभिन्न प्रकार की गुड़िया, गुड़िया के आकार का फर्नीचर और कपड़े, गुड़िया के आकार के खाना बनाने के बर्तन (बर्तन, प्लेटें, चम्मच आदि), नकली भोजन पदार्थ (मिट्टी की बनी सब्ज़ियाँ या फल), पहनने के कपड़े (स्कार्फ, टोपी, दुपट्टा, जैकेट, छोटी साड़ी, कपड़े के लंबे टुकड़े आदि), कंघी, दर्पण, चलने की छड़ी, पुराने चश्मे, खिलौने, टेलीफोन या कैमरे, एक बक्सा और एक खाने का डिब्बा शामिल किए जा सकते हैं।

खोजबीन क्षेत्र— इसमें आवर्धक लेंस, शंख, पौधे, बीज, चुंबक, लोहे की वस्तुएँ, तराज़ू, बाट, नापने के टेप या कोई अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री रखी जा सकती है।

ब्लॉक निर्माण क्षेत्र— इस क्षेत्र में विभिन्न रंगों, आकृतियों रंगों, आकृतियों और आकारों के विविध ब्लॉक (गुटके) जैसे खोखले ब्लॉक, आपस में जुड़ जाने वाले ब्लॉक, फोम के ब्लॉक, लकड़ी के ब्लॉक आदि रखे जा सकते हैं।

हस्तकौशल युक्त क्षेत्र— इस क्षेत्र में हस्तकौशल युक्त सामग्री होनी चाहिए, जैसे— पहेलियाँ, मिलान कार्ड, लेस कार्ड, बीज, क्रमबद्ध आकृतियाँ, इनसेट बोर्ड, शंख, छाँटने के लिए सामग्री, धागे और मनके, छोटे खिलौने (कार, ट्रक, जंतु), खिलौना आकृति, टुकड़ों में बँटने वाले खिलौने, नंबर छड़ी, एबेकस और पर्यावरण से अन्य वस्तुएँ, जैसे— पत्तियाँ, पत्थर, कंकड़, तिनके, फूल आदि।

कला क्षेत्र— इस क्षेत्र में शामिल सामग्री होनी चाहिए— विभिन्न प्रकार के कागज़ (लाइनों वाले, बिना लाइनों वाले), क्रेयॉन, पेंसिलें, मिटाए जा सकने वाले मार्कर, स्लेटें, रंगीन चॉक, कपड़ों के टुकड़े, पेंट, ब्रश, टेप, खेलने के लिए गूँधा हुआ आटा/मिट्टी, रोलिंग पिन, बोर्ड, स्टेंसिल, पुराने अखबार, पत्रिकाएँ, आईस्क्रीम स्टिक्स और अन्य स्थानीय रूप से उपलब्ध सामग्री।

संगीत और गति क्षेत्र— संगीत क्षेत्र में ढफली, घंटियाँ, प्याले, बाँसुरियाँ, वाद्ययंत्र, संगीत उपकरण और गानों, कविताओं तथा शिशु गीतों की विविध डी.वी.डी. होनी चाहिए। इस क्षेत्र में रिबन या स्कार्फ जैसी वस्तुएँ हो सकती हैं जिसे बच्चे रचनात्मक गति/लय को दर्शाने के लिए मंच सामग्री के रूप में उपयोग में ले सकते हैं।

वांछनीय

- प्रत्येक पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में शिक्षकों और बच्चों के लिए पुस्तकालय होना चाहिए

© NCERT not to be republished

जिसमें उपयुक्त संसाधन सामग्री और श्रव्य-दृश्य सहायक सामग्री होनी चाहिए।

सूचना और संचार प्रौद्योगिकी (आई.सी.टी.) के लिए सुविधाएँ

वांछनीय

- टेलीविज़न/संगीत उपकरण, पर्दे सहित एल.सी.डी. प्रोजेक्ट, कंप्यूटर, स्मार्ट बोर्ड/इंटरएक्टिव व्हाइट बोर्ड, डिजिटल कैमरा, डी.वी.डी./सी.डी. आदि का उपयोग पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम में किया जा सकता है।
- आई.सी.टी. का उपयोग पूर्व-प्राथमिक और प्रारंभिक प्राथमिक कक्षा के बच्चों को संयुक्त रूप से अनुभव कराने के लिए किया जा सकता है, जैसे— कहानी, संगीत और नृत्य अनुभव आदि को पर्दे पर दिखाना।
- शिक्षक उपलब्ध ई-संसाधनों, जैसे—इंटरएक्टिव वेबसाइट्स, शैक्षिक ऐप्स, शैक्षिक वीडियो साइट्स, डिजिटल कहानी सुनाना और ई-पुस्तकों का उपयोग कर सकते हैं।
- शिक्षक ऑनलाइन संगठनों से भी जुड़ सकते हैं, जहाँ वे अपने कंप्यूटर डेस्कटॉप और मोबाइल फोन पर पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के विद्यार्थियों की शिक्षा के लिए बहुत अधिक काम में आने वाली वेबसाइटों को इकट्ठा और व्यवस्थित कर सकते हैं।

स्टाफ के लिए सुविधाएँ

- पूर्व-प्राथमिक विद्यालय स्टाफ के लिए अपनी व्यक्तिगत चीज़ें (शिक्षक डायरी, बच्चों के वर्णनात्मक रिकॉर्ड आदि) रखने के लिए, गतिविधियों की योजना बनाने और उन पर चर्चा करने, प्रशासनिक कार्य करने और अभिभावकों के साथ बैठकें करने के लिए एक अलग स्थान या कमरा होना चाहिए।
- कमरे में मेज, कुर्सियाँ, बेंच और छोटी अलमारियाँ उपलब्ध होनी चाहिए।
- स्टाफ के लिए एक अलग शौचालय होना चाहिए।

पीने के पानी और हाथ धोने के लिए सुविधाएँ

- स्वच्छ पीने का पानी और हाथ धोने की सुविधाएँ उपलब्ध कराई जानी चाहिए।
- यदि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में जल शुद्धिकरण के उपकरण उपयोग में लाए जा रहे हैं, तो इनकी नियमित सफ़ाई और रख-रखाव होना चाहिए।
- उपयोग के बाद गिलासों/कपों को धोने का प्रावधान होना चाहिए।

शौचालय सुविधा

- बच्चों के अनुकूल शौचालय होने चाहिए। लड़कों, लड़कियों तथा विशेष आवश्यकता वाले बच्चों के लिए अलग शौचालय हों।
- शौचालय सुरक्षित होने चाहिए। उनका रख-रखाव और जल आपूर्ति नियमित होनी चाहिए।
- हाथ धोने के लिए साबुन और एक साफ़ तौलिया होना चाहिए।

© NCERT not to be republished

- शौचालय में लगी वस्तुएँ और सिंक बच्चों की पहुँच के अनुसार होनी चाहिए।
- शौचालय की नियमित सफाई की व्यवस्था होनी चाहिए।

सोने/विश्राम की सुविधाएँ

- यदि पूर्व-प्राथमिक विद्यालय की समयावधि प्राथमिक विद्यालय के अनुरूप चार घंटे से अधिक है, तो सभी बच्चों के लिए झपकी या विश्राम की व्यवस्था की जानी चाहिए।
- साफ गद्दों और चादरों की व्यवस्था की जानी चाहिए।

परिवहन सुविधा

राज्य/संघ राज्य क्षेत्र बच्चों को उनकी आवश्यकतानुसार सुरक्षित परिवहन सुविधाएँ उपलब्ध कराने के लिए अपनी स्वयं की दिशा-निर्देश पुस्तिका विकसित करें।

भंडारण स्थान

अनिवार्य

कागज़/क्रेयॉन/स्केच पेन, चार्ट, शिक्षण सहायक सामग्री, फोल्डर और पोर्टफोलियो आदि जैसी वस्तुओं को रखने के लिए स्थान (शिक्षक और बच्चों, दोनों के लिए) उपलब्ध कराया जाना चाहिए।

वांछनीय

प्रत्येक बच्चे को उसके व्यक्तिगत उपयोग के लिए कम ऊँचा शेल्फ/लॉकर उपलब्ध कराना चाहिए। ये बच्चे की ऊँचाई पर उसकी सहज पहुँच में होने चाहिए।

बाधारहित परिवेश

विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों को शामिल करने के लिए निम्नलिखित को सुनिश्चित करना चाहिए—

- कक्षा-कक्ष की व्यवस्था ऐसी हो कि कक्षा में सभी बच्चों का आवागमन सहज हो।
- हत्थों वाले रैंप।
- सभी गतिविधि क्षेत्रों में खेल उपकरण और सामग्री, फर्नीचर तथा अन्य सुविधाएँ।
- संशोधित उपकरणयुक्त शौचालय।

पूर्व-प्राथमिक विद्यालय स्टाफ

एक पूर्व-प्राथमिक विद्यालय में ऐसा समर्पित स्टाफ होना चाहिए, जो पूर्व-प्राथमिक केंद्रों में बच्चों के लिए एक सौहार्द्रपूर्ण और आनंददायक वातावरण बनाने में सहयोग कर सके। पूर्व-प्राथमिक स्टाफ, विशेष रूप से शिक्षक, बच्चों को कक्षा-कक्ष के भीतर और बाहर अवसर उपलब्ध कराते हैं। शिक्षकों के अलावा, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के सफलतापूर्वक संचालन के लिए प्रशासक तथा सहायक समान रूप से महत्वपूर्ण होते हैं। उनके अनुभवों, शिक्षा और पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के प्रति समर्पण के आधार पर उनका सावधानीपूर्वक चयन होना चाहिए। स्टाफ सदस्यों की योगयता, बच्चों के सीखने और पूर्व-प्राथमिक केंद्रों के उचित संचालन में उनकी भूमिका, आदर्श शिक्षक-बालक अनुपात, उनकी वेतन संरचना, भर्ती और सेवा शर्तें, साथ ही उनके व्यावसायिक विकास की चर्चा नीचे की गई है।

© NCERT not to be republished

सुझावित स्टाफ, योग्यता और वेतन स्वरूप

योग्यता और वेतन	अनिवार्य स्टाफ	वांछनीय स्टाफ
मापदंडों के अनुसार वेतन सरकारी मापदंडो के अनुसार	**प्रशासक** विद्यालय का प्राचार्य/प्राथमिक विद्यालय के हेडमास्टर	**पर्यवेक्षक या प्रभारी** जहाँ पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम के लिए 4 से अधिक अनुभाग हैं। सबसे वरिष्ठ शिक्षक को पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम का प्रभारी बनाया जाना चाहिए।
कक्षा 12 उत्तीर्ण, साथ में एन.सी.टी.ई. द्वारा मान्य पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में 2 वर्ष का डिप्लोमा प्राथमिक शिक्षक के लिए मापदंडों के अनुसार वेतन	**शिक्षक** 3–4 वर्ष के 20 बच्चों के लिए एक शिक्षक और एक सहायक 4–6 वर्ष के 25 बच्चों के साथ एक शिक्षक	**सहायक शिक्षक** जहाँ 25 से अधिक बच्चे कक्षा में हों, वहाँ एक सहायक शिक्षक की अनुशंसा की जाती है।
कक्षा 10 उत्तीर्ण, न्यूनतम आयु 18 वर्ष, पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में प्रेरण प्रशिक्षण दिया जाए। अर्ध-कुशल व्यक्तियों के लिए राज्य के मापदंडों के अनुसार वेतन	**सहायक** 3–6 वर्ष तक के 20–25 बच्चों के लिए एक	
	सुरक्षागार्ड	**अभिभावक स्वयंसेवी** स्थानीय शिल्पकार, कारीगर, बच्चों के साथ काम करने के लिए तैयार हों, कला और शिल्प प्रशिक्षक, संगीत प्रशिक्षक
	सहायक स्टाफ रसोईया, लेखा कर्मचारी, चपरासी और बागवान	

© NCERT not to be republished

पूर्व-प्राथमिक शिक्षक

3 से 6 वर्ष के आयु के बच्चों के सर्वांगीण विकास और जीवनपर्यंत सीखने की नींव डालने के लिए पूर्व-प्राथमिक विद्यालय बहुत महत्वपूर्ण होते हैं। इस अवस्था में किसी भी बच्चे को एक शिक्षक की आवश्यकता होती है, जो योगयता प्राप्त और भली प्रकार प्रशिक्षित हो, जिसमें छोटे बच्चों को पढ़ाने का जुनून हो, उनके साथ बातचीत करने

और खेलने में जिसे आनंद आए, जो प्रश्न पूछने के लिए प्रोत्साहित करने वाला और बच्चों की साझेदारी को बढ़ाने वाला हो। अतः पूर्व-प्राथमिक विद्यालय शिक्षक से अपेक्षा की जाती है कि वह एक उपयुक्त वातावरण, बाल-अनुकूल सामग्री, आयु-उपयुक्त खेल गतिविधियाँ उपलब्ध कराकर तथा अर्थपूर्ण पारस्परिक क्रियाओं और समर्थन द्वारा बच्चों के सीखने को मार्गदर्शन देकर, विकासात्मक रूप से उपयुक्त उच्च गुणवत्तापूर्ण पूर्व-प्राथमिक शिक्षा कार्यक्रम की योजना तैयार करे। उसे छोटे बच्चों के प्रति आवश्यक संवेदनशीलता और उनके विकास-संबंधी आवश्यकताओं की समझ के साथ-साथ बाल्यावस्था अनुभवों की विविधता के ज्ञान और कौशलों को प्रदर्शित करना चाहिए। तदनुसार उसे उनके लिए अवसरों तथा अनुभवों की योजना बनानी चाहिए जो सांदर्भिक रूप से प्रासंगिक हों और उनके सर्वोत्तम विकास में योगदान दें।

अतः यह अत्यावश्यक है कि पूर्व-प्राथमिक शिक्षक के पास उपयुक्त अकादमिक योग्यता हो, वह व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित हो, उसे समय-समय पर परामर्श दिया जाए और उसे प्राथमिक शिक्षकों के समान वेतन देकर समर्थन तथा प्रोत्साहन दिया जाए और वह करियर में बढ़त प्राप्त करे।

चूँकि पूर्व-प्राथमिक शिक्षा अभी एक अनियंत्रित क्षेत्र है और इसे एकीकृत बाल विकास योजना तथा निजी विद्यालयों द्वारा चलाया जा रहा है, यह संभावना है कि इस प्रणाली में बड़ी संख्या में अप्रशिक्षित शिक्षक या आँगनबाड़ी कार्यकर्ता हों जो पूर्व-प्राथमिक शिक्षा दे रहे हों।

अब पूर्व-प्राथमिक शिक्षा को विद्यालयी शिक्षा का एक अभिन्न अंग मान लिया गया है, अतः राज्यों के लिए यह महत्वपूर्ण है कि वे पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों के लिए प्राथमिक शिक्षकों के समान ही एक संवर्ग बनाएँ और शिक्षा के इस स्तर के लिए व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए संपूर्ण राज्यों में शिक्षक विकास सुविधाओं (सेवा-पूर्व तथा सेवाकालीन) का विस्तार करें।

सेवा-पूर्व प्रशिक्षण

वर्तमान में राष्ट्रीय शिक्षक शिक्षा परिषद (एन.सी.ई.टी.), जो कि शिक्षक शिक्षा की गुणवत्ता नियंत्रण के लिए एक संवैधानिक संस्था है, ने पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों के लिए न्यूनतम योग्यता कक्षा 12 के साथ दो वर्ष का पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में डिप्लोमा निर्धारित किया है। राज्यों को चाहिए कि वे इस शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम की उपलब्धता को राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् (एस.सी.ई.आर.टी.), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान (डाइट्स) में स्थापित करें और संकाय को प्रशिक्षित कर प्रोत्साहन दें। साथ ही, जब भी व्यावसायिक रूप से प्रशिक्षित शिक्षकों की उपलब्धता बढ़ाने की आवश्यकता हो तो निजी संस्थानों को भी प्रोत्साहित करें।

सेवाकालीन प्रशिक्षण/व्यावसायिक विकास

पूर्व-प्राथमिक शिक्षकों के लिए सेवाकालिन प्रशिक्षण तथा अन्य व्यावसायिक विकास के अवसरों की रूपरेखा बनाने और उन्हें उपलब्ध कराने की

आवश्यकता है, क्योंकि ये शिक्षकों को अपने क्षेत्र में ज्ञान साझा करने, परस्पर संपर्क बनाने और आधुनिक जानकारी रखने के अवसर देते हैं। व्यावसायिक विकास प्रक्रिया निरंतर होनी चाहिए, जो शिक्षकों के कौशलों तथा ज्ञान के विकास को बढ़ावा और विस्तार देगी।

पहले से सेवारत अप्रशिक्षित शिक्षकों/आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं के लिए, वर्तमान स्टाफ की योग्यताओं की रूपरेखा (एन.एस.क्यू.एफ.) के अंतर्गत गहन कौशल कार्यक्रम उपलब्ध कराकर अवसर दिए जा सकते हैं, जिसमें वांछनीय प्रमाणपत्र प्राप्त करने के लिए पूर्व अधिगम की मान्यता (आर.पी.एल.) और श्रेय (credit) संग्रहण तथा बहुप्रवेश और बहुनिकास विकल्पों के साथ लचीलेपन का प्रावधान होता है। ये कार्यक्रम संपर्क कार्यक्रमों द्वारा या खुले और दूरस्थ और मिश्रित तरीकों से कराए जा सकते हैं। इस लचीलेपन को अनुकूल बनाने के लिए वेतन संरचना में बदलाव किया जा सकता है। सेवाकालीन शिक्षा तथा प्रशिक्षण को 'कार्य स्थल पर' (On the job) संचालित किया जा सकता है अथवा बाहरी स्त्रोत जैसे प्रशिक्षण संस्थानों या महाविद्यालयों द्वारा दिया जा सकता है। यह कार्यशालाओं, सम्मेलनों, विषय प्रशिक्षण, क्षेत्र-आधारित परामर्श प्रशिक्षण, पर्यवेक्षित अभ्यासों और सबसे महत्वपूर्ण कि उसी स्थल पर परामर्श द्वारा दिया जा सकता है।

विश्वविद्यालयों, एस.सी.ई.आर.टी. और डी.आई.ई.टी. जैसे संस्थानों को पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में विशिष्ट प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध कराने के लिए मदद और प्रोत्साहन दिया जाना चाहिए, जो (i) संपर्क कार्यक्रमों, (ii) खुले और दूरस्थ तरीके से या (iii) मिश्रित तरीके (संपर्क और दूरस्थ का मिश्रण) से दिया जा सकता है। प्रशिक्षण कार्यक्रमों में पूर्व-प्राथमिक/आँगनबाड़ी में पर्यवेक्षित प्रशिक्षण (इंटर्नशिप) का घटक होने का भी सुझाव दिया जाता है।

मुख्य पदाधिकारियों के लिए नेतृत्व विकास/अभिविन्यास कार्यक्रम

प्रबंधकीय स्टाफ, जैसे— जिला शिक्षा अधिकारी (डी.ई.ओ.), प्राथमिक विद्यालयों के प्रधानाध्यापक, बाल विकास परियोजना अधिकारी (सी.डी.पी.ओ.), सुपरवाइजर और अन्य व्यावसायिक विकास में मदद देने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। नेतृत्व द्वारा स्टाफ की गुणवत्ता को बनाए रखा जाता है जो टीम के रूप में कार्य करने, जानकारी साझा करने और व्यावसायिक स्टाफ के विकास को प्रेरित तथा प्रोत्साहित करती है। अतः कार्यक्रमों में शामिल सभी पदाधिकारियों को प्रारंभिक वर्षों के महत्व, खेलने और गतिविधि-आधारित शिक्षाशास्त्र तथा गुणवत्ता सुनिश्चित करने में उनकी भूमिका के बारे में अभिविन्यस्त करना बहुत महत्वपूर्ण है।

पूर्व-प्राथमिक स्टाफ के व्यावसायिक विकास के लिए विभिन्न राज्यों/केंद्रशासित प्रदेशों और संगठनों द्वारा कुछ अंतरिम उपाय किए गए हैं।

इनमें से कुछ उपाय उदाहरण के रूप में यहाँ दिए जा रहे हैं—

© NCERT not to be republished

उदाहरणस्वरूप अंतरिम उपाय		
क्र. सं.	**संगठन का नाम**	**कार्यक्रम विवरण**
1.	पूर्वोत्तर क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, शिलांग	ई.सी.ई. में तीन माह का प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम
2.	सिक्किम सरकार	तीन माह का ई.सी.सी.ई. घटक डी.एल.एड. पाठ्यक्रम में शामिल
3.	एस.सी.ई.आर.टी., नागालैंड	एन.सी.टी.ई. (एन.सी.टी.ई.) द्वारा स्वीकृत पूर्व-प्राथमिक शिक्षा में दो वर्षीय डिप्लोमा (डी.पी.एस.पी.) चल रहा है।
4.	जी.सी.ई.आर.टी., गुजरात	पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के लिए दो माह का ऑनलाइन प्रमाणपत्र कोर्स
5.	एस.आई.ई., पुदुच्चेरी	एन.आई.ओ.एस.के. ई.सी.सी.ई. पाठ्यक्रम द्वारा प्रशिक्षण प्राप्त किया जा सकता है। इस पाठ्यक्रम को पूर्ण करने के बाद विद्यार्थी एल.डी.सी. वेतनमान प्राप्त कर स्थायी शिक्षक बन जाते हैं।
6.	इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय	दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा ई.सी.सी.ई. में एक वर्षीय डिप्लोमा
7.	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान (एन. आई.ओ.एस.)	ई.सी.सी.ई. में एक वर्षीय व्यावसायिक पाठ्यक्रम
8.	अजीम प्रेमजी प्रतिष्ठान	आँगनबाड़ी शिक्षकों का सेवाकालीन क्षमता विकास इसमें शामिल हैं— आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं का सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण और उनके साथ कार्य करना, ताकि वे आँगनबाड़ी केंद्रों को बच्चों के समग्र विकास के अध्ययन केंद्रों में बदल सकें।
9.	मोबाइल क्रेश	ई.सी.डी. के लिए व्यापक शिक्षक-प्रशिक्षण कार्यक्रम, जिसमें शिशु देखभाल के सभी घटक, जैसे— स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा और शिक्षा शामिल हैं।

सहायक/सहायिका

पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम को प्रभावी रूप से चलाने के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षक को एक सहायक की आवश्यकता होती है, क्योंकि सहायिका नियमित रूप से छोटे बच्चों के साथ कार्य करती है, इसलिए उन्हें बाल विकास के मूल सिद्धांतों, छोटे बच्चों के साथ कार्य करने, बच्चों की साफ़-सफ़ाई और स्वच्छता को बनाए रखने, कक्षा में भोजन परोसने में मदद

© NCERT not to be republished

करने और शिक्षक को विभिन्न गतिविधियों में मदद करने हेतु ज्ञान और कौशलों की आवश्यकता होती है। उसका अपनी भूमिका और उत्तरदायित्व के लिए भली-भाँति प्रशिक्षित होना ज़रूरी है। सहायक को दैनिक पूर्व-प्राथमिक पाठ्यचर्या को लागू करने हेतु शिक्षक की मदद करनी चाहिए। जब भी आवश्यकता हो, उसे बच्चों के साथ कुछ गतिविधियाँ कराने योग्य भी होना चाहिए। सहायकों की योग्यता और इस क्षेत्र में उनके अनुभवों को ध्यान में रखते हुए, उनके करियर उन्नयन का प्रावधान भी होना चाहिए।

3.3 पूर्व-प्राथमिक विद्यालय स्टाफ की भूमिकाएँ और उत्तरदायित्व

प्रशासकीय				
पूर्व-प्राथमिक विद्यालय का मुखिया	**पर्यवेक्षक या प्रभारी**	**शिक्षक**	**सहायक शिक्षक**	**सहायक**
• पूर्व-प्राथमिक कार्यक्रम के दिन-प्रतिदिन के कार्यों को सँभालना। • अभिसरण के लिए को-लोकेटेड आँगनबाड़ी कार्यकर्ताओं, पर्यवेक्षकों और अन्य अधिकारियों के साथ समन्वयन करना। • पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम के क्रियान्वयन का पर्यवेक्षण करना। • जब भी आवश्यकता हो, स्टाफ के साथ बैठकें आयोजित करना और बैठकों का रिकॉर्ड रखना। • सभी शिक्षकों और अन्य स्टाफ का पर्यवेक्षण और मार्गदर्शन करना।	• केंद्र में उपलब्ध सुविधाओं, जैसे— स्वास्थ्य, पोषण, सुरक्षा, आग का नियमित निरीक्षण और सुधार के लिए आवश्यक कार्रवाई करना। • पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम के नियमित प्रदर्शन का मूल्यांकन करना। यह दायित्व शिक्षण के साथ अथवा शिक्षण के बिना किया जाना होगा। • नियमित स्टाफ के कार्य निष्पादन का मूल्यांकन करने हेतु समय-समय पर प्रेक्षण करना, उपयुक्त दस्तावेज़ों का रख-रखाव करना और समय-सीमा का पालन करना। • समूह के लिए नियमित स्टाफ बैठकें आयोजित करना।	• सामान की खरीदारी में प्रधानाध्यापक/ पर्यवेक्षक की मदद करना। • सहायक शिक्षक को स्वयं की अनुपस्थिति में पाठ्यचर्या संप्रेषण के लिए प्रशिक्षित करना। • पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम के क्रियान्वयन में सहायता के लिए सहायक को प्रशिक्षित करना। • पूर्व-प्राथमिक विद्यालय के पर्यवेक्षक और प्रधान अध्यापक को मदद करना। • सहायक के कार्य का पर्यवेक्षण करना।	• सहायक के कार्य का पर्यवेक्षण करना। • शिक्षक को आयु-उपयुक्त गतिविधियों की योजना बनाने तथा उन्हें लागू करने में मदद करना।	

© NCERT not to be republished

कार्यक्रम और पाठ्यचर्या का क्रियान्वयन				
• प्रभावी पाठ्यचर्या संप्रेषण के लिए समन्वयन और मदद करना। • शिक्षकों के लिए प्रशिक्षण तथा अभिविन्यास कार्यक्रमों, कार्यशालाओं और अन्य व्यावसायिक विकासीय गतिविधियों के आयोजन को पर्यवेक्षित करना और उनके संचालन में भाग लेना।	• अन्य स्टाफ (अर्थात सहायक शिक्षक और सहायक) को मार्गदर्शन, सहारा तथा तकनीकी सहायता देना। • आयु और विकास उपयुक्त पाठ्चर्या की योजना बनाना, आयोजन करना और उसके क्रियान्वयन को सुनिश्चित करना। • सभी बच्चों के (ग्रोथ मॉनिटरिंग) बढ़त पट्टी, स्वास्थ्य जाँच और रिकॉर्डों के उचित रख-रखाव को सुनिश्चित करना कि बच्चों को संतुलित नाश्ता और भोजन दिया जा रहा है। • हर समय बच्चों की सुरक्षा और कल्याण सुनिश्चित करना।	• आरंभिक सीखने के प्रतिफलों और विकासीय लक्ष्यों से परिचित होना और तदनुसार गतिविधियाँ नियोजित करना। • बच्चों की विविधता और विशेष आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए सर्वांगीण विकास सुनिश्चित करने हेतु मासिक/ साप्ताहिक और दैनिक कार्यक्रम तैयार करना विद्यार्थियों के पोर्टफोलियों का रख-रखाव करना। • विकास में हो रही देरी को पहचानना। विशेष प्रशिक्षकों की मदद से विशेष आवश्यकता वाले बच्चें के लिए गतिविधियों की योजना बनाना और व्यवस्था करना। • आवश्यकतानुसार क्षेत्र भ्रमण/प्रकृति भ्रमण की योजना बनाना और व्यवस्था करना। • संतुलित नाश्ते और भोजन की योजना बनाना।	• शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करना। • पूर्व-प्राथमिक शिक्षक के मार्गदर्शन अनुसार छोटे समूहों में गतिविधि के आयोजन में मदद करना और गतिविधियाँ आयोजित करना। • बड़े समूह में कराई जाने वाली गतिविधियों में पूर्व-प्राथमिक शिक्षक की मदद करना, जैसे— कहानी सुनाना, सर्कल टाइम (घेरा समय) गतिविधियाँ। • प्रारंभिक सीखने के प्रतिफलों और विकासीय लक्ष्यों से परिचित होना और तदनुसार गतिविधियाँ नियोजित करना। • पाठ योजनाएँ विकसित करने में मदद करना। • पूर्व-प्राथमिक शिक्षक के गतिविधि क्षेत्रों तथा प्रदर्शन बोर्ड और कमरे की भौतिक व्यवस्था की योजना बनाने और विकसित करने में मदद करना।	• विद्यालय आगमन पर और गतिविधियों के दौरान बच्चों के साथ रहकर निगरानी रखना, जैसे— शौचालय जाने के समय या बाहरी खेल के समय। • शिक्षक तथा सहायक शिक्षक की देख-रेख में भोजन तैयार करना। • क्षेत्र भ्रमण/ प्रकृति भ्रमण के समय शिक्षक की मदद करना।

© NCERT not to be republished

		• हर समय बच्चों की सुरक्षा एवं कल्याण सुनिश्चित करना। • बच्चों के व्यवहार/कार्य को देखना तथा आकलन करना और नोट्स बनाना। • नियमित अंतरालों में बच्चों के अभिभावकों को अपने प्रेक्षणों से अवगत कराना। • पाठों की योजना बनाना जिसमें बच्चों द्वारा शुरू की जाने वाली गतिविधियाँ हों। • यदि बच्चा लंबे समय तक अनुपस्थित रहता है तो उसके समाधान के लिए उपाय करना।	• क्षेत्र भ्रमण/प्रकृति भ्रमण के समय शिक्षक को मदद देना। • प्रत्येक बच्चे की ताकतों और आवश्यकताओं को पहचानना, अध्यापक को रिपोर्ट करना और आकलन में शिक्षक की मदद करना। • बच्चों के पोर्टफोलियो का रख-रखाव करना। • शिक्षक की अनुपस्थिति में बच्चों से गतिविधियाँ कराना।	
अभिभावकों, समुदाय और अन्य हितधारियों की मदद				
पूर्व-प्राथमिक विद्यालय का मुखिया	**पर्यवेक्षक या प्रभारी**	**शिक्षक**	**सहायक शिक्षक**	**सहायक**
• विशेष आवश्यकताओं वाले बच्चों की मदद के लिए शिक्षक के साथ समन्वयन करना।	• अभिभावकों, समुदाय, शिक्षक एवं प्रधानाध्यापक के बीच एक कड़ी एवं संपर्क सूत्र के रूप में कार्य करना। • उपस्थिति, प्रवेश, परिवहन, अभिभावक-शिक्षक बैठक आदि जैसी प्रशासनिक पूछताछ के लिए समन्वयन करना।	• पूर्व-प्राथमिक विद्यालय टीम के साथ कार्यक्रम को सुदृढ़ करना और अभिभावकों की मदद के लिए कार्य करना। • अभिभावकों/समुदाय के साथ संबंध विकसित करना और उनके बच्चों की शिक्षा में उन्हें साथियों के रूप में शामिल करना।	• अभिभावकों और समुदाय के साथ बातचीत करने में शिक्षक की मदद करना और जब आवश्यकता हो, बच्चों के घर जाना।	• अभिभावकों के विद्यालय आने पर उनसे बातचीत करना।

© NCERT not to be republished

	• अभिभावकों के लिए पूर्व-प्राथमिक शिक्षा के दर्शन, नीतियों और शिक्षण प्रक्रियाओं पर अभिविन्यास की योजना बनाना और आयोजन करना तथा उनकी भागीदारी सुनिश्चित करना। • अभिभावकों से सुझाव/प्रतिपुष्टि और उनके विचार इकट्ठा करना।	• अभिभावक-शिक्षक बैठकों के समय अभिभावकों/समुदाय से रुचिकर जानकारियों को नियमित रूप से संप्रेषित और साझा करना। • अभिभावकों के लिए सूचनात्मक सत्र और कार्यशालाएँ रखना। • बच्चों के कार्य को देखना और उसका आकलन करना तथा संवेदनशील तरीके से बच्चों की प्रगति पर प्रतिपुष्टि देना।		
कक्षा-कक्ष संबंधी कर्तव्य				
पूर्व-प्राथमिक विद्यालय का मुखिया	**पर्यवेक्षक या प्रभारी**	**शिक्षक**	**सहायक शिक्षक**	**सहायक**
• पूर्व-प्राथमिक विद्यालय कार्यक्रम में सुधार लाने हेतु उपयोगी 21वीं सदी के कौशलों और तकनीकों, जैसे— विवेचनात्मक चिंतन, सहायोग, समूहों में कार्य करना, स्व-नियमन आदि पर मार्गदर्शन।	• पूर्व-प्राथमिक कक्षा-कक्ष के वातावरण को सीखने-सिखाने के लिए उपयुक्त बनाने की योजना बनाना और मदद करना। • साप्ताहिक आधार पर प्रत्येक बच्चे की औसत दैनिक उपस्थिति की निगरानी। • गतिविधि क्षेत्र में प्रेक्षण, खोजबीन और कार्यसाधन के लिए विविध सामग्रियों और संसाधनों को सुनिश्चित करना।	• सकारात्मक और प्रोत्साहित करने वाले शब्दों के प्रयोग द्वारा एक सुरक्षित, सुविधापूर्ण और भावनात्मक रूप से सहायक वातावरण बनाए रखना। • सभी बच्चों के लिए शिक्षण-अधिगम सामग्री तैयार करना। • गतिविधि क्षेत्रों में बच्चों का अवलोकन तथा उनके साथ अंत:क्रिया करना।	• सकारात्मक और प्रोत्साहित करने वाले शब्दों के प्रयोग द्वारा एक सुरक्षित, सुविधापूर्ण और भावनात्मक रूप से सहायक वातावरण बनाए रखना। • बाहर खेलते समय बच्चों के साथ रहना, खेलना और उनकी सुरक्षा सुनिश्चित करना। • गतिविधि क्षेत्र में बच्चों के साथ संवाद करना।	• समय-समय पर कक्षा की सफाई करना। • बच्चों के शौचालय, हाथ-धोने आदि की स्वच्छता का ध्यान रखना। • गतिविधियों के लिए कक्षा को तैयार करने हेतु शिक्षक की मदद करना, जैसे— गतिविधियों के लिए सामग्री व्यवस्थित करना।

© NCERT not to be republished

		• योजना के अनुसार प्रतिदिन के कार्यक्रमों का संप्रेषण सुनिश्चित करना। • प्रत्येक बच्चे के पोर्टफोलियो का रख-रखाव करना। • आपातकाल से निपटना और प्राथमिक उपचार करना। • बच्चों के साथ प्यार, लालन-पालन और तदानुभूति के साथ व्यवहार करना।	• बच्चों की दिनचर्या, जैसे— विद्यालय आना, घर जाना, नाश्ता करना, स्वास्थ्य देखभाल आदि का उत्तरदायित्व लेना। • आपातकाल से निपटना और प्राथमिक उपचार करना। • बच्चों के साथ प्यार, लालन-पालन और तदानुभूति के साथ व्यवहार करना।	• कमरे को विश्राम और संगीत तथा आवागमन के लिए तैयार करना • आपातकाल से निपटना और प्राथमिक उपचार करना। • प्यार और लालन-पालन करना। • शिक्षक/सहायक शिक्षक की देख-रेख में भोजन परोसना। • कार्यक्रमों के आयोजन में शिक्षक की सहायता करना। • उस खेल सामग्री की मरम्मत करवाना/हटा देना जिससे बच्चों को खतरा हो।

© NCERT not to be republished

नाम-रुद्रांश
कक्षा-तीसरी

क्रिकेट

Date : 15/2/23

मेरा नाम रुद्रांश है और मुझे क्रिकेट पसंद है। यह नही मुझे खाने में पिज्जा भी पसंद है पर पिज्जा हमारे स्वासत के लिए अच्छा नही है। इस लिए हमे सिर्फ हरी स्बजीया और फल खाने चाहीए और जब हम अपने स्वासत का खेयाल रखेंगे तो हमारा ध्यान पढ़ाई और खेल कुद में हमारा ध्यान लगेगा और जब ये मैं लिख रहा था तब मैं लिखते लिखते थक गया और मेरे मम्मी पापा मेरी बहुत मदत करते हैं और मुझे जो समझ नही आता वो मुझे मेरे मम्मी पापा उसमें मेरी मदत करते हैं।

विध्यालाया – पंचशील पब्लीक सकुल
जैतपुर

© NCERT not to be republished

कविता

उड़ी पतंग

शिराली रूनवाल*

मृग-सी तेज़ कुलांचें भरती
आसमान में उड़ी पतंग,
कटते-लड़ते पेंच बचाती
राह बदल, जा मुड़ी पतंग।

लोहड़ी का त्यौहार मनाकर
सज-धज निकली कुड़ी पतंग,
माघी बीहू से पोंगल तक
उत्तर-दक्षिण जुड़ी पतंग।

गंगा-यमुना पार चली
चरखी से मांझा तुड़ी पतंग,
अरावली-गिरनार उलांघे...
विंध्याचल-सतपुड़ी पतंग।

सूरज को संदेसा देती
धरती-नभ की कड़ी पतंग,
कभी पेड़ की डाली से ही
अटकी, उलझी, अड़ी पतंग।

© NCERT not to be republished

**कवयित्री एवं साहित्यकार*, ग्वालियर, मध्य प्रदेश

गजक, रेवड़ी-सी मन भाए
खुशियों की फुलझड़ी पतंग,
गोल, तिकोनी या चौकोर—
छुटकी, मंझली, बड़ी पतंग।

नीलगगन की बगिया में
सूर्यमुखी... पंखुड़ी पतंग,
मकर-राशि की संक्रांति पर
कुरकुरी, तिल-गुड़ी पतंग।

© NCERT not to be republished

कुछ अन्य रा.शै.अ.प्र.प. प्रकाशन

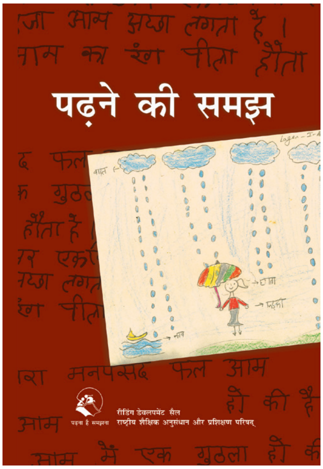

पढ़ने की समझ
₹ 75.00/pp.178
Code— 3277
ISBN— 978-81-7450-993-2

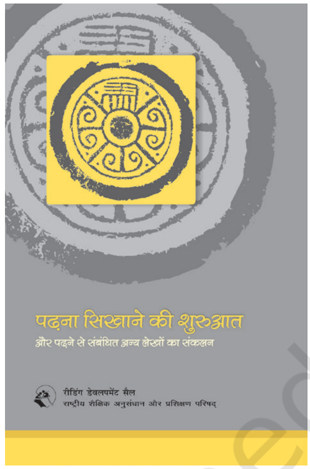

पढ़ना सिखाने की शुरुआत
₹ 55.00/pp.68
Code— 2100
ISBN— 978-81-7450-991-6

लिखने की शुरुआतएक संवाद
₹ 165.00 /pp.130
Code— 32107
ISBN— 978-93-5007-268-4

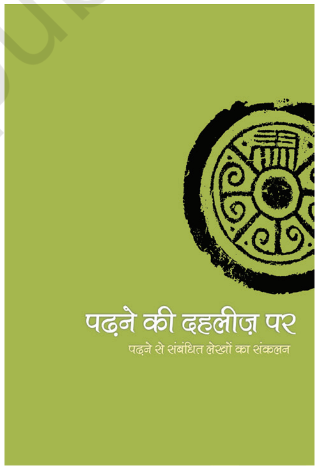

पढ़ने की दहलीज़ पर
₹ 35.00/pp.62
Code— 3267
ISBN— 978-81-7450-8371-9

© NCERT not to be republished

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

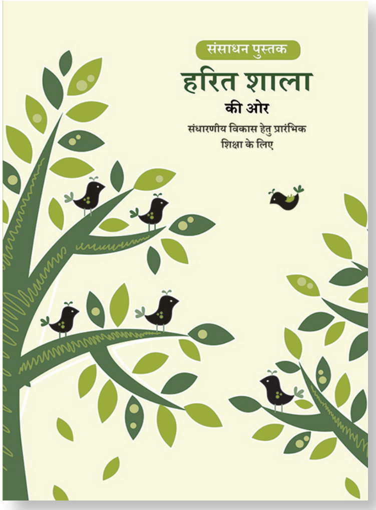

हरित शाला
₹ 115.00 / पृष्ठ 163
कोड — 13150
ISBN — 978-93-5007-829-7

दर्पण
₹ 140.00 / पृष्ठ 104
कोड — 13151
ISBN —978-93-5007-830-3

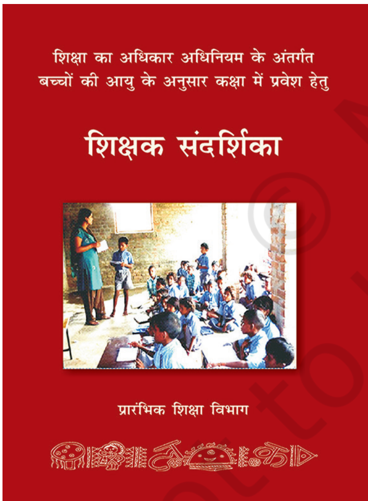

शिक्षक संदर्शिका
₹ 80.00 / पृष्ठ 110
कोड — 13133
ISBN — 978-93-5007-756-6

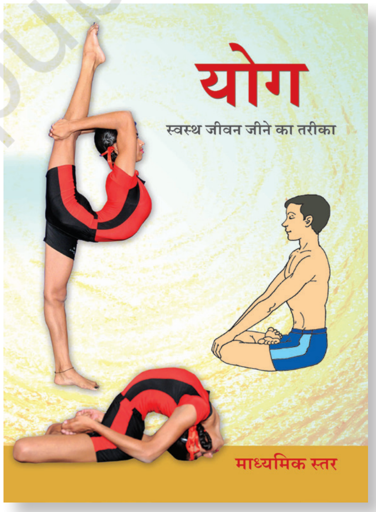

योग
₹ 50.00 / पृष्ठ 88
कोड — 13141
ISBN — 978-93-5007-763-4

© NCERT not to be republished

अधिक जानकारी के लिए कृपया www.ncert.nic.in देखिए अथवा कॉपीराइट पृष्ठ पर दिए गए पतों पर व्यापार प्रबंधक से संपर्क करें।

लेखकों के लिए दिशा-निर्देश

- लेख सरल भाषा में तथा रोचक होना चाहिए।
- लेख की विषयवस्तु 2500 से 3000 या अधिक शब्दों में डबल स्पेस में टंकित होना वांछनीय है।
- चित्र कम से कम 300 dpi में होने चाहिए।
- तालिका, ग्राफ विषयवस्तु के साथ होने चाहिए।
- चित्र अलग से भेजे जाएँ तथा विषयवस्तु में उनका स्थान स्पष्ट रूप से अंकित किया जाना चाहिए।
- शोधपत्रों के साथ कम से कम सारांश भी दिया जाए।
- लेखक लेख के साथ अपना संक्षिप्त विवरण तथा अपनी शैक्षिक विशेषज्ञता अवश्य भेजें।
- शोधपरक लेखों के साथ संदर्भ की सूची भी अवश्य दें।
- संदर्भ का प्रारूप एन.सी.ई.आर.टी. हाउस स्टाइल के अनुसार निम्नवत होना चाहिए—
  सेन गुप्त, मंजीत. 2013. *प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा*. पी.एच.आई. लर्निंग प्रा. लि., दिल्ली.

लेखक अपने मौलिक लेख या शोधपत्र सॉफ्टकॉपी (यूनिकोड में) के साथ निम्न पते पर या ई-मेल पर भेजें—

अकादमिक संपादक
प्राथमिक शिक्षक
प्रारंभिक शिक्षा विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016
ई-मेल – prathamik.shikshak@gmail.com

© NCERT not to be republished

रजि. नं. 32457/76

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् द्वारा प्रकाशित शैक्षिक पत्रिकाओं के मूल्य
Rates of National Council of Educational Research and Training Educational Journals

पत्रिका	प्रति कॉपी शुल्क	वार्षिक सदस्यता शुल्क
School Science (Quarterly) A Journal for Secondary Schools *स्कूल साइंस (त्रैमासिक)* *माध्यमिक विद्यालयों के लिए पत्रिका*	₹ 55.00	₹ 220.00
Indian Educational Review A Half-yearly Research Journal *इंडियन एजुकेशनल रिव्यू (अर्द्ध वार्षिक शोध पत्रिका)*	₹ 50.00	₹ 100.00
Journal of Indian Education (Quarterly) *जर्नल ऑफ इंडियन एजुकेशन (त्रैमासिक)*	₹ 45.00	₹ 180.00
भारतीय आधुनिक शिक्षा (त्रैमासिक) *Bharatiya Aadhunik Shiksha (Quarterly)*	₹ 50.00	₹ 200.00
Primary Teacher (Quarterly) *प्राइमरी टीचर (त्रैमासिक)*	₹ 65.00	₹ 260.00
प्राथमिक शिक्षक (त्रैमासिक) *Prathmik Shikshak (Quarterly)*	₹ 65.00	₹ 260.00

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् की पत्रिकाओं की सदस्यता लेने हेतु शिक्षाविदों, संस्थानों, शोधार्थियों, अध्यापकों और विद्यार्थियों को आमंत्रित किया जाता है।

अधिक जानकारी के लिए नीचे दिए गए पते पर संपर्क करें।

मुख्य व्यापार प्रबंधक, प्रकाशन विभाग
राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
श्री अरविंद मार्ग, नयी दिल्ली 110 016

ई-मेल – gg_cbm@rediffmail.com, फोन – 011-26562708, फैक्स – 011-26851070

विद्यया ऽमृतमश्नुते
एन सी ई आर टी
NCERT

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्
NATIONAL COUNCIL OF EDUCATIONAL RESEARCH AND TRAINING

© NCERT not to be republished